योग - वेदान्त

शब्द-कोश

लेखक

श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती

अनुवादक

श्री वेदानन्द झा

प्रकाशक :

डिवाइन लाइफ सोसाइटी,

पो० शिवानन्दनगर,

जिला - टिहरी-गढ़वाल, (यू०पी०), हिमालय,

मूल्य] १९६८ [३-५० रु०

डिवाइन लाइफ सोसाइटी के लिए श्री स्वामी कृष्णानन्द जी द्वारा प्रकाशित तथा उन्हीं के द्वारा योग-वेदान्त फारेस्ट एकैडेमी प्रेस, शिवानन्द नगर, जिला टिहरी-गढ़वाल, (यू. पी.), हिमालय में मुद्रित।

प्रथम संस्करण (हिन्दी)—१९६८
(प्रति १०००)

इस पुस्तक को श्री बालबक्स डिड्वानिया जी, गया (बिहार) के उदार धर्मदान से छपाया गया है।
ईश्वर उन्हें योग-क्षेम प्रदान करें!

पुस्तक मिलने का पता—

व्यवस्थापक, शिवानन्द पब्लीकेशन लीग,
डिवाइन लाइफ सोसाइटी, पो० शिवानन्दनगर,
जिला टिहरी-गढ़वाल, (यू.पी.), हिमालय।

परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती

प्रकाशकीय

हिन्दी तथा आधुनिक भाषाओं में भारतीय वैदिक ग्रन्थों का अनुवाद तीव्र गति से हो रहा है। अनुवाद की इस सरणि में योग और वेदान्त के वैज्ञानिक शब्दों का प्रयोग अवश्यम्भावी है। अध्यात्म ग्रन्थों को समझने के लिए योग और वेदान्त की इस वैज्ञानिक शब्दावली का भावार्थ समझना अत्यावश्यक है। इसके बिना अनुवादित योग और वेदान्त साहित्य का भी रसास्वादन नहीं हो सकता।

पूज्यपाद गुरुवर्य स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने इसी दृष्टिकोण से योग-वेदान्त शब्द-कोश की रचना अंग्रेजी में की थी। इस उपयोगी ग्रन्थ का लाभ हिन्दी प्रेमी भी उठा सकें, इसी बात को ध्यान में रखकर योग-वेदान्त शब्द-कोश का हिन्दी संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है यह ग्रन्थ हिन्दी प्रेमियों को योग तथा वेदांत साहित्य के आस्वादन में सहायता प्रदान करेगा।

प्रस्तुत हिन्दी शब्द-कोश में प्राय: वे सभी शब्द

ले लिए गए हैं जो अंग्रेजी के मूल ग्रंथ में थे, किंतु हिन्दी शब्द-कोश में उन शब्दों के अंग्रेजी अर्थ का हिन्दी पर्यायवाची शब्द मात्र न देकर कहीं-कहीं अर्थ को अधिक स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। दूसरी विशेषता इस हिन्दी संस्करण में यह है कि शब्दों के क्रम में मूल पुस्तक का अनुकरण न कर उन्हें हिन्दी वर्णमाला के अनुसार रखा गया है जिससे कि हिन्दी पाठकों को अभिप्रेत शब्द ढूंढने में सुविधा रहे।

इस ग्रंथ में अक्षरों का क्रम इस प्रकार है।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
ऋ	लृ	ए	ऐ	ओ	औ
क (क्ष)	ख	ग	घ	ङ	
च	छ	ज (ज्ञ)	झ	ञ	
ट	ठ	ड	ढ	ण	
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व		
श	ष	स	ह		

अ

अंग—अवयव; अंश; शरीर का एक भाग; भेद; प्रकार।

अंगुष्ठ-मात्र—अँगूठे के बराबर।

अंडज—अंडे से उत्पन्न होने वाले जीव; चार प्रकार के जीवों में से एक।

अंत:करण—अंतरात्मा; वह भीतरी इन्द्रिय जो संकल्प-विकल्प, निश्चय, स्मरण तथा सुख-दु:खादि का अनुभव करती है।

अंत:करण-चतुष्टय—चतुर्विध मन अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। मन संकल्प-विकल्प करता है, बुद्धि निर्णय तथा निश्चय करती है, चित्त स्मृति तथा संस्कारों से चित्रित होता है और अहंकार अहंभाव प्रकट करता है।

अंत:करण-प्रतिबिंब-चैतन्य—अंत:करण में चेतन (आत्मा) का आभास (परछाईं)।

अंत:करण-व्यापार—अंत:करण की संकल्प-विकल्प, निश्चय, स्मरण, सुख-दु:ख अनुभव आदि की क्रिया।

अंत:करण-शास्त्र— मनोविज्ञान ; अंत:करण का ज्ञान करानेवाली विद्या ।

अंत:प्रज्ञा—आंतरिक प्रातीतिक ज्ञान ; तैजस स्वरूप ; बहि:प्रज्ञा का उलटा ।

अंत— समाप्ति ; मरण ; सीमा ; परिणाम ; परिच्छेद ।

अंतरंग— आंतरिक ; मानसिक ; आत्मीय ; बहिरंग का उलटा ।

अंतर्— आंतरिक ; माध्यवर्ती स्थान ; मध्यवर्ती समय ; भेद ; बीच ; आत्मा ; हृदय ।

अंतरात्मा— हृदयवासी परमात्मा ; जीवात्मा ; जीव ; अंत:करण ।

अंतरिक्ष— आकाश ; नभमंडल ।

अंतर्गत— गुप्त ; अंतरस्थ ; हृदयमध्यस्थित ।

अंतर्ज्योति— अंत:प्रकाश ; परमात्मा ।

अंतर्दृष्टि— ज्ञानचक्षु ; प्रज्ञा ।

अंतर्धौति—आंत्रशुद्धि-क्रिया ।

अंतर्मुख— अंतरावलोकन ; आत्मविचार ; ध्यानस्थ ; भीतर की ओर प्रवृत्त ।

अंतर्मुख-वृत्ति— मन की वह विशेष अवस्था जब विषय-चिंतन से विरत हो ।

अंतर्यमन— भीतर से शासन करना ।

अंतर्यामी— अंत:करण में स्थित होकर प्रेरणा देने वाला ; भीतर की बात जाननेवाला ; परमेश्वर;

परम पुरुष।

अंतर्लक्ष्य--अंतर्दृष्टि।

अंतर्वाह-शरीर--सूक्ष्म या लिंगशरीर जिसमे योगिजन परकाय प्रवेश करते हैं।

अंतर्वेष्टिनी एक प्रसिद्ध अतिसूक्ष्म नाड़ी जिसमें कुण्डलिनी शक्ति निवास करती है।

अंतेवासी-गुरु के समीप रहने वाला शिष्य।

अंबर-आकाश; व्योम; वस्त्र; परिधान।

अंश भाग; टुकड़ा; कला।

अकर्तव्य अनुचित; न करने योग्य; जिसका करना उचित न हो; अकरणीय।

अकर्ता कार्य न करने वाला; कर्म से अलग; सांख्य के अनुसार पुरुष जो कर्मो से निर्लिप्त है।

अकर्म कर्म का अभाव; निष्कर्म; बुरा काम; दुष्कर्म; अप्रशस्त कर्म।

अकार प्रथम अक्षर 'अ'; ओ३म् की पहली मात्रा; विराट् तथा विश्व का बोधक।

अकार्य कुकर्म; दुष्कर्म; अविहित कर्म; कार्य का अभाव।

अकृताभ्यागम (अकृताभिगम) बिना किये हुए पुण्य-पाप रूप कर्म के सुख-दुःख रूप फल की प्राप्ति; बिना कर्मानुष्ठान के फलकी उत्पत्ति।

अकृष्ण--श्वेत; शुक्ल; शुभ्र; शुद्ध।

अक्रोध—क्रोध का अभाव; क्रोधराहित्य।

अक्षय—जिसका क्षय न हो; क्षयरहित; अविनाशी; अनश्वर; चिरस्थायी; अमर; चिरंजीव; स्थिर।

अक्षर—अकारादि वर्ण; जो क्षीण न होता हो; अविनाशी; नित्य; ब्रह्म।

अक्षर-विद्या—अमर ज्ञान; ब्रह्मज्ञान।

अक्षर-शुद्धि—मन्त्र के वर्णों का शुद्ध उच्चारण।

अक्षरात्परतः परः—अक्षर से पुरुष अधिक महान्।

अक्षरात्मा—अमर आत्मा; अमृतात्मा; अविनाशी आत्मा।

अक्षोभ—क्षोभ का अभाव; अनुद्वेग; स्थिर; गंभीर; शांत।

अक्षोभ्य—क्षोभरहित; अक्षुब्ध।

अखंड—अटूट; अविभाज्य; सम्पूर्ण; समग्र; देश, काल और वस्तु परिच्छेद से रहित; विजातीय, स्वजातीय तथा स्वगत भेद-शून्य; एकरस।

अखंड-ब्रह्मचर्य—अभंग अथवा अटूट ब्रह्मचर्य।

अखंड-मौन—अटूट मौन।

अखंड-समाधि—अटूट समाधि।

अखंडाकार—अविच्छिन्न स्वरूपवाला।

अखंडानंद—अविच्छिन्न आनंद।

अखंडैकरस—एक पूर्ण सत्ता।

अखंडैकरसवृत्ति—ब्रह्मध्यान से उत्पन्न परिशुद्ध सजातीय

ब्रह्माकार वृत्ति ।

अगंध—वास-रहित; गंध-हीन ।

अगति—स्थिरता; अचल; गति का अभाव; दुर्गति ।

अगाध—अथाह; अपार; असीम; दुस्तर; अति गम्भीर; दुर्बोध ।

अगुण—निर्गुण; गुण-रहित ।

अग्नि—आग; पावक; वह्नि; वैशेपिक दर्शन के अनुसार नौ द्रव्यों में से एक; आकाशादि पंचभूतों में से एक ।

अग्नि-अस्त्र—अग्नि-बाण; आग्नेयास्त्र; वह अस्त्र जिससे आग निकले ।

अग्नि-तत्त्व—पंच-मूल-कारणों में से एक—अग्नि मूल कारण ।

अग्नि-माणवक—प्रभापूर्ण बालक । [यह गौण वृत्ति का एक उदाहरण है । इसका शब्दार्थ होता है—वह बालक जो स्वयं अग्नि हो, किन्तु इस अर्थ को न ग्रहण कर अग्नि का गुण (भास्वरता) को लिया जाता है जिससे इसका अर्थ हुआ प्रभापूर्ण बालक ।]

अग्नि-विद्या—अग्नि की ब्रह्म-रूप में उपासना की विधि ।

अग्निष्टुत्—यज्ञ में अग्निस्तोम करने वाला ।

अग्निहोत्र—एक यज्ञ; वेदोक्त मंत्रों से अग्नि में आहुति देने की क्रिया ।

अग्राह्य—न ग्रहण करने योग्य; जो मन और इंद्रियों द्वारा पकड़ा न जा सके; इंद्रियों का अविषय; अगम्य; अज्ञेय (ब्रह्म); त्याज्य।

अघमर्षण—पापनाशक; पाप का नाश करने वाला; वेदमन्त्र जिसका स्नानकाल में पाठ करने से मनुष्य पवित्र होता है।

अचल—जो न हिले; जो चलायमान न हो; निश्चल; अटल; स्थिर।

अचिंत्य—जिसका चिंतन न हो सके; जो विचार में न आ सके; चिंतन से परे; कल्पनातीत; अज्ञेय।

अचिंत्य-शक्ति—दुर्बोध बल; अगम्य पौरुप; अमित पराक्रम।

अचित्—अचेतन; जड़ प्रकृति; चेतनाहीन।

अचित् वस्तु—अचेतन पदार्थ; जड़ पदार्थ।

अचित् शक्ति (ब्रह्म की)—तमस्; मूल प्रकृति।

अचेत—संज्ञाशून्य; ज्ञानरहित; असावधान; निर्बुद्धि; मूर्च्छित।

अचेतन—चेतनारहित; जड़।

अच्युत—जो अपने स्वरूप से कभी प्रच्युत न हो; यथावस्थित रहनेवाला; निर्विकार; अपरिणामी; स्थिर; अविनाशी; अविचलित; अचल; अटल; नित्य; अमर।

अज—अजन्मा; जिसका जन्म न हो; स्वयंभु।

अजपा—जो जपा न जाय; 'सोऽहं' (वह ब्रह्म मैं ही हूँ) मन्त्र जिसका जप श्वास-प्रश्वास के साथ स्वतः होता रहता है

अजपा गायत्री—'हंसः सोऽहं' मन्त्र।

अजर—जरा-रहित।

अजहल्लक्षण—वह लक्षण जिसमें लक्षण शब्द अपने वाच्यार्थ को न त्याग कर उससे सम्बन्धित कुछ और अर्थ भी ग्रहण करे यथा 'लाल दौड़ रहा है' में 'लाल' शब्द गुणवाचक होने से दौड़ नहीं सकता है। अतः हमें 'घोड़ा' शब्द जोड़ना पड़ेगा। इसे अजहत्स्वार्था तथा उपादान लक्षण भी कहते हैं।

अजातवाद—गौडपाद का यह सिद्धान्त कि जगत् की उत्पत्ति ही नहीं हुई, केवल एक अखंड चिद्घन सत्ता ही मोहवश प्रपंचवत् भास रही है।

अजित—अपराजित; जो जीता न जा सके; भगवान् विष्णु का एक नाम।

अज्ञान—बोध का अभाव; जड़ता; अविद्या; अविवेक; मूर्खता; न्याय में एक निग्रह स्थान।

अज्ञानावृत-आनंद—अज्ञान से आच्छादित आनंद; वह आनंद जो सुषुप्ति अवस्था में प्राप्त होता है।

अणिमा—अतिसूक्ष्मत्व; शरीर को अणु के समान सूक्ष्म बनाने की शक्ति; अष्टसिद्धियों में प्रथम।

अणु—सूक्ष्मतम अविभाज्य कण; अति सूक्ष्म; ह्रस्व;

परम लघु; मन का अविषय।

अणुत्व—सूक्ष्मत्व; लघुत्व; ह्रस्वत्व; परमाणु में और द्व्यणुक में रहने वाला परमाणु।

अणु-परिमाण—अणु के आकार का।

अतद्व्यावृत्ति—विजातीय वस्तुओं के प्रतिषेध द्वारा सद्वस्तु के जानने की प्रक्रिया; व्यतिरेक या विश्लेषण द्वारा सद् के ज्ञान की विधि।

अतद्व्यावृत्ति-समाधि—वह समाधि जिसमें किसी आलंबन की आवश्यकता नहीं होती; अनात्म वस्तुओं के बाध से होने वाली समाधि।

अतनु—अशरीर; शरीर-रहित; कामदेव; ब्रह्म; स्थूल; मोटा।

अतर्क्य—जिस पर तर्क-वितर्क न हो सके; विवेचन-रहित; अचिंत्य; ब्रह्म।

अतिग्रह—इंद्रिय-विषय।

अतिथि—अभ्यागत; एक स्थान पर एक रात्रि से अधिक न ठहरने वाला; संन्यासी; जैन साधु।

अतिथि-यज्ञ—अतिथि-पूजा; घर पर आये हुए अभ्यागत का सत्कार; उन पंचमहायज्ञों में से एक जिसका नित्य करना गृहस्थ के लिए आवश्यक है।

अतिप्रश्न—बहुत अधिक प्रश्न; प्रश्न की सीमा से परे; गूढ़ प्रश्न; सर्वातिशय प्रश्न।

अतिलाघव—अत्यन्त लघु; बहुत हलका।

अतिवर्णाश्रमी—वह व्यक्ति जो वर्णाश्रम से बिलकुल अलग हो; परमहंस; अवधूत।

अतिवाहिकत्व—योग की वह अवस्था जब योगी अपने स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर को निकाल कर किसी दूसरे शरीर में डाल सके; भोगप्रदायक पुण्यकर्मों के क्षीण हो जाने पर सूक्ष्म शरीर को अन्य शरीरों तक जाने में सहायता करने वाला एक अमानव आत्मा।

अतिव्याप्ति—अधिक व्याप्ति; वह लक्षण जो अलक्ष्य में वर्ते; वह गुण जो दूसरी वस्तुओं में भी पाया जाय।

अतिव्याप्ति-दोष - जो लक्षण अपने लक्ष्य में वर्तता हुआ अलक्ष्य विषय में वर्ते। किसी लक्षण या कथन के अन्तर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के आ जाने को न्याय में अतिव्याप्ति-दोष कहते हैं। उदाहरणस्वरूप 'गाय सींगवाला पशु है।' यह परिभाषा सींगवाले दूसरे पशुओं पर लागू होती है।

अतिशय— बहुत; अत्यंत; अधिक मात्रा।

अतिसूक्ष्म— बहुत बारीक।

अतींद्रिय– जिसका अनुभव इंद्रियों के द्वारा न हो; इंद्रियों की पहुँच से परे; इंद्रियों द्वारा अगम्य; इंद्रिय-निरपेक्ष; अव्यक्त।

अतींद्रिय-सुख—वह आनंद जो इंद्रियों की पहुँच से

परे हो; वह आनंद जो इंद्रियों का अविषय हो; ब्रह्मानंद।

अतीत— भूत; गत; व्यतीत; परे; बाहर; सर्वातिरिक्त।

अत्यंत—बहुत अधिक; अतिशय; बेहद।

अत्यंताभाव—जो तीनों कालों में न हो; किसी वस्तु का पूर्णतया अभाव; किसी वस्तु की सत्ता का पूर्ण रूप से न होना यथा शशशृंग, आकाशपुष्प, वंध्यापुत्र।

अत्यंतासत्—देखो अत्यंताभाव।

अदंभित्व—पाखंड का अभाव; आडंबरहीनता; निष्कपटता

अदृश्य—जो चर्मचक्षुओं से दिखाई न दे (ब्रह्म); अलक्ष्य; गुप्त; चक्षु-अगोचर।

अदृष्ट—न देखा हुआ; अलक्षित; प्रारब्ध।

अदृष्ट—अगोचर तत्त्व; मीमांसा के अनुसार अपूर्व; सांख्य और योग के अनुसार कर्माशय; पुरुष का भोग और अपवर्ग; धर्माधर्म।

अद्भुत—आश्चर्यजनक; विचित्र; विलक्षण; अलौकिक; अपूर्व।

अद्वितीय—जिसके समान दूसरा न हो; अनुपम; अप्रतिम; समकक्षहीन।

अद्वितीयता—अनुपमता; अतुलनीयता।

अद्वैत—द्वैतरहित; निर्द्वैत; अद्वय; भेदरहित; अकेला; केवल; सजातीय, विजातीय और स्वगत भेद-

रहित; ब्रह्मवाद।

अद्वैत-निष्ठा— अद्वैतस्थिति में स्थित।

अद्वैतवाद - वह सिद्धांत जिसके अनुसार एकमात्र ब्रह्म ही सत् है; ब्रह्मवाद; वेदांत।

अद्वैत-वेदान्त--अद्वैतदर्शन (शांकर मत)।

अद्वैत-सिद्धि— अद्वय ब्रह्म का साक्षात्कार; एकलीभाव की प्राप्ति।

अद्वैतावस्थारूप-समाधि - अद्वैतवादियों की निर्विकल्प समाधि जिसमें ब्रह्माकार वृत्ति का भी अभाव रहता है। अतिचेतनावस्था की वह उच्चतम स्थिति जिसमें ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय की—त्रिपुटी का अभाव रहता है, केवल एक सत् ही अपने स्वरूप में अवस्थित रहता है।

अधम- नीच; पतित; पामर; पापी।

अधम-उधारक— पतितों का उद्धार करनेवाला।

अधर्म धर्म के विरुद्ध कार्य; कुकर्म; पाप; अन्याय; वेद प्रतिषिद्ध कर्म; दुष्कर्म।

अधिक बहुत; विशेष; अतिरिक्त; न्याय में एक निग्रह स्थान।

अधिकरण -प्रकरण; आश्रय; आधार; वह जिसकी सिद्धि दूसरे अर्थों की सिद्धि पर निर्भर हो; अधिष्ठान।

अधिकारी- उपयुक्त पात्र; योग्यता या क्षमता रखने वाला; साधनचतुष्टय-संपन्न व्यक्ति।

अधिकारीवाद—प्रत्येक जिज्ञासु की क्षमता के अनु भिन्न-भिन्न प्रकार के नियम के अनुवर्तन पर बल वाला सिद्धान्त ।

अधिदैव—दैवयोग से होने वाला; दैविक ।

अधिदैव-विद्या—अंतरिक्ष विज्ञान ।

अधिपति-प्रत्यय—प्रमुख कारण; ठीक हेतु ।

अधिभूत—पंचभूत-संबंधी; पंचभूत ।

अधिभूत-विद्या—भौतिक विज्ञान ।

अधिमात्र—तीव्र; उत्कट; अतीव; अधिक परिमाण

अधिमात्र वैराग्य—वैराग्य की वह तीव्रावस्था उ भौतिक सुख दुःखरूप भासते हैं; उत्कट वैराग्य ।

अधियज्ञ—यज्ञ-संबंधी ।

अधिष्ठातृ देवता—प्रमुख देवता ।

अधिष्ठान—पृष्ठभूमि; आधार; अवलंब; आश्रय; व वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो; जो आप निर्विक रूप से स्थित हो और अविद्याकृत कल्पित कार्य क आश्रय हो; विवर्त उपादान; सांख्य में भोक्ता अ भोग का संयोग ।

अधोक्षज—जिसका प्रत्यक्ष ज्ञान न हो सके; इंद्रियों उत्पन्न होने वाले ज्ञान की पहुँच से परे; विष्णु नारायण ।

अध्यक्ष—प्रधान; मुख्य; अधिकारी; निरीक्षक ।

अध्यवसाय—निश्चय; निश्चयात्मक ज्ञान; उद्यम; लग

तार उद्योग; उत्साह; ब्रह्मचर्य की आठ त्रुटियों में से एक।

अध्यस्त— वह जिसका भ्रम किसी अधिष्ठान में हो, जैसे शुक्ति में रजत; कल्पित वस्तु।

अध्यस्त अस्तित्व— अध्यारोपित सत्ता।

अध्यात्मवित्—आत्मज्ञ; आत्मज्ञानी।

अध्यात्मविद्या—वह विद्या जिसमें ब्रह्म अथवा आत्मा का विचार हो।

अध्यात्म-शास्त्र—आत्मा या परमात्मा से संबंधित शास्त्र (धर्मग्रंथ)।

अध्यारोप—अध्यास; झूठी कल्पना; एक के व्यापार को दूसरे में आरोपित करना; एक का गुण दूसरे में आरोपण; वेदांत के अनुसार अन्य में अन्य वस्तु का भ्रम; आत्मा के गुण को शरीर में आरोपित करना।

अध्यारोपित— मिथ्यारोपित।

अध्यास— मिथ्या ज्ञान; भ्रांत धारणा; जो वस्तु न हो किंतु अज्ञान से मान लिया हो; एक वस्तु में किसी दूसरी वस्तु का अवभास।

अध्वर्यु—यज्ञ कराने वाला यजुर्वेदी पुरोहित।

अनंत—अंतरहित; असीम; जिसका अंत न हो; निरवधि; अशेष; देश, काल, वस्तु-परिच्छेद-रहित वस्तु; शेषनाग।

अनंत-अमात्र— असीम और अपरिमित।

अनंत-आनंद—असीम हर्ष; अपार सुख।
अनंत-ज्योति—असीम प्रकाश।
अनंतत्वात्—असीमता के कारण; असीम होने से।
अनंत-दृष्टि—असीम दृष्टि।
अनंत-मात्र—असंख्य प्रतीकों वाला; परब्रह्म।
अनन्यता—एकनिष्ठा; एकाश्रयता; एकचित्तता।
अनन्य-भक्ति—भगवान् के किसी एक ही रूप में एकनि भक्ति; जैसे आप विचार द्वारा कुर्सी, मेज, बेंच कपाट, छड़ी आदि में एक ही तत्त्व (काष्ठ) क देखते हैं उसी प्रकार सभी रूपों में भगवान् नारायर के दर्शन कीजिए—यह अनन्य भक्ति है। जब ध्यात और ध्येय एक बन जाते हैं तो वह अनन्य भक्ति है औपनिषदिक निर्गुण ब्रह्म के रूप में भगवान् कृष्ण क ध्यान करना अनन्य भक्ति है। जब मन भगवान् शिव के अन्य रूपों का ध्यान छोड़ कर उनके एक ही रूप का ध्यान करता है तो वह अनन्य भक्ति है।
अनभिद्य—दूसरों की सम्पत्ति का लोभ न करना; अनर्गल बातें न सोचना; दूसरों के अपकार के विषय में चिंतन न करना।
अनर्थ—बुरा; अनिष्ट; दुःख।
अनवच्छिन्न—सीमाहीन; असीम; अखंडित; अटूट।
अनवच्छिन्न चैतन्य—अनधिगम्य चैतन्य जिसे आत्मा कहते हैं।

अनवधान—अमनोयोग; असावधानी; प्रमाद।

अनवसाद— हर्ष; विषादहीन।

अनवस्था— स्थितिहीनता; अव्यवस्था; अवसान-रहित; पूर्व पूर्व को उत्तर उत्तर की अपेक्षा।

अनवस्था-दोष— न्याय का वह दोष जिसमें तर्क निकले और विवाद का अंत न हो।

अनवस्थित्व—अस्थिरता; अनिश्चयता; आधारहीनता; योग में समाधि प्राप्त हो जाने पर चित्त का स्थिर न होना।

अनहं—'मैं' नहीं; अहंताहीनता; गर्वरहित।

अनागत— आगे आने वाला; भावी; अनुपस्थित; अज्ञात; भविष्यत्।

अनात्मा—आत्मा से भिन्न वस्तु; जड़ पदार्थ।

अनादि—जिसका आदि न हो; आदिरहित; उत्पत्ति-शून्य; आरंभरहित; स्वयंभु।

अनादि-अनंत आदि-अंत रहित; असीम; ब्रह्म।

अनादि-काल—अनंत समय।

अनादि-प्रवाह-सत्ता— आदिरहित प्रवाह; नित्य; आदि-हीन किंतु सांत।

अनादि-संस्कार—वह संस्कार जिसका कोई आदि न हो।

अनादि-सांत आदिरहित और अंतयुक्त; माया जो ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति के अनंतर समाप्त हो जाती है।

अनामय रोगहीन (ब्रह्म); नीरोग; आरोग्य।

अनारब्ध-कार्य—वह कर्म जो अपना फल देना अभी आरंभ नहीं किये।

अनाश्रमी—चारों आश्रमों में से किसी से भी संबंध न रखने वाला।

अनासक्ति—निर्लेपता; आसक्तिरहित; वैराग्य।

अनाहत—हठयोग में भीतर के छः चक्रों में से एक जिसका स्थान हृदय के पास है; शब्दयोगानुसार वह नाद जो कानों को बंद कर लेने पर सुनायी देता है।

अनाहत-ध्वनि—दोनों कानों को दोनों अँगूठों से बंद कर लेने पर सुनायी पड़ने वाला शब्द या ध्वनि।

अनित्य—अस्थायी; क्षणभंगुर; नश्वर; विनाशी।

अनिर्देश्य—अनिर्वचनीय; अवर्णनीय; अकथनीय; जिसके विषय में ठीक से बतलाया न जा सके।

अनिर्वचनीय—जिसका वर्णन न किया जा सके; अकथनीय; जो कहने के योग्य न हो; अनामाख्य; सत् और असत् से विलक्षण।

अनिर्वचनीय सत्ता—अगम्य पदार्थ (माया)।

अनिष्ट—जो इष्ट न हो; अवांछित; बुरा; अप्रिय; अनीप्सित; अनभिमत।

अनीश—ईश्वर से भिन्न वस्तु; अधिकार-रहित; प्रकृति; जीव; माया; असमर्थ।

अनीशता—असमर्थता; बेबसी।

अनुकंपा—कृपा; दया; अनुग्रह; सहानुभूति।

अनुग्रह—कृपा; दया; अनिष्टवारण पूर्वक इष्ट-साधन।

अनुताप—खेद; पश्चात्ताप; पछतावा।

अनुद्बुद्ध—अप्रबुद्ध; अचैतन्य।

अनुपलब्धि—अप्राप्ति; अभाव; अनुपलंभ; छः प्रमाणों में से एक, अभाव प्रमा का करण।

अनुपादक—तंत्र के अनुसार ऐसा तत्त्व जो आकाश से भी सूक्ष्म होता है।

अनुबंध-चतुष्टय—किसी विषय के विवेचन के चार अपरिहार्य अंग—(१) विषय, (२) प्रयोजन, (३) संबंध तथा (४) अधिकारी। वेदांत में ब्रह्म विषय है, मोक्ष प्रयोजन है, विवेचन संबंध है और साधन-चतुष्टय सम्पन्न व्यक्ति अधिकारी है।

अनुभव—प्रत्यक्ष या अपरोक्ष ज्ञान; प्रयोग द्वारा प्राप्त ज्ञान; संवेदन; अनुभूति।

अनुभवगम्य—अनुभव से प्राप्त होने वाला।

अनुभवाद्वैत—अद्वैतावस्था का जीवंत अनुभव।

अनुभवी गुरु—अनुभव प्राप्त गुरु।

अनुमंता—प्रकृति के कार्यकलाप की अनुमति देने वाला; सम्मति देने वाला।

अनुमान—अटकल; अंदाज; जो किसी चिह्न से समझा जाय; साधन-साध्य अथवा कार्य-कारण के संबंध से उत्पन्न होने वाला ज्ञान; बोध के छः प्रमाणों में से एक।

अनुयोगी—जिसमें किसी भी पदार्थ का संबंध या सादृश्य या अभाव प्रतीत हो वह अनुयोगी और जिसका संबंध या सादृश्य या अभाव किसी में रहता हो वह प्रतियोगी है। "चन्द्रवन्मुखम्" में मुख अनुयोगी है और चन्द्र प्रतियोगी, "घटभाववद्-भूतलम्" में भूतल अनुयोगी है और घट प्रतियोगी।

अनुराग—प्रेम; प्रीति; आसक्ति; स्नेह।

अनुवाद—मीमांसा में किसी विधि प्राप्त आशय को दूसरे शब्दों में दुहराना; पुनरुल्लेख; अनुवचन; बार-बार कहना।

अनुवृत्ति—किसी पद के पहले भाग से कुछ वाक्य उसके पिछले भाग को स्पष्ट करने के लिए लाना।

अनुव्यवसाय—व्यवसायगोचर; प्रत्यक्ष ज्ञान; ज्ञानांतर; द्वितीय ज्ञान।

अनुव्याख्यान—व्याख्या; टीका; निवृति।

अनुशय—स्वर्गादि लोकों के भोग भोग लेने के बाद अवशिष्ट कर्म जिसके कारण जन्म लेना पड़ता है; परिणाम; पश्चात्ताप।

अनुष्ठान—शास्त्र विहित कर्म को नियमानुसार निर्धारित समय तक करना; कार्य का आरम्भ; फल के निमित्त किसी देवता का आराधन।

अनुसंधान—खोज; अन्वेषण।

अनुस्मरण—बाद में स्मरण आना; ब्रह्म का सतत स्मरण।

मनृत--असत्य; मिथ्या।

नेक एक से अधिक; बहुत; बहुसंख्यक।

न्नम् धान्य; खाद्यपदार्थ; नाज; अनाज; खाना।

न्नमय-कोश स्थूल शरीर जिसकी उत्पत्ति तथा पालन-पोषण अन्न से होता है; पंचकोशों में प्रथम।

न्यत् दूसरा; इतर; भिन्न।

न्यथा विपरीत; अन्य प्रकार; और तरह; नहीं तो; प्रकारान्तर।

न्यथाख्याति--भ्रमात्मक ज्ञान; अन्य पदार्थ की अन्य रूप से प्रतीति।

न्योन्य परस्पर; आपस में।

न्योन्याध्यास एक दूसरे का एक दूसरे में अध्यास; परस्पर अध्यास जैसे अनात्मा में आत्मा का और आत्मा में अनात्मा का अध्यास।

न्योन्याभाव-एक वस्तु का दूसरे वस्तु में अभाव; किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु न होना।

न्योन्याश्रय—परस्पर का सहारा; न्याय में एक वस्तु के ज्ञान के लिए दूसरी वस्तु के ज्ञान की अपेक्षा।

न्वय तारतम्य; परस्पर संबंध; वाक्य रचना में शब्दों का पारस्परिक संबंध; कार्य तथा कारण का संबंध; भिन्न-भिन्न पदार्थों का साधर्म्य के अनुसार

एक कोटि में लाना; न्याय में जिस अनुमान के साध्य का कहीं भी अत्यंताभाव न हो; दो वस्तुओं का अपनी उत्पत्ति, स्थिति या ज्ञान के विषय में परस्पर अपेक्षा; जिस अनुमान के साध्य तथा हेतु इन दोनों और इन दोनों के अभावों का सहचार दिखाई पड़े।

अन्वय-व्यतिरेक--न्याय के अनुसार वह साधक हेतु जिससे साध्य निश्चित किया जाता है।

अपंचीकरण--सूक्ष्म भूत; तन्मात्रा; पंचीकृतभिन्न आकाशादि पंच भूत; लिंग शरीर की रचना अपंचीकृत पंच भूतों से हुई है।

अप:--जल; पानी।

अपमान--अनादर; तिरस्कार; निरादर।

अपर-पक्ष--प्रतिवादी; प्रतिपक्ष।

अपर-पार्श्व--दूसरी ओर।

अपर-ब्रह्म--सगुण ब्रह्म; ईश्वर; हिरण्यगर्भ; ब्रह्म का विश्वानुग विभाव।

अपर-वैराग्य--निम्न कोटि का वैराग्य; वशीकार संज्ञक वैराग्य।

अपरा--दूसरी; सापेक्षिक; निम्नतर।

अपराजित--जो पराजित न हो; अपराजेय।

अपराध--भूल; दोष; अधर्म; अन्याय।

अपरा-प्रकृति--विश्वात्म शक्ति जिससे ईश्वर स्थूल

और सूक्ष्म जगत् की सृष्टि करता है; जड़ प्रकृति।

अपरा-विद्या लौकिक विषय का ज्ञान कराने वाली विद्या; वेद का ज्ञान; वेद-शास्त्रादि विद्या।

अपरिग्रह निर्लोभिता; दान का न लेना; शरीर की आवश्यकता से अधिक धन का परित्याग; परिग्रह का त्याग।

अपरिच्छिन्न असीम; अनन्त; जिसका विभाग न हो सके; व्यापक; देश, काल और वस्तु परिच्छेद शून्य।

अपरिणामी—परिणाम-रहित; विकार शून्य; एकरस रहने वाला; जिसकी दशा या रूप में परिवर्तन न हो।

अपरिमित दृष्टि—असीम दृष्टि; देश, काल और कारण से परे की दृष्टि।

अपरोक्ष प्रत्यक्ष।

अपरोक्षत्व प्रत्यक्षता।

अपरोक्षानुभवस्वरूप—प्रत्यक्ष अनुभूत-रूप।

अपरोक्षानुभूति—प्रत्यक्ष परिज्ञान।

अपवर्ग मोक्ष; मुक्ति; दुःख की अत्यन्त निवृत्ति; परम गति; परम पद; चार पुरुषार्थों में से अंतिम पुरुषार्थ।

अपवाद व्यापक नियम से विपरीत नियम; प्रतिवाद; खंडन; विरोध; "रज्जुविवर्त्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्वात्

वस्तुभूतब्रह्मणो विवर्त्तस्य प्रपंचादे: वस्तुभूतरूपतोपदेश अपवाद:"; जैसे आप रस्सी में आरोपित सर्प के स्थान में रस्सी ग्रहण करते हैं वैसे ही मूल वस्तु के स्थान में आरोपित संसार के स्थान में मूल वस्तु ब्रह्म को ही ग्रहण करें। जिस अधिष्ठान में जिस वस्तु का तीन काल में अविद्यमान होकर भी भ्रांति से प्रतीति हो, उस अधिष्ठान में उस वस्तु के अभाव का निश्चय अपवाद है; बाध; विलापन।

अपवाद-युक्ति—अपवाद के तर्क का आश्रय लेना।

अपवित्र—अशुद्ध; दूषित; अपावन।

अपसर्पण—पीछे हटना; सरक जाना।

अपहतपाप्मत्व—सब पापों से मुक्त; पापशून्य; परमात्मा।

अपान—शरीर के पाँच वायुओं में से एक जिसका निवास-स्थान गुदा के निकट है, शरीर के निचले भाग में संचालन करता है और मल-मूत्र के त्याग में सहायक है।

अपुण्य—पुण्यरहित; पाप।

अपूर्ण—अधूरा; कम; जो पूरा न हो।

अपूर्व—अदृष्ट; अद्भुत; अलौकिक; धर्म और अधर्म; पुण्यपाप; मीमांसकों के अनुसार वह जो कर्मफल देता है।

अपूर्वता--विलक्षणता; श्रेष्ठता; अलौकिकता; लिंग के छः भेदों में से एक।

अपेक्षिक--तुलनात्मक; निस्बत।

अप्रकट- अप्रकाशित; गुप्त; छिपा हुआ।

अप्रज्ञात--अविदित; अज्ञात।

अप्रतर्क्य--जिसके विषय में तर्क-वितर्क न हो सके; अचिंत्य।

अप्रतिसंख्यानिरोध-- भाव-पदार्थों के नाश का बुद्धि पर निर्भर न होना; प्रतिसंख्यानिरोध का उलटा।

अप्रमत्त - सावधान; सजग; सचेत; जो मदमस्त न हो।

अप्रमा-- भ्रममूलक ज्ञान; अयथार्थ बोध; प्रमा से भिन्न ज्ञान।

अप्रमेय-- अपरिमित; जो नापा न जा सके; जो प्रमाण द्वारा सिद्ध न हो सके।

अप्राण प्राणहीन; शरीरान्तर्गत पंच वायु से रहित; ब्रह्म।

अबुद्धि-पूर्व - बुद्धिहीन; अचेतन।

अभयं - निर्भयता; भय-रहित।

अभयदान भय से बचाने का वचन देना; निर्भय करना; शरण देना।

अभाव अविद्यमानता; अनस्तित्व; असत्ता; असत्त्व; अनास्था; शून्यता; छः प्रकार के प्रमाणों में से एक।

अभावना विचार का अभाव; अप्रिय; अपूर्ण ज्ञान।

अभावपदार्थ—सत्ताहीन पदार्थ; असत् वस्तु; अभाव-पदार्थ चार प्रकार के हैं – (१) प्रागभाव, (२) प्रध्वंसाभाव, (३) अन्योन्याभाव तथा (४) अत्यन्ताभाव।

अभावमात्र—केवल अनस्तित्व स्वभाव वाले।

अभावरूपवृत्ति—असत् पदार्थों का ध्यान।

अभिगमन—पास जाना; मंदिर की ओर जाना।

अभिज्ञा—केवल इंद्रिय के संबंध से होने वाला ज्ञान।

अभिज्ञा-ज्ञान—पहले देखी हुई बात से मन में उठने वाला संस्कार।

अभिनय—निग्रह; नाटय; व्यंजक; अनुशासन।

अभिनिवेश—मृत्यु-शंका; मरण का भय; दुःख पाने के भय से भौतिक शरीर को बचाये रखने की वासना; योगदर्शन के अनुसार पाँच क्लेशों में से एक।

अभिमान—अहंकार; दर्प; अवलेश; देहात्म-भावना।

अभिमानी—अभिमान-युक्त; अहंकारी; घमंडी; दर्पी।

अभिविमान—परब्रह्म परमात्मा का एक नाम।

अभिव्यक्त—प्रकाशित; प्रकट।

अभेद—भेद-रहित; भेद का अभाव; भेद-शून्य; अभिन्नता; एकत्व।

अभेद-अहंकार—ब्रह्म से अभिन्न होने का सात्त्विक अहंकार।

अभेद-चैतन्य—ब्रह्म और जीव के एक होने का निरन्तर ध्यान; अविभक्त चैतन्य।

अभेद-ज्ञान—जीवात्मा और ब्रह्म की एकता का बोध।

अभेद-बुद्धि—सर्वत्र एक सत्ता मात्र का दर्शन करने वाली बुद्धि।

अभेद-भक्ति—भक्ति की वह उच्चतम अवस्था जिसमें उपास्य और उपासक दो न रह कर एक हो जाते हैं।

अभेदाभाव—भिन्नता का अभाव; एकता का भाव।

अभोक्ता—भोग न करने वाला; आनन्द न लेने वाला; निर्लिप्त।

अभ्यास—किसी कार्य को बार-बार करना; वीर्य और उत्साहपूर्वक यत्न करना; मीमांसा के षट् लिंगों में से एक।

अभ्यासिन्—अभ्यास करने वाला; साधक।

अभ्युदय—उन्नति; वृद्धि; ऐश्वर्य; इष्टलाभ।

अमन, अमनस्क—जिसने मन राहित्य की स्थिति पा ली हो; मनहीन; वासनाराहित्य; उन्मनी अवस्था।

अमनस्कता—मन व इच्छा से रहित; उदासीनता।

अमनस्थ—उन्मनी अवस्था को प्राप्त व्यक्ति।

अमर—देवता; मृत्युहीनता; अविनाशी; जो कभी न मरे; मृत्यु से परे।

अमर-पुरुष—चिरंजीवी व्यक्ति।

अमल - निर्मल; विमल; पापशून्य; शुद्ध; पवित्र; किसी प्रकार के मल व विकार से रहित।

अमलम् — माया से मुक्त; माया के विकार से रहित।

अमात्र — मात्रा-रहित।

अमानव—जो मनुष्य न हो।

अमुख्य कारण—अप्रधान कारण; गौण कारण।

अमूर्त्त—निराकार; अरूप; आकाश-वायु आदि अमूर्त भूत।

अमृतं—अमरता; मरण-रहित; अमरणशील।

अमृत — सुधा; पीयूष।

अमृतत्त्व— अमरता; मोक्ष; मरण का अभाव; ब्रह्मलोक।

अमृत-नाड़ी—हृदय से निकलने वाली एक नाड़ी विशेष।

अमृत-पुत्रः
अमृतस्य-पुत्रः } — देव-संतान।

अमृत-विग्रह— अमृतरूप।

अयं घटः अस्ति—यह घड़ा है।

अयन—गमन; भूमध्य रेखा से सूर्य का उत्तर से दक्षिण और दक्षिण से उत्तर की ओर गमन; काल।

अयम—असंयम; भोगपरायण।

अयमात्मा ब्रह्म—यह आत्मा ब्रह्म है; चार औपनिषदिक महावाक्यों में से एक।

अयुक्त—जो योगी न हो; जो युक्त न हो।

अयुत-सिद्ध – जिन दो पदार्थों में से एक अविनश्यदवस्थ हुआ दूसरे के आश्रित ही रहता हो वे दोनों पदार्थ अयुतसिद्ध कहे जाते हैं।

अयुत-सिद्धि—वैशेषिक दर्शन के अनुसार वे पदार्थ जिनका पृथक् प्रतीति से रहित निरंतर साहचर्य हो।

अरणि—शमी वृक्ष की लकड़ी जिससे यज्ञाग्नि प्रज्वलित की जाती है; आग मथने की लकड़ी; अग्निमंथन काष्ठ।

अरुंधती न्याय—अरुंधती तारा इतना सूक्ष्म है कि वह प्रायः नेत्रों से दिखायी नहीं पड़ता। इसका बोध कराने के लिए पहले उसके निकट के एक बड़े तारे को दिखाते हैं, फिर उसका प्रतिषेध कर उससे लघुतर तारे और फिर उससे भी लघुतर। इस क्रम से चल कर अंत में असली अरुंधती का बोध कराया जाता है। स्थूल से क्रमशः सूक्ष्म की ओर ले जाने वाली यह प्रणाली "अरुंधती न्याय" के नाम से प्रसिद्ध है। भारतीय अध्यात्म जीवन में इस प्रणाली का उपयोग बहुत प्रचलित है। पहले आगम और तंत्र के अनुसार निम्न कोटि की उपासना के लिए लोगों को प्रेरित किया जाता है, उसके अनन्तर पुराण या द्वैत संप्रदाय की और तदनन्तर स्मृति निर्धारित उपासना करता है और अंत में उपनिषद् अथवा अजातवाद की अद्वैत उपासना का अनुमोदन

अवतारवाद—यह सिद्धांत कि परमात्मा मानव-रूप धारण करता है।

अवधूत—साधु; एक प्रकार का संन्यासी जो प्राय: वस्त्र नहीं पहनता।

अवयव—अंश; भाग; अंग; न्याय दर्शन के सोलह पदार्थों में से एक। ये पांच हैं—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन।

अवरोह—अवतरण; उतार; पतन।

अवसान—अंत; समाप्ति; मृत्यु; सीमा।

अवस्तु—असद्वस्तु; अज्ञानादि सकल जड़ समूह; शून्य; तुच्छ; निस्सार।

अवस्थांतर्गत-प्राप्ति—कार्य का कारण में विलय।

अवस्था—दशा; स्थिति; तीनों देह के व्यवहार के काल; स्थूल देह के काल।

अवस्था-त्रय—चैतन्य की तीन अवस्थाएं—जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति।

अवस्था-स्थिति—स्थायी स्थिति; अपरिवर्तनशीलता; जीव का अपने स्वरूप में अवस्थान।

अवांतर वाक्य—मध्यवर्ती या गौण वाक्य; वेदांत में शिष्य को अद्वैतपरक महावाक्यों की दीक्षा देने से पूर्व कहे जाने वाले परमात्मा और जीव के स्वरूप के बोधक वाक्य।

अवाङ्-मनोगोचर—वाणी और मन की पहुँच से परे; वाणी और मन का अविषय; ब्रह्म; आत्मा।

अविकारी—विकारशून्य; अव्यय; ब्रह्म।

अविच्छिन्न—लगातार; अविच्छेद; अटूट; व्यवधान-रहित।

अविज्ञात—अज्ञात; अनजाना; अविदित; ब्रह्म।

अविद्या—अज्ञान; ज्ञान का अभाव; ब्रह्म की एक शक्ति जिसे कभी माया से अभिन्न और कभी भिन्न मानते हैं; जीव की उपाधि; अज्ञान का एक भेद; जीव के कारण-शरीर को रूप प्रदान करने वाली मलिन सत्वगुण प्रधान प्रकृति; सांख्य शास्त्रानुसार प्रकृति; योग के पंच क्लेशों में से एक।

अविद्या-नाश—अज्ञान का विनाश; शरीर-बंधन से

अविभाग—विभाग रहित; भिन्नता का अभाव; एकरूपता।

अविमुक्त—जो मुक्त न हो; बद्ध जीव।

अविरति—निवृत्ति का अभाव; विषयासक्ति; विषयों की तृष्णा; भोग में अनुरक्ति; चित्त के नौ विक्षेपों में से एक; योग में एक विघ्न।

अविरोध—विरोध का अभाव; समानता; साधर्म्य; संगति; मेल; ब्रह्मसूत्र के दूसरे अध्याय का नाम।

अविवेक—विवेक का अभाव; अविचार; अज्ञान।

अविश्वास—विश्वास का अभाव; संदेह।

अवीचि—तरंगहीन; एक नरक का नाम जिसमें साक्षी में झूठ बोलने वाले, क्रय-विक्रय में कम तोलने वाले और दान देते समय मिथ्या बोलने वाले डाले जाते हैं।

अवैकल्प—पूर्णता; शान्तता; अक्षुब्धता।

अव्यक्त
अव्यक्तं—जो स्पष्ट न हो; अप्रत्यक्ष; अगोचर; अदृश्य; अप्रकटित।

अव्यक्त-दृष्टि—असीम, शाश्वत और पूर्ण के दृष्टिकोण से।

अव्यक्त नाद—अप्रकट ध्वनि; परावाणी।

अव्यपदेश्य—जो कहा न जा सके; जिसका निर्देश न किया जा सके; अनिर्वचनीय।

अव्यभिचारिणी-भक्ति—निश्चल भक्ति; एक ही इष्टदेव अथवा भगवान् के किसी एक ही रूप के प्रति भक्ति।

अव्यय—जिसका व्यय न हो; विकार-शून्य; परिणाम-रहित; अविनाशी; सर्वदा एकरूप।

अव्यवहार—जो सांसारिक कार्यों से मुक्त हो; जो व्यवहार में न लाया जाय।

अव्यवहार्य—अव्यवहरणीय; जो काम के योग्य न हो; जो व्यवहार के योग्य न हो; लौकिक व्यवहारों से परे; किसी आचार-विचार से परे।

अव्यवहित—व्यवधान-रहित; सटा हुआ; अन्तराय-रहित।

अव्याकृत—जो विकार को न प्राप्त हो; अप्रकाशित; गुप्त; सांख्य के अनुसार प्रकृति; माया।

अव्याप्ति—व्याप्ति का अभाव; वह गुण जो गुणी में विद्यमान न हो; न्याय में सम्पूर्ण लक्ष्य पर लक्षण का न घटना, उदाहरण स्वरूप—"गाय भूरी होती है", इसमें अव्याप्ति दोष है क्योंकि भूरापन केवल एक जाति की गायों का विशेषण है न कि गाय की समस्त जाति का; जो लक्षण अपने लक्ष्य के एक देश में वर्ते वह अव्याप्ति दोष है।

अशनाया—बुभुक्षा; क्षुधा; भूख; भोजन की आकांक्षा।

अशब्दं
अशब्द } — शब्दहीन; बिना शब्द का; निस्तब्ध; ब्रह्म।

अशरीरक—देह-रहित; बिना शरीर का; अशरीरी।

अशांति—शांति का अभाव; अस्थिरता; चंचलता; क्षोभ।

अशुक्ल—अश्वेत; कृष्ण; काला।

अशुचि—अपवित्र; दूषित; मलिन।

अशुद्ध—अपवित्र; बिना शोधा हुआ; असंस्कृत।

अशुद्ध-मनस— मलिन मन; निम्न मन।

अशुद्ध-माया—रजोगुण प्रधान माया; जीव की अविद्योपाधि; मलिन माया; मलिन सत्त्व; अविद्या; रज और तम मिश्रित अशुद्ध सत्त्व।

अशुद्ध-संकल्प—अपवित्र संकल्प या निश्चय।

अशुद्धि—अपवित्रता; भूल; गलती।

अशुभ—जो शुभ न हो; बुरा; अमङ्गलकारी।

अशुभ-वासना—बुरी वासना; मलिन इच्छा।

अश्रुपात—आँसू गिरना; रुदन; भक्ति के आठ लक्षणों में से एक।

अश्वत्थ-वृक्ष—पीपल का पेड़।

अश्वनाय—घोड़ा ले जाने वाला।

अश्वमेध-यज्ञ—एक प्राचीन वैदिक यज्ञ जिसे राजा लोग समस्त भू-मण्डल पर अपना साम्राज्य स्थापित करने के लिए करते थे।

अष्टांग योग - आठ अंगों वाला योग; पतंजलि महर्षि का राजयोग।

अष्टाक्षर-मंत्र - आठ अक्षरों वाला मंत्र, "ॐ नमो नारायणाय।"

अष्टावधानी—जो एक समय में आठ काम करता हो।

असंग - अकेला; निरासक्त; किसी से संबंध न रखने वाला; सबसे पृथक्; सजातीय, विजातीय और स्वगत संबंध-रहित।

असंग-भावना - निर्लिप्तता की भावना।

असंगोऽयं पुरुषः यह पुरुष (ब्रह्म) निर्लिप्त है।

असंप्रज्ञात-समाधि - दो प्रकार की समाधियों में से वह जिसमें ध्याता, ध्येय और ध्यान की त्रिपुटी नहीं रहती; वह समाधि जिसमें आलंबन का अभाव रहता है; निर्बीज; निरालम्ब्य।

असंभव अनहोना; जो सम्भव न हो; जो न हो सके; न्याय का एक दोष जो लक्षण अपने लक्ष्य मात्र में न हो; अनुपपन्न।

असंभावना - संभावना का अभाव; ज्ञान के तीन प्रतिबन्धों में से एक; संशय; अनिश्चित ज्ञान; प्रमाणगत तथा प्रमेयगत संशय; वेदांत में जीव तथा ब्रह्म का भेद प्रतिपादन किया है किंवा अभेद अथवा जीव ब्रह्म का अभेद सत्य है या भेद इस प्रकार का संशय।

असंवेदना—मन की वह अवस्था जिसमें सुख-दुःखादि का बोध नहीं होता ; ज्ञान की कूटावस्था ; निर्विकल्प समाधि ; निर्विचारावस्था ।

असंसवित—निर्लिप्तता ; रागरहित; लगाव का न होना; ज्ञान की पाँचवी भूमिका; ब्रह्मविद्वर की अवस्था ।

असंहित – एकाग्र न होना ; अस्थिर ; असंलग्न ।

असत् - सत्ताहीन ; अस्तित्वहीन ; असत्य ; मिथ्या ; सत् का विपरीतार्थी ।

असदावरण—आवरण शक्ति का एक भेद विशेष ; वस्तु नहीं है ऐसी प्रतीति कराने वाली शक्ति ; ब्रह्म को आच्छादित करने वाली शक्ति ; माया की वह शक्ति जो ब्रह्म के अस्तित्व को आच्छादित कर लेती है और जीव सोचता है कि ब्रह्म नाम की कोई वस्तु ही नहीं है । यह अपरोक्ष ज्ञान से दूर होता है । असत्त्वापादकावरण ।

असमवाय-कारण— न्याय दर्शन के अनुसार वह कारण जो द्रव्य न हो, गुण या कर्म हो ; जो समवाय कारण न होकर कार्य का जनक हो ; साधारण कारण ; जो साक्षात् हेतु न होकर सहयोगी कारण हो । जैसे घट के निर्माण में कुलाल-चक्र और दण्ड ।

असमवायि— साधारण कारण ; सामान्य निमित्त ; उपादान कारण से भिन्न ।

असम्यग्दर्शन—विषय जगत् की चेतना ; अयथार्थ दृष्टि ।

असम्यग्दर्शिन्—जो पूर्ण ज्ञानी की स्थिति तक नहीं पहुँचा है; जो भले, बुरे और आर्य सत्यों को नहीं जानता।

असाधारण- विशेष; असामान्य; इतरवृत्ति धर्म से भिन्न एक हेत्वाभास सपक्ष में तथा विपक्ष में जो हेतु न रहता हो और पक्ष में रहता हो।

असाधारण-कारण—जो कारण सर्व कार्यों को न उत्पन्न करता हो किन्तु किसी एक कार्य को उत्पन्न करता हो; जो सब कार्य का कारण न हो किंतु किसी कार्य का कारण हो।

असाधारण-निमित्त—प्रमुख या विशेष कारण।

असार—सार-रहित; तुच्छ; निस्सार; तत्त्वहीन; खाली।

असिद्ध—अपूर्ण; अपरिपक्व; जो सिद्ध न हो; पाँच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक।

असु—प्राणवायु; श्वास; प्राण।

असुर—दैत्य; राक्षस; दानव; नीचवृत्ति।

असूया ईर्ष्या; डाह; दूसरे के गुणों को दोष बताना।

अस्ति है; सत्ता; विद्यमानता; ब्रह्म।

अस्ति-भाति-प्रिय- सत्-चित्-आनन्द; ब्रह्म के नित्य गुण।

अस्तेय—अचौर्य ; चोरी न करना ; अष्टांग योग के पाँच यमों में से तीसरा ।

अस्त्र—फेंक कर चलाने का हथियार ; मुक्त आयुध ।

अस्थि—हड्डी ।

अस्थिर—चंचल ; डाँवाडोल ; विचलित ।

अस्थूल—जो स्थूल न हो ; सूक्ष्म; ब्रह्म ।

अस्पर्श—स्पर्श न करने योग्य ; स्पर्श-रहित ; ब्रह्म ।

अस्मत्—हमारा ; हम लोगों का ।

अस्मि—मैं हूँ ।

अस्मिता—अहंकार ; दृक्, द्रष्टा और दर्शन शक्ति को एक मानना या पुरुष और बुद्धि में अभेद मानने की भ्रांति ; योगशास्त्रानुसार पाँच क्लेशों में से एक ।

अस्मिता-नाश—अहंकार का विनाश ।

अस्मिता-समाधि—अहंकाररहित अस्मिता विषय में चित्त वृत्ति की एकाग्रता ; असंप्रज्ञात समाधि से एक निम्नतर समाधि जिसमें एकमात्र "अहं अस्मि" की वृत्ति रहती है ।

अस्मृति—विस्मरण ; अनवधान ; अचेतावस्था ।

अहं—मैं ; अहंकार ; अभिमान ।

अहं आत्मा—मैं आत्मा हूँ ।

अहं इदं - मैं (और) यह।

अहं एतत् न — मैं यह नहीं हूँ।

अहं कर्ता — मैं कर्ता (करने वाला) हूँ।

अहंकार — अभिमान; गर्व; घमंड; अंतःकरण की एक वृत्ति जो अहंभाव प्रकट करती है; गर्वरूप राजस वृत्ति; अष्टविध प्रकृति में से एक।

अहंकार-अवच्छिन्न-चैतन्य — अहंकार बाधित चैतन्य; जीवात्मा।

अहंकार तामसिक — अज्ञान; मोह और प्रमाद से युक्त अहंकार।

अहंकार-त्याग — अहंकार को छोड़ना।

अहंकार राजसिक — रजोगुण (भोगविलास और आडंबरमूलक) से उत्पन्न अहंकार।

अहंकार सात्विक — अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त कराने वाला सतोगुणी अहंकार।

अहंग्रह-उपासना — ध्येय पदार्थ का अपने से अभेद करके ध्यान; निर्गुण ब्रह्म का अपने से अभेद चिंतन; वेदांतिक उपासना जिसमें साधक स्वयं को ब्रह्म मान कर उपासना करता है।

अहंता — अहंकार; गर्व; घमंड; "मैंपन"।

अहं दुखी — मैं दुःखी हूँ।

अहं प्रत्यय—"मैंपन" की बुद्धि; "मैंपन" का विचार; "मैंपन" की भावना या वृत्ति।

अहं ब्रह्मास्मि—मैं ब्रह्म हूँ।

अहंवृत्ति—अहंकार प्रत्यय; मैंपन की भावना; अहं प्रत्यय।

अहं सुखी—मैं सुखी हूँ।

अहमिका—अहमिति; अहंकार; अभिमान।

अहमेव सर्वः—मैं ही सब हूँ।

अहिंसा—मन, वचन तथा कर्म से किसी को पीड़ा न पहुँचाना; अष्टांग योग के पाँच यमों में से एक।

अहैतुक—अकारण; बिना कारण का; निमित्त-रहित।

आंगिरस—अंगिरा ऋषि के पुत्र बृहस्पति; अंगिरा संबंधी।

आंतरिक—भीतरी; अंदरूनी; हृदय का।

आंतरिक प्रेम—पूर्ण हृदय का प्रेम।

आंदोलन—बारंबार हिलना; हलचल; उथल-पुथल करने का प्रयत्न।

आकर्षण-शक्ति—वह शक्ति जो अन्य पदार्थ को अपनी ओर खींचती है।

आकस्मिक—सहसा होनेवाला; बिना किसी कारण के होने वाला; अनअनुमानित।

आकांक्षा—इच्छा; चाह; अभिलाषा; वांछा।

आकाश—नभ; आसमान; अंतरिक्ष; पाँच तत्त्वों में से एक जो एक, नित्य और विभु है।

आकाशज—आकाश से उत्पन्न।

आकाश-तत्त्व—पाँच तत्त्वों में जो अमूर्त है।

आकाश-नील—आकाश की नीलिमा।

आकाश-मण्डल—नभ-मंडल; खगोल; गगन-मंडल।

आकाश-मात्र—केवल आकाश।

आकाशवाणी—देववाणी; स्वर्गिक शब्द; वह शब्द जो आकाश से देवता लोग बोलें; रेडियो द्वारा प्रसारित ध्वनि।

आकुंचन-सिकुड़ना; संकोचना; वैशेषिक के अनुसार पंचविध कर्मों में से एक।

आख्यान--विशेष कथन; वर्णन; उपन्यास के भेदों में से एक।

आगम—वेद; नीतिशास्त्र; छः प्रकार के प्रमाणों में से एक; शब्द प्रमाण।

आगम-प्रमाण-शब्द प्रमाण; वेद, शास्त्र तथा आप्त पुरुष के वचनों को आगम प्रमाण कहते हैं।

आगामी (कर्म)-वे नवीन कर्म जिनका संग्रह अब किया जा रहा है जिनका फल भविष्य में मिलेगा; क्रियमाण; त्रिविध कर्म में से एक।

आचमन—पूजा से पहले हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़कर पीना; जल पीना; उपस्पर्श।

आचरण--व्यवहार; चरित्र; आचार; सदाचार का परिपालन।

आचार—व्यवहार; चरित्र; शील; आचरण।

आज्ञा-चक्र-दोनों भौवों के मध्य दो दल के कमल का माना हुआ पद्माकार (चक्र); षट्चक्रों में से एक; मन का निवास-स्थान।

आतिवाहिक देव—मरने के उपरान्त जीवात्मा को देवलोक, वायुलोक, चन्द्रलोक, विद्युल्लोक, इन्द्रलोक प्रजापति आदि लोकों को ले जाने वाला देवता।

आतुर संन्यास—वह संन्यास जो व्याधि आदि से आतुर होने पर मन या वाणी से धारण किया जाता है।

आत्म-क्रीड़—अपने आत्मा में ही रमण करने वाला।

आत्मघात—आत्महत्या; स्वबध; अपने हाथों अपने को मार डालने का कार्य।

आत्मचिंतन—आत्मा के विषय में बार-बार स्मरण करना।

आत्मज्ञ- आत्मज्ञानी; तत्त्वज्ञानी; जिसे अपने स्वरूप का भली भाँति ज्ञान हो।

आत्मज्ञान- ब्रह्मज्ञान; तत्त्वज्ञान; स्वरूपबोध; आत्मा तथा परमात्मा के संबंध में जानकारी।

आत्मतृप्त अपनी आत्मा में ही तुष्ट रहने वाला।

आत्मतृप्ति- आत्मज्ञान से उत्पन्न संतोष; तुष्टि; आत्मतुष्टि।

आत्मदृष्टि—आत्मा के रूप में सब का दर्शन।

आत्मनिवेदन- अपने आपको तथा अपना सर्वस्व अपने इष्टदेव पर चढ़ा देना; आत्मसमर्पण; नवधा भक्ति का एक अंग।

आत्मनिष्ठा- आत्मा में स्थित; आत्मनिश्चय।

आत्म-प्रकाश- आत्मा की ज्योति।

आत्म-प्रत्यक्ष—आत्मा का अपरोक्ष दर्शन।

आत्म-बल—अपना बल; आत्मिक बल।

आत्मबोध—आत्मज्ञान; श्री शंकराचार्य के एक ग्रंथ का नाम।

आत्मभाव—सबको आत्मा समझना।

आत्मरति—आत्मा के आनंद में अनुरक्ति; आत्मज्ञान में डूबना; आत्मा के आनंद का निरन्तर अनुभव करना; आत्माराम।

आत्मलक्ष्य—आत्मा को अपनी ध्येय वस्तु बनाना।

आत्मलाभ—आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति।

आत्मविचार—आत्मानुसंधान।

आत्मवित्—ब्रह्मविद्; तत्त्वज्ञ; आत्मज्ञानी; आत्मवान्; वह जो आत्मा और परमात्मा के स्वरूप को पहचानता हो।

आत्मविभूति—आत्मसाक्षात्कार की आध्यात्मिक संपत्ति।

आत्मसंतुष्टि—आत्मतृप्ति; अपनी आत्मा में ही तृप्ति।

आत्मसमर्पण—आत्मनिवेदन।

आत्महा—आत्मघाती; स्वघातक; आत्मा का हनन करने वाला।

आत्मा, **आत्मन्**—ब्रह्म; परामत्मा; जीवात्मा; चैतन्य।

आत्मानात्मविवेक—आत्म और अनात्म पदार्थों के भेद का ज्ञान।

आत्माश्रयी—आत्मा पर ही निर्भर रहने वाला; आत्मावलंबी; स्वापेक्षी; अपनी उत्पत्ति, स्थिति अथवा ज्ञान के लिए अपनी अपेक्षा वाला।

आत्यंतिक—अत्यधिक; अतिशय; पराकाष्ठा का; अंतिम; अत्यंत।

आत्यंतिक प्रलय—सद्योमुक्ति; कैवल्य मोक्ष; चार प्रकार के प्रलयों में से वह जो ब्रह्मसाक्षात्कार होने पर होता है।

आदर्श- उदाहरण; नमूना; अनुकरणीय व्यक्ति।

आदर्श पुरुष—वह व्यक्ति जिसके रूप तथा गुणों का अनुकरण किया जाय।

आदितत्त्व—मूल तत्त्व; प्रथमजात तत्त्व; मूल प्रकृति; पांच स्थूल भूतों से ऊपर के सूक्ष्म तत्त्व; ब्रह्म।

आदित्य--सूर्य; देवता।

आदेश आज्ञा; उपदेश; अनुशासन; अंत:प्रेरणा।

आद्य- आदि का; पहला; आरंभ; प्रथम।

आद्याशक्ति—ईश्वर की माया-रूप शक्ति; महामाया; मूल प्रकृति; दश महाविद्याओं में से एक; विमर्शतत्त्व।

आधार अधिकरण; सहारा; मूल; ब्रह्म; आश्रय; अवलंब; एक चक्र का नाम; जो अध्यस्त से भिन्न होकर उससे अभिन्न प्रतीत हो।

आधार-आधेय-संबंध—आश्रय और आश्रयी का पारस्परिक संबंध।

आधि—मन की पीड़ा; उदासी; मानसिक व्यथा; वेदना; चिंता।

आधिदैविक—भौतिक कारण के बिना होने वाला; अकस्मात्; देवता संबंधी; दैवकृत।

आधिदैविक ताप—विद्युत्पात, अतिवर्षण, अग्नि आदि दैविक शक्तियों से जन्य दुःख; दैवकृत दुःख।

आधिभौतिक—जीवधारी या पंचमहाभूत संबंधी।

आधिभौतिक ताप—मनुष्य, सिंह, सर्प आदि भूतों (प्राणियों) से या पंच महाभूतों से उत्पन्न दुःख।

आधिभौतिक शरीर—पंच महाभूतों से निर्मित देह; स्थूल शरीर।

आध्यात्मिक—आत्मा और परमात्मा संबंधी; ब्रह्म और जीव संबंधी।

आध्यात्मिक ताप—काम, क्रोध आदि जन्य मानस दुःख और व्याधि आदि जन्य शारीरिक परिताप।

आध्यात्मिक विद्या—आत्मा और परमात्मा संबंधी विद्या; ब्रह्म और जीव संबंधी विद्या; आत्मतत्त्व विषयक विद्या।

आनंद—आह्लाद; हर्ष; प्रसन्नता; परम सुख।

आनंद-अभाव—आनंद-रहित; निरानंद।

आनंदघन— आनंद का समूह; आनंद का पिंड; प्रचुर आनंद।

आनंदपद— आनंदमय स्थान।

आनंदमय— आनंद से पूर्ण; आनंदरूप; सुखमय।

आनंदमयकोश— कारण शरीर; पांच कोशों में से वह जो मूल अज्ञान से बना है; सत्त्वप्रधान अज्ञान; अहंकारात्मक या अविद्यात्मक; सुषुप्ति।

आनंद वल्ली—तैत्तिरीयोपनिषद् का एक खंड।

आनंद-सागर—आनंद का समुद्र।

आनंदस्वरूप—आनंदमय रूप वाला।

आपत्काल—विपत्ति; दुष्काल; संकट; दुर्दिन।

आपस्—जल।

आपस् तत्त्व— जल तत्त्व।

आपात रमणीय—आरंभ में सुंदर लगने वाला; पहली दृष्टि में मनोहर प्रतीत होने वाला।

आपेक्षिक—सापेक्ष; अपेक्षा रखने वाला; दूसरी वस्तु पर निर्भर रहने वाला।

आप्त— पूर्ण तत्त्वज्ञ; ऋषि; (योग में) प्राप्त; शब्द प्रमाण; यथार्थ ज्ञान वाला।

आप्तकाम— पूर्णकाम; जिसकी सब कामनाएं पूर्ण हो गयी हों; जीवन्मुक्त।

आप्तधर्म— ऋषि द्वारा प्रतिपादित धर्म।

आप्तवाक्य—पूर्णतत्त्वज्ञ का कहा हुआ; विश्वस्त व्यक्ति का कथन; वेद या श्रुति वाक्य; सिद्धांत वाक्य।

आभाति—चमकता है; दमकता है; झलकता है; ज्योति; छाया।

आभानावरण—दो प्रकार की आवरण शक्ति में से वह जिससे ब्रह्म है किंतु न भाति, प्रतीत नहीं होता, ऐसा भान होता है, इसकी निवृत्ति अपरोक्ष ज्ञान से होती है; अभानापादक आवरण।

आभासं—कार्य।

आभास—प्रतिबिंब; झलक; सदृश; मिथ्याज्ञान; प्रकाश; जिसमें असल की कुछ झलक भर हो।

आभासमात्र—नाममात्र।

आभासवाद—यह सिद्धांत कि संपूर्ण जगत् चेतन का आभास (परछाई) मात्र है—माया और आभास विशिष्ट चेतन ईश्वर है और आभास सहित अविद्या विशिष्ट चेतन जीव है।

आभ्यंतर—भीतर का; अंदर का।

आमर्ष—क्रोध; असहिष्णुता।

आमलक—आमला; (आंवला)।

आयाम—विस्तार; फैलाव; लंबाई।

आरंभ—शुरू; प्रारंभ; आदि; उपक्रम; संकल्प।

आरंभकोपादान - यह सिद्धांत कि उपादान कारण अपने से बिलकुल भिन्न पदार्थ उत्पन्न करता है। उदाहरणस्वरूप वैशेषिकों का परमाणु। वे इनके संघात को स्थूल शरीर, इन्द्रिय और विश्व का उपादान कारण मानते हैं; परमाणुवाद।

आरंभवाद यह सिद्धांत कि कार्य की उत्पत्ति समवाय, असमवाय तथा निमित्त कारण से भिन्न होती है। नैयायिक और वैशेषिकों का यह मत कि जो विभिन्न पदार्थों के संघात से यह विश्व बना है और इन पदार्थों के परमाणु अपने से भिन्न नये पदार्थों की सृष्टि करके भी अपनी विशेषता बनाये रखते हैं; असत्कार्यवाद।

आरती- दीपदर्शन; नीराजन; किसी देवमूर्ति के सामने दीपक घुमाने का कार्य तथा उस समय पढ़ा जाने वाला स्तोत्र।

आराधना उपासना; पूजा; भक्ति।

आरुरुक्षु योग के सोपान पर आरोहण में प्रयत्नशील; योगारूढ़ होने की इच्छा रखने वाला।

आरोह चढ़ाव; (वेदांत में) जीवात्मा की क्रमानुसार ऊर्ध्वगति या क्रमशः उत्तमोत्तम योनियों की प्राप्ति; कारण से कार्य का प्रादुर्भाव या पदार्थों की एक अवस्था से दूसरी अवस्था की प्राप्ति; विकास।

आर्जव— सरलता; सीधापन; व्यवहार की सरलता; ईमानदारी; ऋजुता।

आर्यधर्म— वैदिक धर्म; आर्यों का धर्म।

आर्यावर्त— उत्तरी भारत।

आलंबन- आश्रय; सहारा; अवलंब; साधन; उपकरण; (बौद्ध दर्शन में) वस्तु का मनोगत परिज्ञान।

आलंबन प्रत्यय—प्राथमिक या मूलभूत विचार; मूल कारण।

आलय-विज्ञान— बौद्धों का यह मत कि यह समग्र विश्व प्रपंच *आलय विज्ञान अर्थात् चित् का परिणाम* (विज्ञान प्रतीत्यसमुत्पन्न) है।

आलय-विज्ञान-प्रवाह—"अहं-अहं" की विज्ञान-(बुद्धि-) धारा; बौद्धों के मतानुसार पाँच स्कन्धों में से विज्ञान-स्कंध का एक भेद।

आलोचना—किसी वस्तु या विषय के गुण-दोष का विचार या निरूपण; विवेचन; विमर्श; समीक्षा।

आवरण— आच्छादन; अज्ञान का पर्दा।

आवरण-अभाव— आवरण का न होना; अभिव्यक्ति के प्रतिबंधक का अभाव; अविद्या अथवा अज्ञान का अभाव।

आवरण-भंग— अज्ञान के पर्दे का विदारण; अज्ञान की निवृत्ति।

आवरण-शक्ति आत्मा की ज्ञानदृष्टि पर पर्दा डालने वाली माया शक्ति; अविद्या; ब्रह्म है नहीं तथा भासता नहीं, इस व्यवहार की कारणरूपा; सत्त्व और रज मे अनभिभूत तम ।

आवाहन बुलाना; मंत्रों द्वारा देवताओं को बुलाना ।

आवृत्त-चक्षु जिसकी दृष्टि अंतर्मुखी हो; जिसने अपनी इंद्रियों को बाह्यविषय से लौटा लिया हो ।

आशय-बीज चित्त भूमि में प्रसुप्त वासना का बीज ।

आशा किसी वस्तु के मिलने की इच्छा; उम्मीद; भरोसा; दीर्घाकांक्षा; विस्तृत तृष्णा ।

आशुद्रवण शक्ति शीघ्र या तुरन्त पिघलने वाली शक्ति; शीघ्र अनुकंपा करने वाली शक्ति ।

आश्रम ऋषियों के रहने का स्थान; कुटी; हिंदू-शास्त्रोक्त जीवन की भिन्न-भिन्न चार अवस्थाएं—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास ।

आश्रमकरणी चारों आश्रमों के विहित कर्त्तव्य ।

आश्रम-धर्म चारों आश्रमों में पालनीय धर्म ।

आसक्त अनुरक्त; लीन; लिप्त; मोहित; मुग्ध ।

आसन बैठने की विधि; बैठने की कोई वस्तु; अष्टांग योग का तृतीय अंग ।

आसुरी संपत् राक्षसी गुण; कुमार्ग मे आयी हुई सम्पत्ति; दंभ, दर्प, क्रोधादि दुर्गुण; दैवी संपत् का उलटा ।

आहवनीय – यज्ञ में जलने वाली अग्नि; गृहस्थों की तीन यज्ञाग्नियों में से एक।

आहार –भोजन; इंद्रिय भोग-पदार्थ; विषय।

आहुति—मंत्र द्वारा अग्नि में घृत सामग्री आदि डालना; हवन में डालने की सामग्री।

इ

द्र जीव; इंद्रियों का स्वामी; एक वैदिक देवता; देवताओं का राजा; स्वर्गाधिपति; वर्षा का देवता।

द्रजाल मायाकर्म; जादूगरी; बाजीगरी; धोखा; छल।

द्रजालिकामायासदृश जादूगरी के समान भ्रमोत्पादक; स्वप्न के समान मिथ्या प्रतीति।

द्रिय वह शक्ति जिसके द्वारा बाहरी पदार्थों के भिन्न-भिन्न गुणों का भिन्न-भिन्न रूपों में अनुभव होता है तथा शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा यह शक्ति ज्ञान प्राप्त करती है प्रथमोक्त ज्ञानेन्द्रिय है और अंतिम कर्मेन्द्रिय।

द्रिय-ज्ञान इंद्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान।

द्रियार्थसन्निकर्ष इंद्रिय का अपने भोग-पदार्थ के संपर्क में आना; इंद्रियों का विषय के साथ होने वाला संबंध।

च्छा चाह; अभिलाषा; लालसा; आकांक्षा; किसी अप्राप्त वस्तु की चाहना।

च्छाशक्ति सर्वशक्तिमती कामशक्ति, ह्लादिनी शक्ति।
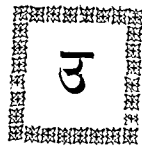
उच्छ्वास—उसांस; ऊँचा साँस; ऊपर को खींची हुई श्वास।

उड्डीयन
उड्डीयान—हठयोग की एक क्रिया या बंध, इसमें श्वास को पूर्णतः निकाल कर पेट को बलपूर्वक अंदर खींचकर मेरुदंड से ऐसा लगा देते हैं कि पेट के स्थान में गड्ढा बन जाता है।

उत्कर्ष--श्रेष्ठता; उत्तमता; महत्व।

उत्क्रांति—जीवात्मा का स्थूल शरीर से बहिर्गमन; ऊर्ध्वगति; आरोहण; क्रमशः उत्तमता और पूर्णता की ओर प्रवृत्ति।

उत्तम—श्रेष्ठ; उत्कृष्ट; अनुत्तम; सब से अच्छा।

उत्तमकोट्यधिकारी—सर्वश्रेष्ठ अधिकारी; वेदांत-श्रवण के तीन प्रकार के अधिकारियों में से प्रथम प्रकार का।

उत्तम पुरुष—श्रेष्ठ पुरुष; भगवान्; पुरुषोत्तम।

उत्तम रहस्य—गूढ़तम रहस्य।

उत्तरायण—सूर्य का उत्तर दिशा में गमन; छ मास का वह काल जब कि सूर्य मकर रेखा से उत्तर दिशा की ओर जाता रहता है।

उत्थान– अभ्युदय; उन्नति; समृद्धि; उठने की क्रिया; बाह्यमुखता; विपर्यय।

उत्पत्ति– जन्म; प्रभव; आविर्भाव; उद्भव; सृष्टि; पैदा होना; आरंभ।

उत्पत्ति-नाश—आरंभ और अंत; उद्भव और विलय; आविर्भाव और तिरोभाव।

उत्सव– मंगलकार्य; पर्व; हर्ष दिवस; त्यौहार; समारोह।

उत्साह उमंग; जोश; हौसला; आनंद; उल्लास; हर्ष।

उदान वायु शरीरस्थ पाँच प्रकार के वायुओं में से वह जो कंठ में रहता है और सिर पर्यंत गति करता है। यह शरीर को उठाये रखता है और मृत्यु के समय जीवात्मा को शरीरांतर व लोकांतर की प्राप्ति कराता है।

उदारता दानशीलता; विशाल-हृदय; सदाशयता; महत्ता।

उदार-वृत्ति उदाराशय; उदारचेता।

उदारावस्था असंकीर्ण दशा; वह अवस्था जब प्रकृति अपने सहायक विषय को पाकर अपने कार्य में प्रवृत्त हो रही हो।

उदासीन विरक्त; तटस्थ; निष्पक्ष; निर्लिप्त।

उदासीनता विरक्ति; निरपेक्षता; मंदोत्साह।

उद्गातृ—सामवेद का गायन करने वाला; उद्गीथ का उद्गान करने वाला।

उद्गीथ—ऊँचे स्वर में गाये जाने वाले सामवेद के गीत; प्रणव; ओ३म्।

उद्घाट, उद्घाटन—खोलना; उघाड़ना; प्रकट करना; मूलाधार चक्र में सुषुप्त कुंडलिनी को जगाना।

उद्धर्ष—जोश; हर्षातिरेक; उन्मत्तकारी; रोमांचकारी।

उद्बोधक—उत्तेजित करने वाला; चेताने वाला; स्मरण दिलाने वाला; जागृत करने वाला; ज्ञान या बोध कराने वाला।

उद्भिज्ज—जमीन को फोड़ कर उत्पन्न होने वाला; वनस्पति, लता, वृक्षादि; चार प्रकार के जीवों में से एक।

उद्भूत—उत्पन्न; निकला हुआ; प्रकट; इंद्रिय प्रत्यक्ष योग्य रूपरसादिक।

उन्मनी अवस्था—हठयोग की एक मुद्रा; योगियों की अमन होने की अवस्था।

उन्मनी भाव—योगशास्त्र में वह भाव जिसमें वृत्तियाँ अंतर्मुख रहती हैं; संकल्प-विकल्प रहित।

उन्मादन—उन्मत करने की क्रिया।

उन्मुखी—अभिमुख; उत्सुक; उद्यत; वह अवस्था जब प्रकृति सृष्टि-कार्य के लिए उद्यत होती है।

उपकुर्वाण--ब्रह्मचर्य के अनन्तर गृहस्थ होने वाला व्यक्ति।

उपकुर्वाण ब्रह्मचारी—दो प्रकार के ब्रह्मचारियों में से वह जो वेदों का विधिवत् अध्ययन करने के पश्चात् गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है।

उपक्रम--प्रारंभ; कार्यारंभ की पहली अवस्था; भूमिका।

उपक्रम-उपसंहार-एकवाक्यता-- प्रारंभ और अंत में विचारों की एकता; प्रारंभ से अंत तक विषय का निर्वहन।

उपद्रष्टा— साक्षीपुरुष।

उपनिषत्—वेदों का ज्ञान कांड; आत्मा आदि का निरूपण करने वाला धर्मशास्त्र; वेदांत शास्त्र।

उप-पातक—छोटा पाप; कदाचार; उपपाप।

उपप्राण—शरीरस्थ पाँच वायु--नाग, कूर्म, कृकर, देवदत्त तथा धनंजय जो क्रमश: डकार लाने, पलकें खोलने और बंद करने, छींक लाने, जम्हाई लाने तथा मृत्यु के अनन्तर शरीर को विगठित करने का कार्य करते है।

उपमान--वह जिसके साथ समता की जाय; सादृश्य; प्रमा का करण; प्रसिद्ध पदार्थ के सादृश्य से साध्य को साधना; छ: प्रकार के प्रमाणों में से एक।

उपरति--विषय से विराग; त्याग; उपशम; विरति; इंद्रियों का अपने विषयों से उपरामता; विहित कर्म का विधिवत् त्याग; षट्सम्पत्ति में से एक।

उपरम—वैराग्य; विरति; उदासीनता; शांति; उपरति; कार्य से विराम।

उपरामता-उदासीनता; विरति; निवृत्ति; उपरति।

उपलब्धि—प्राप्ति; बुद्धि; समझ; ज्ञान।

उपलब्धृ—विषय ज्ञान।

उपस्तंभक—आलंबन देने वाला; सहायक।

उपसर्ग--उपद्रव; उपप्लव; उत्पात; बाधा।

उपस्थ—पुरुष चिह्न; शिश्नेन्द्रिय।

उपहित चैतन्य—उपाधि वाला चैतन्य; आरोपित चैतन्य; उपाधि से संयोजित चैतन्य; जीवात्मा।

उपांशु जप—जप का एक प्रकार जिसमें जिह्वा और ओष्ठ थोड़ा-थोड़ा हिलते हैं और इतना शब्द होता है कि स्वयं सुन सके।

उपादान—सामग्री; प्राप्ति; ज्ञान।

उपादान कारण-वह पदार्थ जिसका कार्य के स्वरूप में प्रवेश हो और जिसके बिना कार्य की स्थिति न हो; वह कारण जो अपने कार्य में अन्वित (तादात्म्य भाव को प्राप्त) हो; जिन तत्त्वों से कोई कार्य बनता है वे उस पदार्थ के उपादान कारण कहे जाते हैं जैसे मृत्तिका घट का उपादान कारण है न्याय में इसे समवाय कारण कहते हैं।

उपाधि—वह जिसके संयोग से कोई वस्तु और की और या किसी विशेष रूप में दिखाई दे; उपकरण;

वाहन; शरीर; वेदांत का एक अपना शब्द जो उस वस्तु के लिए प्रयोग होता है जो ब्रह्म में गुणों का आरोप कर उसे परिच्छिन्न बनाता है; जीव की उपाधि अविद्या है और ईश्वर की माया।

उपाधि-धर्म उपाधि का प्राकृत गुण।

उपाय साधन; युक्ति; विधि।

उपासक पूजा करने वाला; आराधक; भगवान् के सगुण या निर्गुण रूप में प्रेम रखने वाला।

उपासना पास बैठना; सेवा; परिचर्या; आराधना; पूजा; इष्ट का ध्यान; एक प्रत्यय प्रवाह करना; चित्त की वृत्तियों को सब ओर से हटा कर केवल एक लक्ष्य पर ठहराना।

उपासना-मूर्ति इष्टमूर्ति; उपासना के लिए भगवान् की अभीष्ट मूर्ति।

उपास्य--जिसकी उपासना की जाय; पूजा के योग्य; आराध्य; उपासनीय।

उपाहरण- निकट लाना; ले आना; ग्रहण; लेना; छीनना।

उपेक्षा उदासीनता; तिरस्कार; अवहेलना।

उभयात्मक दोनों से संबंधित।

उमा देवी शिव पत्नी, जिसने इंद्र को ब्रह्म ज्ञान दिया; पार्वती; गिरिजा।

ऊर्ध्वरेतोयोगी—वीर्य न गिराने वाला योगी ; वह योग जो अपने वीर्य को ब्रह्मांड में केन्द्रित रखे ।

ऊर्मि—लहर ; तरंग ; दुःख ; छः प्रकार के ताप—क्षुधा पिपासा, जरा, मृत्यु, शोक तथा मोह ।

ऋ

ऋक् ऋचा ; वेदोक्त मंत्र ; ऋग्वेद ।

ऋतंभरा-प्रज्ञा - राजयोग के अनुसार सत्य को धारण करने वाली अविद्यादि से रहित बुद्धि ।

ऋत -- सत्य ; साक्षात् अनुभूत सत्य ; साक्षात् करने के पश्चात् प्राप्त यथार्थ ज्ञान ।

ऋत्विक् यज्ञ कराने वाला ; पुरोहित ; याजक ।

ऋद्धि समृद्धि ; संपत्ति ; योग के अनुसार ये नौ हैं जो योग में बाधक मानी गयी हैं ।

ऋषि मंत्रद्रष्टा ; तत्त्वों के ज्ञाता ; मुनि ।

ऋषियज्ञ- गृहस्थों को जो पाँच महायज्ञ नित्य करने होते हैं उनमें से एक ; वेदों का पठन-पाठन ।

एक पहली तथा सबसे छोटी संख्या ; केवल ; अद्वितीय; अकेला ; स्वजातीय, विजातीय तथा स्वगत भेद से रहित ।

एकता— ऐक्य ; अभिन्नता ; एकत्व ।

एकत्व- एकता; मेल; एक होने का भाव ।

एकदंडी- वह संन्यासी जो केवल एक दंड धारण करता है ।

एकदेशिक—एकांगी; एक पक्षीय; एक देश-वासी; जो सर्वत्र व्यापक न हो ।

एकभविक—एक ही बार उत्पन्न होने वाला; जिस कर्माशय से एक ही बार जन्म हो ।

एकमेवाद्वितीयम्- एकमात्र ब्रह्म की सत्ता है । ब्रह्म के अतिरिक्त-दूसरी और किसी वस्तु की सत्ता नहीं है ।

एकरस- समान; एक ढंग का; अपरिवर्तनशील; ब्रह्म ।

एकांत— अकेला ; निर्जन ।

एकांत-भाव-- अकेलेपन या निनर्जता की भावना; एकलीभाव ।

एकांतवाद—जीवात्मा और परमात्मा की एकता और अभेद का सिद्धांत; एक ही आत्मा को जगत् और जीवन का मूल मानने का सिद्धांत; संसार और प्राणियों में एक ही आत्मा के व्याप्त होने का सिद्धांत; अद्वैतवाद; एकात्मवाद।

एकांतिक—अनन्य; जो एक ही स्थल का हो; जो सर्वत्र न घटे; एकदेशीय।

एकांश—एक अंश या भाग।

एकाग्रता-एक ही ओर मन का लगे रहना; मन की स्थिरता; चित्त का स्थिर होना; चित्त की पाँच अवस्थाओं में से एक।

एकादशी—चांद्रमास के शुक्ल तथा कृष्णपक्ष की ग्यारहवीं तिथि।

एकायन-एकाग्र; एक विषयासक्त चित्त; अद्वैतावस्था।

एकार्णव—प्रलय-पयोधि; कारण-सलिल।

एकोऽहं बहुस्याम्—मैं एक अनेक हो जाऊँ; यह शुद्धब्रह्म का वह आदि विचार है जो व्यक्तरूप धारण किया।

एवं--ऐसा ही; इसी प्रकार; सदृश; और।

एषणात्रयं-तीन प्रकार की कामना या वासना—वित्तैषणा; पुत्रैषणा तथा लोकैषणा।

ऐतिह्य—रूढ़ि; प्रथा; परंपरागत; आठ प्रमाणों में से एक प्रमाण कि बहुत दिनों से ऐसा ही सुनते आये हैं।

ऐश्वर्य—धन; संपत्ति; विभूति; वैभव; योग की आठ सिद्धियों में से एक।

ओं - प्रणव; परब्रह्म वाचक शब्द; ओंकार; एकाक्षर ब्रह्म।

ओंकार - परब्रह्म का सूचक; ओ३म्।

ओजस् बल; प्रताप; तेज; दीप्ति; आत्मिक बल; ब्रह्मचर्य तथा योगाभ्यास की शक्ति।

ओम्तत्सत् सच्चिदानंद ब्रह्म के त्रिविध नाम—ओं, तत्, सत्; मांगलिक कार्य या देवावाहन के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द।

ओषधि-योग - योग जिसमें स्वास्थ्य को सुधारने के लिए जड़ी-बूटियों का सेवन करते हैं।

औदासीन्य—उदासीनता; उदासी; खिन्नता; वि
भोगों और सुख-दुःखादि द्वंदों के प्रति उदासीन
परवैराग्य की उच्चतम श्रेणी।

औपाधिक—उपाधि-संबंधी।

औषधि—दवा।

क

कंचुक—प्रावरण; जामा; केंचुल; आच्छादक; कोश जिसके कारण जीव सर्वज्ञ होते हुए अल्पज्ञ और सर्वशक्तिमान् होकर भी तुच्छ कर्ता बन बैठा है।

कंठ गला; गरदन; स्वर।

कंठमूल—कंठ की जड़; कंठ का पिछला स्थान।

कंद - जड़; मूल; नाड़ियों का उद्गम स्थान।

कंदमूल कंद और मूल।

कंपन काँपना; थरथराहट; कँपकँपी; भक्ति के आठ लक्षणों में से एक।

क ब्रह्मा; विष्णु; कामदेव; अग्नि; वायु; यम; सूर्य; जीव; राजा; ग्रंथि; मयूर; पक्षी; मन; शरीर; काल; मेघ; शब्द; बाल; प्रकाश; धन; सुख।

कथा धर्म विषयक आख्यान; चर्चा; कहानी; वृतांत।

कनिष्ठकोटचधिकारी—निकृष्ट या हीन अधिकारी।

कपट—छल; धोखा; दंभ; दुराव।

कपालधौति हठयोग की षट् क्रियाओं में से वह जो कफ दोष के निवारण के लिए की जाती है। यह तीन प्रकार की है:—(१) वातक्रम—श्वास-प्रश्वास से; (२) व्युत्क्रम—नाक से जल खींच कर उसे

मुख द्वारा निकलना तथा (३) सीत्क्रम—उपरोक्त द्वितीय प्रकार का उलटा अर्थात् मुख से जल पीकर उसे नासिकाओं द्वारा निकालना।

कपालरंध्र सिर या कपाल का गड्ढा।

कफ–श्लेष्मा; बलगम; आयुर्वेद के अनुसार तीन दोषों में से एक।

करतलभिक्षा—हथेली को भिक्षापात्र की तरह उ करना।

करालो—भयावनी; डरावनी; अग्नि की सात जिह्व में से एक।

करुणा—दया; कृपा; तरस।

करुणाविष्ट—करुणाभिभूत।

कर्तव्य—करने के योग्य; करणीय कार्य; धर्म; फर्ज

कर्ता–करने वाला; बनाने वाला; इच्छा, ज्ञ प्रयत्न वाला।

कर्तृत्व—कर्ता का भाव; कर्ता का धर्म।

कर्तृवाद—स्वतंत्र कर्ता होने का दावा।

कर्म—काम; त्रिविध कर्म—संचित, प्रारब्ध आगामी अथवा शुभ, अशुभ और मिश्रित; भाग (वैशेषिक में) छः पदार्थों में से एक; (मीमांसा मे यागयज्ञ।

कर्मकांड—शास्त्र का वह भाग जिसमें यज्ञादि कर्मों व विधान हो; वेद का संहिता और ब्राह्मण भाग।

कर्मज कर्म से उत्पन्न; क्रियाजन्य; प्रारब्ध।

कर्मपर कर्म में तत्पर; कर्मपरायण।

कर्मफल कर्मभोग; धर्म या अधर्म करने से सुख या दुःख मिलने का परिणाम; पूर्वजन्म के कर्मों का परिणाम।

कर्मबंध कर्मानुसार जन्म-ग्रहण; कर्मजाल बंधन।

कर्मभूमि कर्मलोक; कर्मक्षेत्र; भूलोक; धार्मिक कर्म करने का स्थान।

कर्मयोग निष्काम कर्म; कर्तव्य का वह पालन जो सफलता और विफलता में समान भाव रखकर किया जाय; चित्तशुद्ध करने वाला शास्त्रविहित कर्म जिससे ज्ञान मिलता है; अनासक्तयोग।

कर्मयोगी कर्मयोग के सिद्धांतों के अनुसार काम करने वाला।

कर्मवाद यह विश्वास कि प्रत्येक शुभाशुभ कर्म का तदनुरूप फल अवश्य मिलता है; मीमांसा जिसमें कर्म को प्रधान माना गया है।

कर्मसाक्षी जिसके सामने कोई काम हुआ हो; प्राणियों के काम को देखते रहने वाला देवता।

कर्माध्यक्ष कर्म का नियामक; ईश्वर; आत्मा।

कर्माशय कर्म के धर्म और अधर्म का गुण; कर्म की वासना; कर्मफल भोग के संस्कार; त्रिविपाक।

कर्मेंद्रिय—पंच महाभूतों के रजो अंश प्रधान से उत्पन्न काम करने वाली इंद्रिय; हाथ, पैर, वाणी, गुदा और उपस्थ; क्रिया का साधन; क्रियाजनक इंद्रिय।

कलत्रपुत्रेषणा—भार्या और संतान की कामना; दारासुतैषणा।

कला—अंश; भाग; कौशल; गुण; हुनर।

कलाशक्ति—कलाकारिता की शक्ति।

कलि—पाप; काला; कलियुग।

कलियुग—चार युगों में से चौथा; वर्तमान युग।

कल्प—ब्रह्मा का एक दिन; ३६० मानववर्ष एक देववर्ष के बराबर होता है, देवताओं का १२००० वर्ष का एक चतुर्युग या महायुग होता है; ७१ महायुगों का एक मन्वंतर होता है, १४ मन्वंतर या ४,३२,००,००,००० वर्ष का एक कल्प होता है। इतने ही वर्ष की ब्रह्मा की रात्रि होती है। वह इस प्रकार के १०० वर्ष तक जीवित रहते हैं। ब्रह्मा की आयु के बराबर किसी भी प्राणी की आयु नहीं होती। अतः उसे पर कहते हैं और उसके आधे को परार्ध कहते हैं। वर्तमान कल्प श्वेतवराह कल्प कहलाता है; यज्ञादि के विधान को भी कल्प कहते हैं; वेद के शिक्षा आदि छः अंगों में से एक।

कल्पना—भावना; अनुमान करना; विचार; मानसिक चित्र रचना; कलना; स्फुरणा।

कल्पनामात्र—केवल भावना।

कल्पित—रचित; जिसकी कल्पना की गयी हो; माना हुआ; कृत्रिम; असत्य।

कल्याण—मंगल; शुभ; भला; कुशल; श्रेय।

कषाय—रागद्वेषादि के सूक्ष्म संस्कार; विकार; विषयानुराग; क्रोध, लोभ आदि मनोविकार; अंतःकरण के दोष; निर्विकल्प समाधि में एक विघ्न; गैरिक।

काम—इच्छा; सहवास की इच्छा; कामदेव; अर्थादि चतुर्वर्ग में से एक।

कामकांचन—स्त्री-संभोग-सुख और संपत्ति; आत्म-साक्षात्कार की दो महान् बाधाएं।

कामजात—वासना से उत्पन्न।

कामना—मनोरथ; वासना; कामुकता; चाह; इच्छा।

काममय—इच्छाओं और कामुक विचारों से भरा हुआ; कामवान्।

कामशक्ति—इच्छा या संभोग-कामना की प्रबलता।

कामसंकल्प—कामज विचार।

कामाग्नि—कामुकता की ज्वाला।

काम्यकर्म—अभीष्ट सिद्धि के निमित्त किया गया कर्म; कामनायुक्त कर्म; कर्म जो किसी लौकिक या पारलौकिक कामना से किया जाय; कर्म जिसके करने से फल की प्राप्ति हो और न करने से प्रत्यवाय न हो।

काय--शरीर; देह; तन।

कायक्लेश—शारीरिक कष्ट; शारीरिक ताप।

कायव्यूह—योगियों का अपने कर्मों के भोग के लिए चित्त द्वारा एक साथ कई शरीरों का निर्माण; योगशक्ति से रचित अनेक काय।

कायसंपत्—शरीर की संपदा।

कायसिद्धि—योग द्वारा शरीर की पूर्णता।

कारण—हेतु; निमित्त; वजह; सबब, वह जिसके फलस्वरूप कोई कार्य हो; वह जिसके विचार से अथवा जिसका ध्यान रख कर कोई कार्य किया जाय; वह जिससे कुछ उत्पन्न या प्रगट हो; आदि; मूल; साधन।

कारण-जगत्—विश्व का कारणत्व।

कारण-ब्रह्म—माया विशिष्ट चेतन; सगुण ब्रह्म; पर ब्रह्म।

कारणविवेक—विवेकोदय का असामान्य हेतु।

कारणवैराग्य—जीवन में असफल होने अथवा किसी प्रियजन की आकस्मिक मृत्यु आदि से उत्पन्न होने वाला वैराग्य।

कारणशरीर—आनंदमय कोश; वह कल्पित शरीर जिसमें इंद्रियां काम नहीं करतीं पर अहंकारादि का संस्कार बना रहता है; वह स्थान जहाँ जीव निद्रा-काल में निवास करता है।

कारणसलिल—कारण-जल; ब्रह्मांड की सृष्टि का कारण जल; कारणार्णव; अप्; अविशेष प्रकृति का वैदिक नाम; एकार्णव; अप्रकेत सलिल।

कारणात्मा- हेतुक आत्मा।

कारणावस्था हेतुमान दशा।

कार्य—काम; कर्म; फल; परिणाम; विधेय; वह जो कारण से उत्पन्न हो।

कार्य-कारण-संबंध- कार्य और कारण का संबंध भाव; हेतु का फल के साथ संबंध; साक्षी या द्रष्टा तथा दृश्य में परस्पर संबंध।

कार्यतत्त्वार्थवित्—कर्म के तत्त्व के भाव को अच्छी तरह जानने वाला।

कार्यब्रह्म- मायाकृत कार्यविशिष्ट चेतन; अपर ब्रह्म; प्रजापति; हिरण्यगर्भ।

कार्यविमुक्ति कार्य-व्यापारों से छुटकारा; मोक्ष।

कार्यावस्था - परिणामावस्था।

काल—समय; मृत्यु; अंत; यमराज।

कालचक्र—समय का चक्र या पहिया; समय का हेर-फेर।

कालातीत -काल से परे; जिसका समय बीत गया हो; काल से अपरिच्छिन्न; न्याय के पांच प्रकार के हेत्वाभासों में से वह जिसमें अर्थ एक देशकाल के ध्वंस से युक्त हो और इस कारण असत् ठहरता हो;

आधुनिक न्याय में एक प्रकार का बोध जिसमें साध्य के आधार में साध्य का अभाव निश्चित् रहता है; काल-परिच्छेद से शून्य।

काल्पनिक—कल्पित; मनगढ़ंत; कल्पना करने वाला।

किरीट—मुकुट; विष्णु भगवान् का एक आभूषण।

कीर्तन—ईश्वर के नाम और लीलाओं के संबंध में भजन गायन; नवधा भक्ति का एक प्रकार; ब्रह्मचर्य की आठ त्रुटियों में से एक।

कीर्ति—ख्याति; यश।

कुंडलिनी—हठयोग में शरीर के अंदर का एक कल्पित सर्पाकार अंग जो मूलाधार के अंतर्गत सुषुम्ना नाड़ी के नीचे माना गया है। इसके साढ़े तीन कुंडल हैं और मुख नीचे की ओर है; कुंडलिनी शक्ति।

कुंभक—प्राणायाम में श्वास को रोकना; विधारण; प्राणनिरोध।

कुटीर—कुटी; कुटिया; झोंपड़ी।

कुलधर्म—अपने वंश का धर्म; परंपरागत कुल-कर्तव्य; कुल-व्यवहार; कुलाचार; स्वजातीय धर्म।

कुश—कांस के समान एक घास जो धार्मिक कृत्यों में उपयोग की जाती है।

कूटस्थ—कूट के समान निर्विकार रूप से निश्चल रहने वाला; अटल; अचल; अपरिवर्तनशील; सदा एक सा बना रहने वाला; सर्वोपरिस्थित; अविनाशी;

जो ब्रह्म से लेकर कीट पर्यंत सभी जीवों में आत्मा-रूप से निवास करता है।

कूटस्थ चैतन्य—प्रत्यागात्मा; अंतःकरणबद्ध चेतन; बुद्धयवच्छिन्न चैतन्य; बुद्धि या व्यष्टि अज्ञान का अधिष्ठान चेतन।

कूटस्थता—कूट के समान निर्विकार एवं निश्चल रहने का भाव; अपरिवर्तनशीलता।

कूटस्थ नित्य—शाश्वत; अपरिवर्तनशील; निर्विकार; अंतरात्मा; परिणामी नित्य का उलटा।

कृतकृत्य- कृतार्थ; कृतकार्य; पूर्ण रूप से जिसका कार्य पूरा हो चुका हो; ज्ञानी; सफल मनोरथ।

कृतनाश- किये हुये पुण्यापुण्य कर्म का फल का भोग दिये विना ही नाश; कृतविप्रणाश।

कृतबुद्धि—बुद्धिस्थिर किया हुआ; पंडित; विचारवान्; विवेकी।

कृतात्मा शुद्ध आत्मा वाला मनुष्य; महात्मा।

कृपा दया; अनुग्रह; करुणा; मेहरबानी।

कृष्णद्वैपायन—वेदव्यास जिसने महाभारत, अठारह पुराण तथा चारों वेदों का निर्माण किया।

कृष्णाजिन काले हिरन का चमड़ा जो पूजा, ध्यानादि के समय उपयोग में आता है।

केंद्र बीच का स्थान; मध्यबिंदु; नाभि।

केयूर भुजबंद; विष्णु भगवान् का एक भूषण।

केवल—एकमात्र; अकेला; मात्र; ब्रह्म; अद्वैत; एक; शुद्ध।

केवल अस्ति—शुद्ध सत्ता मात्र।

केवल अस्तित्व—केवली भाव; परम भावावस्था।

केवल कुंभक—बिना पूरक, रेचक किये हुये एकदम श्वास-प्रश्वास की गति को जहाँ का तहाँ रोक देना।

केवल चैतन्य—शुद्ध चेतन मात्र।

केवल ज्ञान—वह ज्ञान जो भ्रांतिशून्य और विशुद्ध हो; परम ज्ञान; ब्रह्मज्ञान।

केवलानन्द स्वरूप—एकमात्र आनन्द रूप; ब्रह्म।

कैवल्य—मोक्ष; स्वरूपस्थिति; परम-गति; मुक्ति; निर्वाण; शुद्ध परमात्मस्वरूप में अवस्थिति।

कैवल्य मोक्ष—ज्ञानी अपने जीवन-काल में ही ब्रह्म से तद्रूप होकर सद्यः जीवन्मुक्ति प्राप्त कर लेता है। इसे केवलीभाव, प्रलय या परम-गति भी कहते हैं।

कोटि—करोड़; श्रेणी यथा साधन कोटि, सिद्ध कोटि आदि।

कोश—खोल; म्यान; आवरण; गिलाफ; वेदांत के अनुसार पाँच संपुट जो मनुष्य के शरीर में होते हैं—आनंदमय; विज्ञानमय; मनोमय; प्राणमय तथा अन्नमय।

कौपीन—लंगोटी।

क्रतु- यज्ञ; याग; संकल्प।

क्रम--तरतीब; पूर्वापर भाव; वेदपाठ की प्रणाली; रीति; परिपाटी।

क्रममुक्ति- योगियों की क्रमिक मुक्ति जो शरीर त्याग के पश्चात् देवयान मार्ग से होकर ब्रह्मलोक को जाता है और वहां से कैवल्य मोक्ष प्राप्त करता है।

क्रियमाण--इस समय किया जाने वाला कर्म जिसका फल आगे मिलेगा; आगामी।

क्रिया- कर्म; हठयोग के कुछ अभ्यास जैसे बस्ति, नेति, धौति आदि।

क्रियाज्ञान स्वरूप-ज्ञान की प्रापक ज्ञानमार्ग की प्रक्रिया।

क्रियाद्वैत- कर्म में एकता अथवा अद्वैतावस्था का व्यावहारिक जीवन।

क्रियानिवृत्ति--कर्म से मुक्ति; मोक्ष; ब्रह्मचर्य की आठ त्रुटियों में से एक।

क्रियायोग कर्मयोग; देवताओं का पूजन तथा मंदिर निर्माणादि कार्य; राजयोग के अनुसार तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान।

क्रियाशक्ति- ईश्वर की वह शक्ति जिससे वह ब्रह्मांड की सृष्टि करता है; संधिनी शक्ति।

क्रूरता निष्ठुरता; निर्दयता; कठोरता।

क्रूरमति—क्रूरात्मा; क्रूरबुद्धि।

क्रोध—कोप; रोष; अमर्ष; गुस्सा।

क्लेश—दुःख; व्यथा; वेदना; कष्ट; पीड़ा; अविद्या आदि पाँच परिताप जनक।

क्षण—समय का छोटा भाग; पल; निमेष।

क्षणभंगुर—क्षण भर में नष्ट होने वाला; अनित्य; क्षणविध्वंसी।

क्षणिक—एक क्षण रहने वाला; अनित्य; क्षणभंगुर।

क्षणिकत्व—क्षणभंगुरता; क्षण भर रहने का भाव।

क्षत्रियविद्या—क्षत्रियों की विद्या; युद्ध-विद्या; समरशिक्षा।

क्षमा—माफी; क्षांति।

क्षय—नाश; ह्रास; घटना; समाप्ति।

क्षर—नाशवान्; नष्ट होने वाला; नश्वर।

क्षात्रधर्म—क्षत्रियों का पालनीय धर्म।

क्षिति—पृथ्वी।

क्षिप्त—चित्त की भ्रमणशीलता; चित्त की पाँच अवस्थाओं में से एक।

क्षीण—निर्बल; दुबला; कृश; अबल; सूक्ष्म।

क्षुद्रब्रह्मांड—शरीर।

क्षेत्र—पुण्यस्थान; खेत; तीर्थ; शरीर; उत्पत्ति भूमि।

क्षेत्रज्ञ—जीव; पुरुष; परमात्मा; अंतर्यामी ईश्वर।

ख

ख आकाश ; शून्य ।

खेचर - आकाशचारी ; देवता ; विद्याधर ; पक्षी ; ग्रह ; नक्षत्र ।

खेचरीमुद्रा --हठयोग की एक मुद्रा जिसमें जीभ उलट कर तालु में लगायी जाती है तथा दृष्टि दोनों भौंहों के बीच में स्थिर की जाती है। इसके सिद्ध होने पर व्यक्ति आकाश में उड़ सकता है।

ख्याति -- भान और कथन ; ज्ञान ; प्रसिद्धि ; नामवरी ।

ग

गंध - सुवास; महक; सौरभ; पृथ्वी का गुण घ्राणेंद्रिय का विषय।

गंधतन्मात्र- गंध का सूक्ष्म एवं अमिश्रित रूप।

गंधर्वनगर- हलके बादल में दिखायी पड़ने वाला महल; नगर; काल्पनिक या मिथ्या नगर; वस्तु न रहते हुए उसकी प्रतीति का एक दृष्टांत; मिथ्याभासित; मिथ्याज्ञान; भ्रम।

गंभीर—बहुत गहरा; भारी; शांत; धीर।

गगन—आकाश; अंतरिक्ष।

गगनारविंद—आकाश-कमल; असत् पदार्थ; संसार।

गणपति- गणेश देवता; मंगलदायक देवता।

गतागति—आवागमन; जन्म-मरण का चक्र।

गति—दशा; अवस्था; चाल; हरकत; गमन; मृत्यु के पश्चात् जीवात्मा की अवस्था।

गद—रोग; बीमारी।

गदा-एक प्राचीन अस्त्र; कसरत का एक सामान; विष्णु भगवान् का एक अस्त्र।

गदाधर—गदा चलाने वाला; विष्णु का एक नाम।

गमनक्रिया—चलना; जाना।

गरिमा गुरुता; भारीपन; गौरव; आठ सिद्धियों में से एक।

गर्भोदक कारणसलिल; अव्यक्त प्रकृति।

गर्व - घमंड; अहंकार; अभिमान; दर्प; मद; अहंकार नामक अंत:करण का विषय।

गांभीर्य गभीरता; अचंचलता; धीरता; शांति का भाव; स्थिरता; गहनता।

गाणपत्य गणेश का उपासक; एक सम्प्रदाय जिसमें सब से बड़ा देवता गणेश माने जाते हैं; गणपति संबंधी।

गायत्री हिंदू धर्म में सब से अधिक पावन समझा जाने वाला एक वैदिक मंत्र; एक छंद का नाम; एक देवी का नाम।

गायत्रीविद्या ब्रह्म की गायत्री रूप में उपासना।

गार्हपत्य—गृहस्थ।

गार्हपत्याग्नि तीन प्रकार की यज्ञाग्नियों में से एक जिसकी रक्षा प्रत्येक गृहस्थ को करनी होती है।

गार्हस्थ्य गृहस्थाश्रम; चार आश्रमों में से द्वितीय; गृहस्थ का धर्म।

गीता गान; भगवद्गीता; उपदेशात्मक ज्ञान; ब्रह्म-तत्त्वोपदेश की कथा।

गुण— प्रकृति का धर्म; सत्त्व, रज और तम ये तीन गुण; प्रमा का असाधारण कारण; रूप, रसादिक।

गुणमय— गुणयुक्त; गुणस्वरूप ।

गुणवाद--गुण का वर्णन; मीमांसा में अर्थवाद का एक भेद ।

गुणसाम्य— सत्त्व, रज और तम -- इन तीनों गुणों की साम्यावस्था; परब्रह्म ।

गुणातीत—जो गुणों के प्रभाव से परे हो; त्रिगुणात्मिका से निर्लिप्त ।

गुणाश्रय—गुणों पर अवलम्बित; गुणों का सहयोगी ।

गुणी---जिसमें कोई गुण हो; गुणवाला; गुणवान् ।

गुद, **गुदा**—मलत्याग-द्वार; पायु; पाँच कर्मेंद्रियों में से एक ।

गुरु—मंत्रोपदेष्टा; विद्या या कला सिखलाने वाला; आचार्य; उस्ताद; मुर्शिद ।

गुरु-कृपा— गुरु की कृपा अथवा आशीर्वाद ।

गुरुमंत्र—गुरु से दीक्षा लिया हुआ मंत्र ।

गुहा-- कंदरा; गुफा ।

गुह्य—गुप्त; गोपनीय; गुप्तांग; लिंग ।

गुह्यभाषण— गुप्त बातचीत; अकेले में बातचीत; ब्रह्मचर्य की आठ त्रुटियों में से एक ।

गूढ़वासना—गुप्त अथवा सूक्ष्म वासना ।

गृहस्थ—ब्रह्मचर्य के पश्चात् विवाह करके दूसरे आश्रम में रहने वाला व्यक्ति; घरबारी; गृही; चार आश्रमों में से द्वितीय आश्रम ।

ग्राम—गाँव; समूह।

ग्राहक—लेने वाला; जानने वाला; इंद्रिय; ग्रहण करने वाला; क्रय करने वाला।

ग्राह्य—लेने योग्य; ग्रहण करने योग्य; इंद्रिय-विषय।

घटशुद्धि शरीर की शुद्धि।

घटाकाश घटावच्छिन्न आकाश; घड़े के भीतर का खाली स्थान।

घनप्रज्ञा ठोस ज्ञान का पिंड या समूह।

घृणा ग्लानि; घिन; नफरत।

घ्राण नाक; नासिका; सुगंध; वह इंद्रिय जिससे गंध का ज्ञान हो।

चंचल—चलायमान; अस्थिर; चपल; उतावला।

चंचलत्व—चपलता; मन की अस्थिरता।

चंचलवृत्ति—मन की भ्रमणशीलता।

चंद्रनाड़ी—वाम नासिका से प्रवाहित होने वाली एक नाड़ी; योगोक्त इड़ा नाड़ी।

चक्र—शरीरस्थ षट्चक्र; योग के अनुसार शरीर में वह स्थान जहाँ विशिष्ट शक्ति रहती है, इनकी संख्या छः है; शक्ति के केन्द्र; वृत्त; पहिया; भगवान् विष्णु का एक अस्त्र।

चक्रायुध—चक्र (सुदर्शन) धारण करने वाले; विष्णु; श्रीकृष्ण; चक्रधर; चक्रपाणि।

चक्षु—नेत्र; लोचन; आँख; पाँच ज्ञानेंद्रियों में से वह जिससे रूप का ज्ञान होता है।

चतुर्युग—चारों युगों—कृत, त्रेता, द्वापर तथा कलि का समय।

चतुर्वर्ग—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष।

चपलता—चंचलता; उतावली।

चर—अपने आप चल सकने वाला; जंगम; अस्थिर।

चरण—पग; पाँव; चौथाई भाग; आचार।

चरणामृत— चरणोदक; पूज्य व्यक्ति अथवा देवमूर्ति के चरणों का धोवन।

चरु —हवन के लिए पकाया हुआ अन्न; हविष्यान्न।

चांद्रायणव्रत—महीने भर का एक व्रत जिसमें चंद्रमा के घटने बढ़ने के अनुसार भोजन के कौर घटाने बढ़ाने पड़ते हैं। पूर्णिमा को १५ कौर से आरंभ कर प्रतिदिन क्रमशः एक-एक कौर कम करते हुए अमावस्या को एक भी ग्रास नहीं लेना होता; उसके बाद प्रतिदिन एक-एक ग्रास बढ़ाते हुए पूर्णिमा को १५ ग्रास तक पहुँचते हैं।

चारण एक अमानव पुरुष; देवयोनि विशेष।

चार्वाक— अनीश्वरवादी मत का एक प्रवर्तक; इसका चलाया हुआ मत या दर्शन; जड़वादी जो चैतन्य को पृथ्वी, अप्, तेज और वायु के सम्मिश्रण से होने वाला एक विकार मात्र मानता है।

चिंतन ध्यान; विचार; बार-बार स्मरण।

चिंता विचार; सोच; भावना।

चित् चेतना; चैतन्य; ज्ञान; प्रकाश।

चित्त अंतःकरण की एक वृत्ति जिसमें स्मृति तथा संस्कारों के चित्र बनते हैं; मन।

चित्तप्रसादन— योग में चित्त की एक अवस्था; मन की शांति।

चित्तविद्या—मनोविज्ञान; चित्त के रहस्य जानने की विद्या।

चित्तविमुक्ति—मन के बंधनों से छुटकारा।

चित्तशुद्धि—मन की शुद्धता; अंतःकरण की निर्मलता।

चित्ताकाश—मनरूपी आकाश; चित्त का विस्तार।

चित्शक्ति—चितिशक्ति; चेतनशक्ति; योग में द्रष्टा; पुरुष।

चित्शून्य—चित्तराहित्य; चित्त का निरालंबन।

चित्सामान्य—वैश्व चेतना; सजातीय, विजातीय तथा स्वगत भेद रहित चेतना।

चित्स्वरूप—ज्ञानस्वरूप; चिद्रूप।

चिदाकाश—चेतनामय आकाश; आकाश के समान निर्लिप्त तथा सब का आधारभूत ब्रह्म; परब्रह्म।

चिदानंद—ब्रह्म; ज्ञान और आनंदमय।

चिदाभास—चैतन्यस्वरूप परब्रह्म का प्रतिबिंब जो मनुष्य के अंतःकरण पर पड़ता है; जीव; प्रतिबिंबित बुद्धि।

चिदाभासचैतन्य—चिदाभास पर कूटस्थ ब्रह्म का प्रतिबिंब।

चिद्घन—चेतना का घनीभूत रूप; एकरस चैतन्य।

चिद्धर्म—मन का धर्म या स्वाभाविक गुण।

चिन्मय—शुद्ध ज्ञानमय; परमात्मा; चैतन्यरूप।

चिन्मात्र—केवल चैतन्य; चैतन्य मात्र।

चिन्मात्रोऽहम्— मैं चिन्मात्र हूँ।

चिरंजीवि- अमर; दीर्घायु; चिरायु; बहुत काल तक जीने वाला।

चेतस्-- चित्त; चित्त की वृत्ति; चेतना; ज्ञान।

चेष्टा उद्योग; प्रयत्न; कायिक व्यापार; हित की प्राप्ति और अहित के परिहार के लिए की जाने वाली क्रिया।

चैतन्य --चेतना; चेतनात्मा; ज्ञान; ब्रह्म।

चैतन्यमयी-- चेतना से पूर्ण; माया का एक नाम; अजड़धर्मा।

चैतन्यसमाधि—वह समाधि जिसमें अपनी सत्ता का भान तथा प्रकाश रहता है; यह जड़समाधि से भिन्न है जिसमें ज्ञान का सर्वथा अभाव रहता है।

छल—धोखा; बहाना; कपट; ठगी; न्याय के सोलह पदार्थों में से एक ।

जगत्— विश्व; संसार; जो निरंतर उत्पत्यादि भाव विकार को प्राप्त हो।

जगत्-व्यापार—संसार का कार्यकलाप।

जगद्गुरु— संसार का गुरू।

जटा—लट के रूप में गुंथे हुए सिर के बहुत बड़े-बड़े बाल; जूट।

जठराग्नि—पेट की वह अग्नि जिससे भोजन पचता है।

जड़—अचेतन; चेतनारहित; अज्ञानी; अविचारशील; मूर्ख; अचिदात्म।

जड़जड़भेद—भिन्न-भिन्न प्रकार के जड़ पदार्थों में अंतर।

जड़समाधि—हठयोग की अभ्यासजन्य वह समाधि जिसमें ज्ञान-प्रकाश का अभाव होता है; वेदांत की चैतन्य समाधि का उल्टा।

जनलोक—ऊपर के सात लोकों में से पाँचवां लोक जो तपोलोक के नीचे है।

जन्म पैदाइश; उत्पत्ति; उद्भव।

जप भगवान् के किसी नाम या मंत्र का बार-बार किया जाने वाला उच्चारण; विधिपूर्वक मंत्रोच्चारण।

जपमाला—जप करने की माला।

जपरहित ध्यान—मंत्र जप के बिना ध्यान।

जपसहित ध्यान—मंत्र जप के साथ ध्यान।

जय—जीत; विजय।

जरा—बुढ़ापा; वृद्धावस्था; जीर्णावस्था।

जरायु—उल्व; गर्भाशय; ओग्रोल; कलल।

जरायुज—पिंडज; जरायु से लिपटा हुआ गर्भ से उत्पन्न होने वाला प्राणी; चार प्रकार के जीवों में से एक।

जलाकाश—जल के परिपूर्ण घट के अंदर नक्षत्रादि सहित आकाश का प्रतिबिंब और घटाकाश दोनों मिल कर जलाकाश कहलाते हैं; घट के जल में प्रतिबिंबित होने वाला आकाश।

जल्प—प्रलाप; बकवाद; वृथा बकना; परमत खंडन पूर्वक स्वमत व्यवस्थापन; जय-पराजय की आकांक्षा से किया जाने वाला विवाद; न्याय दर्शन के सोलह पदार्थों में से एक।

जांबूनद—सुवर्ण; जांबूनदी संबंधी।

जाग्रत—जागता हुआ; निद्रोत्थित; जागरित; सचेत।

जाग्रदवस्था—वह अवस्था जिसमें सब बातों का परिज्ञान रहता है; जाग्रति; जागरितावस्था।

जीवचैतन्य— जीव की चेतना।

जीवजीवभेद— एक जीव का दूसरे जीव से अंतर।

जीवन्मुक्त—जो जीवन-काल में आत्मज्ञान होने संसार-बंधन से छूट गया हो।

जीवन्मुक्ति—जीवित रहते हुए इस जीवन में ही सांसारिक-बंधन से मोक्ष; जीवित दशा में ही माया-बंधन से छुटकारा; जीवित अवस्था में ही सर्व बंध की निवृत्ति की प्रतीति।

जीवसृष्टि— प्राणी द्वारा स्वरचित यथा अहंकार आदि।

जीवात्मा—जीव; आत्मा; प्रत्यगात्मा; देही; पुनर्भवी; प्राणी; शरीरी।

जीवेश्वरभेद—जीवात्मा और परमात्मा में अंतर; द्वैतवाद का प्रमुख सिद्धांत।

ज्ञान—बोध; सद्वस्तु या ब्रह्म की जानकारी।

ज्ञानकांड—वेद का वह भाग जिसमें ब्रह्म आदि सूक्ष्म विषयों का विचार है; उपनिषद्।

ज्ञानचक्षु—ज्ञाननेत्र; पंडित; तत्त्वदृष्टि।

ज्ञानतंत्र—तांत्रिक ग्रंथ जिसमें पारलौकिक ज्ञान की चर्चा हो।

ज्ञाननिष्ठ—आत्मा और ब्रह्म की एकतारूप ज्ञान में अवस्थित; ब्रह्म में स्थित; जिसकी बोधवृत्ति स्थिर हो।

ज्ञानभूमिका—ज्ञान की क्रमिक अवस्थाएं जो सात हैं।

मय—ज्ञान से पूर्ण; ज्ञानवान्।

मार्ग—ज्ञानयोग; ज्ञान द्वारा मोक्ष प्राप्त करने का उपाय।

यज्ञ—ज्ञान का प्रसार; यज्ञ की भावना से ज्ञान की साधना और प्राप्ति; आत्मनिवेदन।

योग—ज्ञान द्वारा मोक्ष प्राप्त करने का साधन; गुरूपदिष्ट विधि से आत्मतत्त्व का निरंतर ध्यान; सांख्ययोग।

योगी—ज्ञानमार्ग का पथिक; ज्ञानयोग का अनुयायी।

शक्ति—ज्ञानबल; सर्वशक्तिमती विश्व की चैतन्य चितिशक्ति; रज और तम से अनभिभूत चित् शक्ति।

—ज्ञान का स्फुरण।

—ज्ञानमूर्ति।

—ज्ञानरूप; ब्रह्म; मुनि।

—ज्ञानरूपी आकाश; असीम ज्ञान; ब्रह्म।

—आध्यात्मिक ज्ञान की आग।

—वेदांत की साधना-प्रणाली।

वे इंद्रियां जिनसे विषय का ज्ञान होता है—रूप, रस, स्पर्श और गंध का बोध कराने उपकरण; आँख, कान, नाक, जीभ और ये पाँच ज्ञानेंद्रिय हैं।

ज्ञानोदय - ज्ञान का प्राकट्य ।

ज्ञेय - जो जाना जा सके; जो जानने के योग्य हो; ज्ञानयोग्य; ज्ञातव्य; वेद्य ।

ज्येष्ठ — बड़ा; बूढ़ा; श्रेष्ठ ।

ज्येष्ठा - एक नक्षत्र ।

ज्योतिः -- उजाला; प्रकाश; द्युति ।

ज्योतिर्ध्यान -- परम ज्योति पर ध्यान ।

ज्योतिर्मय -- प्रकाशमय; आभापूर्ण ।

ज्योतिष्मत् ज्योतिमान; प्रकाशमय ।

ज्योतिस्वरूप -- ज्योति के आकार का; ज्योतिमूर्ति ।

त

तंत्र उपासना संबंधी एक शास्त्र जो मंत्र के जप और गुप्त क्रियाओं पर अधिक बल देता है; शिवोक्त शास्त्र।

तंद्रा ऊँघ; आलस्य; सुस्ती; नींद; पूरी नींद आने से पहले की अवस्था; ध्यान में एक विघ्न।

तटस्थ-लक्षण एक लक्षण विशेष जिसमें लक्ष्य से भिन्नता होने पर भी उसका बोध हो जाता है जैसे कौवे वाला मकान; इस भांति वेदांत में ब्रह्म का जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और लय का कारण होना ब्रह्म का तटस्थ लक्षण है; किसी वस्तु का तटस्थ लक्षण वह है जो उस वस्तु में एक विशेष समय तक ही रहकर उसकी विशेषता का प्रदर्शन करता है।

तटस्थ-वृत्ति उदासीन वृत्ति; जिसमें पदार्थ के प्रति न राग हो न द्वेष।

तत्त्व यथार्थता; वास्तविकता; सारवस्तु; पंचभूत; सांख्यशास्त्र में प्रकृति आदि पच्चीस पदार्थ; पृथ्वी, जलादि पंच महाभूत।

तत्त्वज्ञान ब्रह्मज्ञान; ब्रह्म, आत्मा आदि के संबंध का ज्ञान; परमार्थ ज्ञान; जो पदार्थ जैसा है उसको

वैसा ही जान लेना तत्त्वज्ञान है; मिथ्याज्ञान का उलटा।

तत्त्वदर्शी—ब्रह्मज्ञानी; सूक्ष्मदर्शी; दार्शनिक; तत्त्वज्ञ।

तत्त्वमसि--'तू वही है'; चार महावाक्यों में से एक; यह सामवेद के छांदोग्योपनिषद् का अभेद बोध वाक्य है जिसमें ब्रह्म और आत्मा का अभेद बतलाया गया है।

तत्त्ववित्—ब्रह्मज्ञानी; तत्त्वदर्शी; जिसे तत्त्व का ज्ञान हो।

तत्त्वातीत— तत्त्वों से परे; जो तत्त्वों से प्रभावित न हो।

तदाकार, तद्रूप— उसी (ब्रह्म) के आकार या रूप का।

तनु--शरीर; कृश; दुबला-पतला; शिथिल; सूक्ष्म; अल्प।

तनु-अवस्था--शिथिलावस्था; योग में क्लेश की एक अवस्था।

तनुमानसी-- मन की सूत्र के समान सूक्ष्म अवस्था; सप्त ज्ञान भूमिकाओं में से एक।

तन्मयता—लीनता; लगन; एकाग्रता; तद्रूपता; अभेदता; तल्लीनता; निमग्नता।

तन्मात्र— सांख्य के अनुसार पंचभूतों का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप; शब्द, रूप रस, गंध और स्पर्श; अपंचीकृत पंचभूत।

तपन जलन; ताप।

तपस् तपस्या; आत्मदमन; प्रायश्चित।

तपस्वी तपस्या करने वाला; तापस; तपःकर; तपोधर्म; तपोनिष्ठ।

तपोलोक ऊपर स्थित सात लोकों में से छठा जो सत्यलोक से नीचे है।

तप्तपिंड तपाया हुआ गोला।

तमस् अंधकार; अज्ञान; अविद्या; तीन गुणों में से एक।

तरंग लहर; मौज; उमंग; ऊर्मि; वीचि।

तर्क युक्ति; दलील; विवाद; शास्त्रार्थ; अनिष्टचिंतन; प्रतिवादी के अनिष्ट सिद्ध करने वाली युक्ति।

तर्पण पितरों, ऋषियों तथा देवों को तृप्त करने के लिए उनके नाम से जल देने की क्रिया।

तलातल सात पातालों में से एक पाताल का नाम।

तवैवाहम् मैं तुम्हारा ही हूँ।

तांत्रिक तंत्र संबंधी; तंत्र शास्त्र का जानने वाला।

तादात्म्य तत्स्वरूपता; एक वस्तु का दूसरी वस्तु में मिलकर उसी के सदृश हो जाना; अभेद।

तादात्म्य संबंध तत्स्वरूपता का संबंध; अभेद संबंध।

तापत्रय तीन प्रकार के ताप या दुःख—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।

तामसाहंकार तमोगुण वाला अहंकार; अज्ञान, मोह, क्रोधादि जन्य अहंकार।

तामसिक तपस्—अवांछित घोर तप; अज्ञानी पुरुषों का आत्मपीड़ा देने वाला तप।

तारक ज्ञान—मोक्षदायक ज्ञान; भवसागर से पार उतारने वाला ज्ञान।

तारण—उद्धार; संसार-सागर से पार उतरना; तारने वाला।

तारा—एक देवी का नाम; नक्षत्र।

तालुमूल—तालु का मूल।

तितिक्षा—सहिष्णुता; सहनशीलता; सुख-दुःख तथा मानापमान आदि द्वंद्वों को समान भाव से ग्रहण करने की शक्ति।

तिरोभाव—अंतर्द्धान; अदर्शन; छिपाव; तिरोधान; प्रलय।

तीर्थ—स्नान का पवित्र स्थान; देवस्थान; पुण्यस्थान; संन्यासियों का एक भेद।

तीव्र—अतिशय; अत्यंत; तीक्ष्ण; तेज; प्रचंड।

तीव्रवैराग्य—बड़ा वैराग्य; तीव्र संवेग; उत्कट वैराग्य; प्रचंड वैराग्य; निर्वेद।

तुच्छ—निःसार; हीन; क्षुद्र; नीच; नगण्य।

तुरीय—समाधि-वस्अथा; चतुर्थावस्था; परात्पर; तीनों अवस्थाओं से प्राणियों की अंतिम अवस्था जो मोक्ष है; कैवल्य; सप्त ज्ञान भूमिका में से अंतिम भूमिका; ब्रह्मविद्वरिष्ठ की अवस्था।

त्याग—छोड़ना; अहंकार, वासना तथा संसार का परित्याग; सर्वकर्मफल विसर्जन।

त्राटक—योग के षट्कर्मों में से एक; किसी बिंदु अथवा चित्र की ओर अश्रुपात होने तक एकटक देखना।

त्रिकाल ज्ञान—भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों की बातें जानना।

त्रिकाल ज्ञानी—तीनों कालों की बातों को जानने वाला; सर्वज्ञ।

त्रिकालदर्शी—त्रिकालज्ञ; तीनों कालों को देखने [illegible] जानने वाला व्यक्ति।

त्रिकूट—दोनों भौंहों के मध्य का स्थान; योग में बता[illegible] हुए छः चक्रों में से एक।

त्रिगुणमयी—सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों से युक्त; महामाया।

त्रिगुणात्मिका—तीनों गुणों वाली; त्रिगुणा; शक्ति।

त्रिपुट—तीन वस्तुओं का समूह; तीन आकारों का समाहार; ज्ञातृ, ज्ञान और ज्ञेय रूप पुटत्रय।

त्रिवृत्करण—स्थूल शरीर के संपादनार्थ पृथ्वी, जल और तेज का त्र्यात्मककरण; तीन वस्तुओं का मिश्रण; अग्नि, जल और पृथ्वी इन तीनों तत्त्वों में से प्रत्येक में शेष दोनों तत्त्वों का समावेश करके प्रत्येक को अलग-अलग तीन भागों में विभक्त करने की एक विशिष्ट क्रिया।

त्रिवेणी तीन नदियों का संगम स्थान; हठयोग के अनुसार दोनों भौंहों के बीच का स्थान जहां इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों का संगम होता है।

त्रिशूल भगवान् शिव का एक अस्त्र; दैहिक, दैविक और भौतिक दुःख।

त्र्यणुक तीन अणुओं वाला; त्रसरेणु; त्रुटि।

त्वक् त्वचा; चर्म; चमड़ा; खाल; स्पर्शेंद्रिय।

द

दंड—संन्यासी की लाठी; एक प्रकार की कसरत; सजा।

दंडशक्ति—राजदंड की शक्ति; नीतिशास्त्र के अनुसार राजाओं की चार शक्तियों में से एक; दमनशक्ति।

दंतधौति—दाँत साफ करने की क्रिया; दंतधावन; दंतपवन; दंतप्रक्षालन।

दंभ—कपट; पाखंड; अभिमान; झूठा आडंबर।

दक्ष—निपुण; चतुर; होशियार; कुशल; पटु।

दग्धावस्था—ज्ञानाग्नि से भस्म अवस्था में; भस्मीभूत अवस्था; जीवन्मुक्ति जिसमें सभी कर्म, अविद्या और संस्कार भस्मीभूत हो जाते हैं और ज्ञानी पिछले कर्मप्रवाह से व्यवहार करता सा दीख पड़ता है।

दत्त—दिया हुआ; गोद लिया हुआ; देना; दत्तात्रेय।

दम—इंद्रियों को वश में रखना; ज्ञानयोग में साधन-चतुष्टय के षट्संपत्ति में से एक; श्रोत्रादिक बाह्येंद्रियों को शब्दादिक विषयों से निग्रह।

दया—कृपा; करुणा; रहम।

दर्प—गर्व; अहंकार; उद्दंडता; अभिमान।

दर्भ—काश; कुश; एक प्रकार की घास।

दर्शन—नेत्रों द्वारा होने वाला बोध; भेंट; स्वप्न; न्यायादि छः शास्त्र; वह शास्त्र जिसमें तत्त्वज्ञान हो; जिससे वस्तु का तात्त्विक स्वरूप जाना जाय।

दशावधान—एक साथ दस बातें सुनकर उन्हें ठीक क्रम से याद रखना और दस काम एक साथ कर सकना।

दहराकाश—चिदाकाश; हृदयाकाश।

दान—देना; धर्मार्थ धनादि देना; खैरात।

दारासुतैषणा—भार्या और संतान की कामना; कलत्रपुत्रैषणा।

दास—सेवक; परिचर; गुलाम।

दास्य—भक्ति के पाँच भावों में से एक जिसमें भक्त अपने उपास्य देवता को स्वामी और आपको उसका दास मानता है; दासता; दासत्व; नवधा भक्ति का एक प्रकार।

दिक्शक्ति—माया शक्ति जो दूरी का भ्रम उत्पन्न करती है।

दिगंबर—नंगा रहने वाला; दिशाएं ही जिसका वस्त्र हो; बौद्ध या जैन मत का भिक्षु।

दिग्विजय—सैन्यशक्ति अथवा गुणों के द्वारा चतुर्दिक् विजय प्राप्त करना।

दिनचर्या—दिन भर का कर्तव्य कर्म।

दिव्य—ईश्वरीय; स्वर्गीय; अलौकिक; प्रकाशमान; मनोज्ञ।

दिव्यगंध— स्वर्गिक गंध; अलौकिक सुवास।

दिव्यचक्षु—ज्ञानचक्षु; अलौकिक वस्तुओं को देखने की शक्ति वाले नेत्र।

दिव्यदृष्टि—ज्ञानदृष्टि; वह अलौकिक दृष्टि जिससे गुप्त पदार्थ दिखायी दें।

दिव्याचार—दिव्य पुरुषों का जीवन-व्यवहार; शुद्ध भाव वाले उन्नत साधकों की एक तांत्रिक साधना प्रणाली।

दिशा—ओर; तरफ; जिससे पूर्व, पश्चिम आदि दस प्रतीतियाँ होती हैं।

दिष्टं—भाग्य।

दीक्षा—गुरु से नियमपूर्वक मंत्रोपदेश; गुरुमंत्र।

दीन—नम्र; दरिद्र; असहाय; दुःखी; दयनीय।

दीनदयालु—दीनों पर दया करने वाला।

दीनबंधु—दीन-दुखियों का मित्र; ईश्वर।

दीर्घ—लंबा; विशाल; विस्तृत।

दीर्घस्वप्न—लंबा स्वप्न; इस उक्ति से संसार का मिथ्या रूप प्रकट किया जाता है।

दुख—पीड़ा; कष्ट; क्लेश; संकट; शोक; खेद; सुख का विपरीत भाव; प्रतिकूल वेदनीय भोग।

दुखजिहासा—दुःख से बचने की इच्छा।

दुष्कृत—नीच काम; कुकर्म; कुकृत्य; पाप; दुष्कर्म।

दुष्टनिग्रह—दुराचारियों का विनाश; दुर्जनों का पराभव।

दूरदृष्टि दूरदर्शिता; दीर्घदृष्टि; दूर की बात सोचने का गुण।

दृक् नेत्र; चक्षु; द्रष्टा।

दृढ़ मजबूत; अविचलित; अडिग; सुस्थिर।

दृढ़ता मजबूती; पक्कापन; स्थिरता।

दृढ़भूमि योग में वह अवस्था जिसमें मन स्थिर हो जाता है; दृढ़ अवस्था वाला।

दृढ़संस्कार पुष्ट संस्कार; स्थिर संस्कार; स्थायी संस्कार; प्रगाढ़ संस्कार।

दृढ़सुषुप्ति गभीर निद्रावस्था।

दृश्य जो देखने में आ सके; दिखायी देने वाली वस्तु; स्थूल इन्द्रियों का विषय; जगत्; दर्शनीय; द्रष्टव्य।

दृश्यप्रपंच दृश्यमान जगत्; दृग्गोचर संसार।

दृष्ट देखा हुआ; जाना हुआ; प्रत्यक्ष।

दृष्टांत उदाहरण; मिसाल; किसी विषय को स्पष्ट रूप से बतलाने या सिद्ध करने के लिए किसी जाने हुए अन्य विषय का उल्लेख; न्याय शास्त्र के सोलह पदार्थों में से एक।

दृष्टिसृष्टिवाद यह सिद्धांत कि सारे पदार्थ साक्षी-भास्य हैं अर्थात् जब पदार्थ की प्रतीति होती है उसी समय में पदार्थ है अन्यकाल में नहीं; दृष्टिरेव सृष्टि मानने का सिद्धांत; यह विचार कि विचार या मानसिक क्रिया द्वारा ही देश, काल, निमित्त आदि का आविर्भाव होता है अतः यह सब मनःप्रसूत हैं।

देवता—स्वर्ग में रहने वाले अमर प्राणी जो मनुष्यों की पूजा ग्रहण कर उन्हें मनोवांछित फल प्रदान करते हैं; भगवान्; परम देव।

देवयज्ञ—गृहस्थों को प्रतिदिन अपरिहार्य रूप से करने वाले पंच महायज्ञों में से एक; देवताओं के निमित्त यज्ञ।

देवयान—देवताओं का मार्ग; शरीर से अलग होने पर जीवात्मा के जाने के दो मार्गों में से वह जिससे जीवात्मा ब्रह्मलोक को जाता है; अर्चिरादि मार्ग; उत्तरायण।

देवलोक—स्वर्ग; ऊर्ध्व सप्तलोकों में से एक।

देश—स्थान; एक भूभाग; पृथ्वी का खंड; शरीर का अंग।

देशकाल—स्थान तथा समय।

देशकाल संबंध—स्थान तथा समय विशेष से संबंध रखने वाला।

देशातीत—देश परिच्छेद से शून्य।

देह—शरीर; तन; बदन।

देहविद्या—शरीरशास्त्र; शरीरविज्ञान।

देहशुद्धि—शरीर की शुद्धि; शरीर का शुद्धीकरण।

देहात्मबुद्धि—शरीर को ही आत्मा समझने वाली बुद्धि; शरीर में आत्मदृष्टि होना; भौतिक बुद्धि।

देहाध्यास—देह-धर्म को ही आत्मा समझने का भ्रम।

देहाभिमान शरीर का अहंकार।

देही देह को धारण करने वाला; जीवात्मा।

दैत्य दिति की सन्तान जो आसुरी गुण प्रधान होते हैं; असुर; राक्षस।

दैव मनुष्य को उनके शुभाशुभ कर्मों के अनुसार फल देने वाला विधाता; भाग्य; प्रारब्ध।

दैववाणी आकाशवाणी; अमानवी वाक्; हृदय की वाणी।

दैवी दिव्य; सात्त्विक; देवता संबंधी।

दैवीसंपत् दिव्य संपत्ति; दिव्य गुण।

दोष अवगुण; दूषण; खराबी; त्रुटि; कमी; भूल; विहित कर्म न करने का अदृष्ट फल; अप्रमा का साधारण कारण।

दोषदृष्टि दूसरों में दोष देखने की दृष्टि।

दौर्मनस्य उदासी; दुर्जनता; मन का खोटापन; निराशा; इच्छापूर्ति न होने पर मन की क्षुब्धता।

द्रवता द्रवत्व; पिघलने का भाव; बहने का धर्म; तरलता।

द्रव्य पदार्थ; वस्तु; वह मूल पदार्थ जिसमें और पदार्थ न मिला हो; वैशेषिक के नौ द्रव्य; सांख्य में द्रव्यों की संख्या पच्चीस मानी गयी है।

द्रव्यग्रहण द्रव्य का स्वायत्तीकरण; द्रव्य अंगीकार करना।

द्रव्याद्वैत—द्रव्य की मौलिक एकता।

द्रष्टा—देखने वाला; दर्शक; पुरुष; साक्षी; चेत आत्मा; चितिशक्ति; दृक्शक्ति।

द्रोह—द्वैष; वैर; दूसरे का अहित चिंतन।

द्वंद्व—मिथुन; युग्म; युगल; जोड़ा; कलह दो पारस्परिक विरुद्ध वस्तुओं का जोड़ा, जैसे सु और दुःख।

द्वंद्वता—द्वयता; द्वैतता।

द्वंद्वातीत—सुख, दुःख आदि द्वंद्वों से परे।

द्वयणुक—परमाणुद्वय; परमाणु समवेत द्रव्य; वह द्रव्य जो दो परमाणुओं के संयोग से उत्पन्न होता है।

द्वयम्—दो; युग्म।

द्वादशांत—बारहवां केन्द्र; चक्र जो शिर में स्थित है।

द्वारकारण—मध्यवर्ती कारण; ब्रह्म अपरिणामी होने से इस जड़ प्रपंच का एकमात्र उपादान कारण नहीं हो सकता अतः माया को इस प्रपंच का द्वारकारण होने की कल्पना की गयी है। जो वस्तुतः स्वयं कारण न हो, किंतु मुख्य कारण का निर्वाहक या सहायक हो, उसके गुण की प्रतीति कार्य में होती है। उदाहरणस्वरूप उपादान मृत्तिका के गुण श्लक्ष्णादि की उसके कार्य घट में प्रतीति होती है अतः श्लक्ष्णादि द्वारकारण हैं जो उपादान मृत्तिका तथा कार्य घट में अनुगत हैं।

द्विज—हिंदुओं में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण के पुरुष; ब्राह्मण; दो बार जन्मा हुआ; पक्षी।

द्विपरार्ध—ब्रह्मा की आयु के दो आधे भाग।

द्वेष—ईर्ष्या; द्रोह; चिढ़; घृणा; वैर; विरोध; योग में पांच क्लेशों में से एक; वैशेषिक में चौबीस गुणों में से एक।

द्वैतभाव—दो का भाव; भेदभाव; द्वयता।

द्वैतवाद—श्री मध्वाचार्य द्वारा प्रतिष्ठापित एक सिद्धांत जिसमें जीव और ईश्वर अनादि और अलग-अलग माने जाते हैं।

द्वैताद्वैतविवर्जित—द्वैत और अद्वैत दोनों से परे; द्वैत और अद्वैत से रहित; भेदाभेद से अलग।

ध

धन—संपत्ति; दौलत।

धनधान्यबल—धन और अन्न की ताकत।

धनुरासन—हठयोग का एक आसन।

धर्म—शास्त्रविहित आचार; प्रकृति; स्वभाव; चार पुरुषार्थों में से एक; चौबीस गुणों में से एक।

धर्मदास—धर्म का सेवक; धर्म के विचार से दास।

धर्मपरिषत्—धार्मिकों की सभा।

धर्ममेघसमाधि—योग में एक समाधि जिसमें वैराग्य के अभ्यास से चित्त सब वृत्तियों से शून्य हो जाता है; परम परसंख्यान।

धर्मी—जिसमें कोई धर्म या गुण हो; गुण या धर्म का आधार; धार्मिक; धर्मवान्; पुण्यशील।

धातु—खनिज पदार्थ; वीर्य; रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र ये सात धातु हैं।

धारणा—मन की एकाग्रता; योग के आठ अंगों में से एक।

धारणायोग—ध्यान और समाधि के पूर्व योग की अवस्था।

धारणाशक्ति – वह शक्ति जिससे कोई बात मन में धारण की जाती है।

धारा अखंड प्रवाह; बहाव।

धीर दृढ़; धैर्यान्वित; गंभीर; साहसी; धैर्यवान्।

धीवासना चित्त जब सूक्ष्म रूप धारण कर कर्म के सारे संस्कारों को अपने में बीज रूप से धारण करता है उस समय उसमें विद्यमान वासना को धीवासना कहते हैं।

धूममार्ग धुएँ का मार्ग; जीव का ऊपरी लोकों की ओर प्रयाण करने का मार्ग; पितृयाण।

धृति धैर्य; मन की दृढ़ता; धारणा।

धैर्य चित्त की स्थिरता; धीरता।

धौति हठयोग की छः क्रियाओं में से वह जिससे आँतें शुद्ध की जाती हैं।

ध्यान चित्त की एकाग्रता; योग का सातवाँ अंग; प्रत्यय एकतानता; विजातीय प्रत्यय से रहित ध्येय प्रत्यय का अविच्छिन्न प्रवाह।

ध्यानगम्य जो ध्यान से मालूम किया जा सके।

ध्यानिक ध्यान संबंधी, जिसकी प्राप्ति ध्यान द्वारा हो।

ध्येय जिसका ध्यान किया जाय; ध्यान करने योग्य; ध्यान का विषय; उद्देश्य।

ध्येयत्याग—ध्यान के समय ध्येय वस्तु का त्याग; निर्विकल्प समाधि।

ध्येयरूप—ध्यान में जिस रूप का आलंबन लिया जाय।

ध्वंसाभाव—(प्रध्वंसाभाव) किसी वस्तु के नाश होने के अनंतर होने वाला उसका अभाव ध्वंसाभाव है।

ध्वनि—शब्द; आवाज; स्पंदित प्राण की अति सूक्ष्मावस्था; नाद।

ध्वन्यात्मकशब्द—ध्वनिस्वरूप या ध्वनिमय शब्द; शब्द के दो भेदों में से एक, दूसरा प्रकार वर्णात्मक है।

नादबिंदुकलातीत—नाद, बिंदु और कला से परे; तांत्रिकों का परब्रह्म ।

नादानुसंधान—अनाहत ध्वनि की खोज ।

नानात्व—अनेकता; विभिन्नता; विविधता; भेद; द्वैतता ।

नानाभाव—अनेकता का भाव; विविधता का भाव ।

नाभि—ढोढ़ी; उदरावर्त ।

नाभिचक्र—मणिपूर चक्र; हठयोग के अनुसार नाभि स्थित तीसरा चक्र ।

नाम—वह शब्द जिससे किसी वस्तु, प्राणी या समूह का बोध हो; संज्ञा; अभिधान; नामधेय; वाचक; अभिधायक; बोधक ।

नामरूप—नाम और आकार; संसार का स्वरूप; सबके आधार स्वरूप अगोचर वस्तुतत्त्व के परिवर्तनशील नाना रूप या आकार जो इंद्रियों को जान पड़ता है और उनके भिन्न-भिन्न नाम जो भेदज्ञान के अनुसार रखे जाते हैं ।

नामरूप-जगत्—नामरूपमय संसार; वेदांतमतानुसार—इस संसार में एक ही अगोचर नित्य तत्त्व है। जो नाना प्रकार के भेद दिखायी पड़ते हैं वे वास्तविक नहीं हैं। वह केवल रूप-आकारों के कारण हैं, जो इंद्रिय तथा मन के संस्कार मात्र हैं ।

नामरूप-व्याकरण - नाम और रूप का विकास या प्रसार।

नामस्मरण भगवान् के नाम का उच्चारण व स्मरण।

नारायण जिनमें सब मनुष्य रहते हैं; जो क्षीर सागर में सोते हैं; विष्णु भगवान् का एक नाम।

नासिका - नाक; घ्राणेंद्रिय।

नासिकाग्र - नाक की नोंक; नाक का अगला भाग।

नासिकाग्रदृष्टि - नाक के सिरे पर एकटक देखना।

निंदा किसी की बुराई या दोष बतलाना; अपकीर्ति; अपवाद।

निःश्रेयस् मोक्ष; परम कल्याण; शुभ।

निःश्वास नाक से श्वास बाहर निकालना।

निःसंकल्प इच्छारहित।

निःस्पृह जिसे कोई आकांक्षा न हो; निर्लोभ; इच्छारहित; निर्वासनिक।

निःस्पृहा आकांक्षा राहित्य; निष्कामता।

निगमन परिणाम; उपसंहार; न्याय में अनुमान के पाँच अवयवों में से एक; सिद्ध की हुई बात के संबंध में अंतिम कथन।

निग्रहस्थान दमन करने और दंड देने का स्थान; हार की जगह; पराजय का चिह्न; न्यायदर्शन में सोलह पदार्थों में से एक।

निजबोधरूप—आत्मबोध की अवस्था; सच्चिदानंद ब्रह्म; सच्चित् रूप।

नित्य—शाश्वत; सर्वदा; अविनाशी; सनातन; काल-परिच्छेद रहित; प्रतिदिन।

नित्यकर्म—प्रतिदिन आवश्यक रूप से किये जाने वाले कर्म जैसे संध्यावंदन आदि; वे कर्म जिनके न करने पर प्रत्यवाय दोष होता है।

नित्यता—नित्यत्व; नित्य होने का भाव; अनश्वरता।

नित्यतृप्ति—शाश्वत संतुष्टि।

नित्यप्रलय—चार प्रकार के प्रलयों में से एक प्रलय विशेष; नित्य होने वाला प्रलय; सुषुप्ति की अवस्था जब किसी विषय का ज्ञान नहीं रहता।

नित्यबुद्धि—अविनश्वरता का विचार; संसार को शाश्वत मानने वाली मति।

नित्यमुक्त—सदा स्वतंत्र; कभी भी बंधन में न आने वाला; मोह आदि अज्ञानकल्पित बंधनों से सदा रहित।

नित्ययुक्त—सदा-सर्वदा संयुक्त।

नित्यशुद्ध—सदा पवित्र रहने वाला; तीनों कालों में अविद्या आदि मल से मुक्त।

नित्यसर्ग—प्रतिदिन होने वाली सृष्टि; प्रातःकाल जीव का जागरण।

नित्यसिद्ध—सदा पूर्ण।

नित्यसुख - शाश्वत आनंद ।

नित्यानित्यवस्तुविवेक—सत् और असत् वस्तु का विचार; यह विचार कि ब्रह्म नित्य है और उससे भिन्न सभी वस्तु अनित्य हैं ।

निदिध्यासन - बार-बार ध्यान में लाना; गंभीर ध्यान; वेदांत साधना का तृतीय सोपान; श्रवण और मनन से प्राप्त ज्ञान का फिर-फिर स्मरण; पुनः पुनः चिंतन; एकाकार वृत्ति प्रवाह; एकतानता; विजातीय वृत्तियों का तिरस्कार कर सजातीय वृत्तियों का प्रवाह करना ।

निद्रा नींद; सुषुप्ति; सुप्ति; योग में अभाव की प्रतीति का अवलंबन करने वाली एक वृत्ति; योग माया का एक नाम ।

नियमविधि—शास्त्रीय विधि-विधान; पक्ष में प्राप्त अ के अप्राप्त अंश को पूर्ण करने वाली विधि; ना साधनों से साध्य क्रिया में एक साधन की प्राप्ति होने पर अप्राप्त अपर साधन की प्रापक विधि।

नियामक—विधान करने वाला; ईश्वर; नियंता नियमन करने वाला।

निरंजन—दोष रहित; माया से निर्लिप्त; निर्विकार; शुद्ध।

निरंजनोऽहम्—मैं शुद्ध हूँ।

निरतिशयघनीभूतशक्ति—असीम घनीभूत क्षमता या सामर्थ्य।

निरतिशयानंद—परम आनंद; सर्वोपरि आनंद।

निरभिमानता—अभिमानशून्यता; अहंकारहीनता।

निरभिमानी—अभिमानशून्य; अहंकार रहित; विनम्र।

निरवधिअतितराम्—निरंतर तथा अतिशय।

निरवयव—जिसमें अंग-उपांग न हों; निराकार; निर्वपुसत्ता।

निराकार—जिसका कोई आकार या रूप न हो; आकारशून्य।

निराधार—जिसका कोई आधार न हो; जिसे सहारा न हो; जो प्रमाणों से पुष्ट न हो; अनाश्रित।

निरामय—रोग रहित; नीरोग; नीरुज; स्वस्थ।

निरालंब—निराधार; बिना सहारे का; निरावलंब; किसी अवलंबन या आधार के बिना।

निरावरण – निरावृत्त; अनाहत; अज्ञानकृत आवरण रहित।

निराशय निरुद्देश्य; निष्प्रयोजन।

निराश्रय बिना सहारे का; आश्रयरहित; शरणहीन; अशरण; किसी आश्रय के बिना।

निरुक्त वैदिक शब्दों की व्याख्या जो यास्क मुनि ने की है; छः वेदांगों में से एक।

निरुद्ध संरुद्ध; रुका हुआ; चित्त की पांच अवस्थाओं में से एक जिसमें वह अपनी कारणीभूत प्रकृति को प्राप्त होकर निश्चेष्ट हो जाता है।

निरुद्योग उद्योग रहित; निरुद्यम।

निरुपाधिक उपाधि रहित; माया रहित; जो सब प्रकार की उपाधियां तथा बंधनों से रहित हो।

निरूपण विचार; सोच विचार कर किया जाने वाला निर्णय; निदर्शन; वर्णन; कथन; आख्यान।

निरोध रोक; अवरोध; रुकावट; निग्रह; रोकना; नाश; मनोवृत्ति का संयम; चित्त की पांच भूमिकाओं में से एक।

निरोधपरिणाम चित्त-वृत्ति की वह अवस्था जो व्युत्थान और निरोध के मध्य होती है।

निरोधभूमि वह अवस्था जिसमें चित्त अपनी कारणीभूत प्रकृति को पाकर निरुद्ध हो जाता है।

निर्गुण—सत्त्व, रज और तम इन तीन गुणों से परे; निर्विकार; विशेषण रहित।

निर्गुण ब्रह्म—निर्गुण स्वरूप ब्रह्म; ब्रह्म का वह रूप जो सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों से परे हो; माया रहित ब्रह्म; ब्रह्म का निर्विशेष भाव।

निर्णय—निश्चय; अवधारण; मत स्थिर करना; फैसला; निबटारा; न्यायदर्शन के सोलह पदार्थों में से एक।

निर्द्वंद्व—राग, द्वेषादि द्वंद्वों से परे।

निर्बीज—बीज रहित; संस्कार रहित; निरालंब।

निर्बीज समाधि—वह समाधि जिसमें चित्त का निरोध करते-करते उसके अवलंबन या बीज का भी अभाव हो जाता है; कैवल्य अवस्था; असंप्रज्ञात समाधि।

निर्भय—निडर; भय रहित।

निर्भरता—पूर्णता; अतिशयता।

निर्मम—जिसे ममता या मोह न हो।

निर्मल—मल रहित; शुद्ध; पवित्र; निष्पाप।

निर्माण—रचना; बनावट।

निर्माणकाय—योगशक्ति से निर्मित शरीर।

निर्माणचित्त—योगशक्ति से निर्मित चित्त।

निर्मोह—मोह रहित; ममता रहित; निर्मम।

निर्लिप्त—जो किसी विषय में आसक्त न हो; अलेप; लेप रहित; निरासक्त।

निर्लिप्तत्व— निर्लिप्त होने का भाव; लेपशून्यता।

निर्लीन—विलग; पृथक्।

निर्वाण—मोक्ष; मुक्ति; शून्य।

निर्विकल्प— जिसमें विकल्प, परिवर्तन तथा भेद न हो; संकल्प-विकल्प रहित; अभेद; संशय रहित।

निर्विकल्प समाधि—वह समाधि जिसमें ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय का भेद नहीं रहता है; असंप्रज्ञात समाधि।

निर्विकार—विकार रहित; जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न हो।

निर्विचार—बिना विचार का; विचार रहित।

निर्विचार समाधि—वह समाधि जो किसी सूक्ष्म ध्येय में तन्मय होने से प्राप्त होती है और जिसमें उस ध्येय के नाम और गुण आदि का कोई ज्ञान नहीं रह जाता, केवल ध्येय पदार्थ का अनुभव होता है।

निर्वितर्क समाधि— वितर्कशून्य समाधि; स्थूल पदार्थों में शब्द (नाम), अर्थ (रूप) और ज्ञान के विकल्पों से रहित स्वरूप से शून्य जैसी केवल अर्थमात्र से भासने वाली चित्तवृत्ति।

निर्विशेष—वह जो किसी में भेद-भाव न करे; परमात्मा; परब्रह्म; बिना उपाधियों के; विशेषण रहित; विश्वातिग।

निर्विशेष चिन्मात्र—केवल शुद्ध चैतन्य।

निर्विशेषत्व—अविलक्षणता; बिना किसी विशेषता।

निर्विषय—विषय हीन; जिसको विषय की वासना न हो।

निर्वेद्य—अज्ञेय; बोधागम्य।

निर्वृत्ति—परित्याग; सांसारिक धंधे से अलग होना; उपरम; उपरति; विरति; प्रवृत्ति का उलटा।

निवृत्ति मार्ग—संन्यास का मार्ग; परब्रह्म की ओर पुनरावर्तन का पथ।

निवृत्ति रूप—त्याग रूप; आत्मा; ब्रह्म।

निश्चय—विश्वास; दृढ़ संकल्प; निःसंशय ज्ञान; संशय रहित या संशय विरोधी ज्ञान।

निश्चय वृत्ति—ऐसी धारणा जिसमें कोई संदेह न हो; बुद्धि नामक अंतःकरण का विषय।

निश्चयात्मक—जो पूर्णतया निश्चित् हो; असंदिग्ध; पक्का।

निषिद्ध-कर्म—वह कर्म जिसका निषेध किया गया हो; दूषित कर्म; वर्जित कर्म।

निषेध—मनाही; वर्जन; विधि विपरीत।

निष्कंपन—स्थिरता; कंपरहित।

निष्कल—कला रहित; पूर्ण; निरवयव; अंश अथवा विभाग रहित।

निष्काम—जिसमें किसी प्रकार की कामना न हो; निःस्पृह।

निष्काम कर्म—कर्म जो बिना किसी कामना या इच्छा से किया जाय; फलाशा रहित कर्म।

निष्काम-भक्ति फलाशा अथवा कामना रहित भक्ति।

निष्काम भाव – निष्कामता ; फलेच्छा रहित ।

निष्क्रिय – क्रियाओं से रहित ; निश्चेष्ट ; गतिहीन ।

निष्क्रियरूप – सभी प्रकार की क्रियाओं से शून्य अवस्था ; निश्चल रूप ; ब्राह्मी अवस्था ।

निष्ठा दृढ़ता ; विश्वास ; श्रद्धा ; स्थिति ; चित्त का जमना ; किसी बड़े के प्रति पूज्य भाव ।

नीराजन – दीपदान; आरती ; किसी देवता की आरती उतारना ।

नीवारशूक नये धान की बाल की नोंक।

नृत्य नाच ; नर्तन ; लास ; भगवान् शिव के नृत्य का नाम तांडव है ।

नृयज्ञ अतिथि-यज्ञ ; पाँच महायज्ञों में से एक जिसका करना गृहस्थ के लिए कर्तव्य है ।

नेति हठयोग की षट्क्रियाओं में से एक क्रिया जिसमें नासारंध्र में सूक्ष्म सूत्र प्रवेश कर नासिका को साफ किया जाता है ।

नेति-नेति यह नहीं; ऐसा नहीं; जिसका पार नहीं ।

नैमित्तिक कभी-कभी होने वाला; निमित्तजन्य ।

नैमित्तिक कर्म वह कर्म जो निमित्त या कारण उपस्थित होने से किया जाय; वह कर्म जिसके न करने से पाप हो और करने से पाप-पुण्य फल न हो ।

नैमित्तिक प्रलय—चार प्रकार के प्रलयों में से एक; वह प्रलय जो हिरण्यगर्भ संपूर्ण त्रिलोकी को अपने में लय करके शयन करते हैं।

नैयायिक—न्यायशास्त्र का मानने वाला; न्यायवेत्ता।

नैवेद्य—भोजपदार्थ जो किसी देवता को अर्पण किया जाय; भोग।

नैष्कर्म्य—प्रकृति की अकर्मण्यता; क्रियाहीनता।

नैष्ठिक ब्रह्मचारी—वह ब्रह्मचारी जिसने आजन्म के लिए ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हो।

नौलि—हठयोग की एक क्रिया जिसमें पेट को साफ करने के लिए पेट के दोनों नलों को निकाल कर पहले एक ओर और फिर दूसरी ओर घुमाया जाता है।

न्यग्रोध—वटवृक्ष; शमी वृक्ष; बरगद का पेड़।

न्याय—छः दर्शनों में से एक जिसके प्रवर्तक गौतम ऋषि थे; तर्क; धर्म; दृष्टांत; उचित निर्णय; जिसमें प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन ये पांच अवयव हों; प्रमाण द्वारा किसी वस्तु का निर्णय करना।

न्यास—त्याग; स्थापन करना; संन्यास; निक्षेप; विन्यास; अर्पण।

प

पंच पांच।

पंचकोश आत्मा को आच्छादित करने वाले अज्ञान के पांच आवरण अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनंदमय।

पंचाक्षर शिवजी का मंत्र जिसमें पांच अक्षर हैं--"ॐ नमः शिवाय"।

पंचाग्निविद्या पांच अग्नियों का ज्ञान; छांदोग्योपनिषद् के अनुसार सूर्य, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुष और योषित् नामक पांच अग्नि हैं।

पंचीकरण वेदांत में पंचमहाभूतों का विशेष रूप से सम्मिलन जिससे स्थूल सृष्टि का उद्भव हुआ; जो पांच न हों उसे पंचात्मक करना।

पंचीकृत भूत जिसका पंचीकरण हुआ हो।

पंडित विद्वान्; शास्त्रज्ञ; ज्ञानी; प्राज्ञ।

पतिव्रता-धर्म पतिव्रता (साध्वी) स्त्रियों का धर्म; पातिव्रत्य, सुचरित्रा स्त्रियों का कर्तव्य।

पदार्थ वस्तु; वैशेषिक के अनुसार पदार्थ सात हैं—द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव।

पदार्थभावना सद्वस्तु का ज्ञान; ज्ञान की अवस्था जब ज्ञानी पदार्थों के बाह्य रूप को देख कर उनमें निहित सार तत्त्व को ही देखता है सप्तज्ञान भूमिकाओं में से छठी भूमिका; ब्रह्मविद्वरीयान् की अवस्था।

पद्म कमल; पुष्प विशेष; नलिन; अरविंद; पंकज चक्र; अठारह पुराणों में से एक।

पद्मासन योग साधन का एक आसन।

पयोव्रत वह तपस्या जिसमे केवल दूध पर निर्वाह किया जाय।

पर परम; सबसे ऊपर; ब्रह्म; दूसरा; अन्य; शत्रु।

परकाय प्रवेश अपनी आत्मा को दूसरे के शरीर में प्रवेश करने की यौगिक क्रिया।

परतंत्र पराश्रित; पराधीन; परवश।

परतंत्र सत्ताभाव इतर सत्ताधीन सत्ता का भाव।

परधर्म दूसरे का कर्तव्य; दूसरी जाति का धर्म।

परम उत्कृष्ट; सर्वश्रेष्ठ; सर्वोच्च; प्रधान; निरतिशय।

परम कारण चरम कारण; सर्वोपरि कारण।

परम ज्योतिः—सर्वोत्कृष्ट प्रकाश; ब्रह्म।

परमधाम—वैकुंठ; ब्रह्म; मोक्ष।

परमपद सर्वोत्तम पद; सर्वोत्तम गति; मोक्ष; स्वर्ग।

परमब्रह्म परब्रह्म; निर्गुण और निरुपाधिक ब्रह्म; निर्विशेष ब्रह्म; अशब्द ब्रह्म; विश्वातिग ब्रह्म।

परमवश्यता मन और इंद्रियों का उत्कृष्ट वशीकार।

परमशांति सर्वश्रेष्ठ शांति; निरतिशय शांति; अवर-शांति का उलटा।

परमहंस संन्यासियों के चार भेदों में एक जो सबसे श्रेष्ठ माना जाता है।

परमाणु अत्यंत सूक्ष्म अणु; किसी तत्त्व का वह अतीव सूक्ष्म भाग जिसका और विभाग न हो सकता हो, वह जिससे छोटा दूसरा पदार्थ न हो।

परमात्मा ईश्वर; परमेश्वर; परब्रह्म; नित्य ज्ञानादि वाला।

परमानंद बहुत बड़ा सुख; ब्रह्मानंद; ब्रह्म के अनुभव का सुख; निरतिशय सुख।

परमानंद प्राप्ति ब्रह्मानंद का मिलना।

परमार्थदृष्टि पारमार्थिक विचार से; ज्ञानदृष्टि;

परसंवित् सर्वोच्च चेतना; सर्वोत्कृष्ट ज्ञान; महच्चेतन

परस्पराध्यास- अन्योन्याध्यास यथा शरीर में आत्म का और आत्मा में शरीर का अध्यास।

परागति- उच्चतम स्थिति; परमात्मस्वरूप में स्थिति; मोक्ष।

परात्पर जिसके परे कोई दूसरा न हो; सर्वश्रेष्ठ; परे-से-परे।

पराप्रकृति—पराशक्ति जिससे एक परब्रह्म ही नाना पदार्थों के रूप में प्रतिभासित हो रहा है।

पराभक्ति- सर्वश्रेष्ठ भक्ति, जिसमें उपासक अपने उपास्य का ही सर्वत्र दर्शन करता है और उसे औपचारिक पूजा की आवश्यकता नहीं रहती, यह ज्ञान प्रदायक है; उच्चकोटि की भक्ति; अनन्य एकांत भाव से भक्ति; अहैतुकी और अव्यवहित भक्ति।

परायण शरण; स्थान; आश्रय।

पराविद्या- परमार्थ का ज्ञान कराने वाली विद्या; ब्रह्मविद्या; वेदांतजनित ब्रह्माकार वृत्तिरूपा विद्या।

परिग्रह लेना; ग्रहण करना; अंगीकार करना; आच्छादन।

परिच्छिन्न- सीमित; परिमित; विभक्त; अल्पदेशी।

परिणाम— बदलना; रूपांतर-प्राप्ति; विकृति; नतीजा; फल; एक धर्म को छोड़कर दूसरा धर्म धारण करना; एक स्थिति को छोड़कर दूसरी स्थिति की

पवन वायु।

पशुपति शिव; महादेव; पशु (जीव) का पति (स्वामी)।

पश्यंती नाद की द्वितीय सूक्ष्म अवस्था जो नाभि से उठकर हृदय में रहता है।

पश्वाचार पाशविक व्यवहार; देवी का पूजन जो कामना और संकल्प सहित तंत्रोक्त विधान से किया जाता है।

पांडित्य—विद्वता; पंडिताई।

पाणि—हाथ; कर; हस्त; एक कर्मेंद्रिय।

पाद—चरण; पाँव; चौथाई; चतुर्थांश; प्रकरण; एक कर्मेंद्रिय।

पाद्य—पैर धोने का जल; षोड़शोपचार सहित पूजा का एक अंग; पादोदक; पाद प्रक्षालनार्थ जल।

पाप पातक; अधर्म; दुरित; दुष्कृत; बुरा कर्म; गुनाह।

पापपुरुष—दुष्ट मनुष्य; मनुष्य का वह व्यक्तित्व जो पापी हो; पापमयांग नर।

पायस खीर; परमान्न।

पायु—गुदा; मलद्वार; पाँच कर्मेंद्रियों में से एक।

पारमार्थिक—परमार्थसंबंधी; परमार्थयुक्त; व्यावहारिक का उलटा।

पारमार्थिक सत्ता—नामरूप से परे शुद्ध सत्त्व; जिस सत्ता का तीनों काल में बाध न हो; परब्रह्म; परम सत्य।

पीतांबर—पीले रंग का रेशमी वस्त्र; जिसके कपड़े पीले हों वह; पीतवस्त्रयुक्त; श्रीकृष्ण; विष्णु।

पुण्य—धर्मकार्य; शुभ फलदायक कर्म; सुकृत; पावन।

पुण्यमति—जिसकी प्रवृत्ति पुण्य की ओर हो; धार्मिक; पुण्यात्मा।

पुण्यापुण्य—पुण्य और पाप; सुकृत और दुष्कृत।

पुत्रेष्टि—पुत्र प्राप्ति की कामना से किया जाने वाला यज्ञ।

पुरश्चरण—किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए नियमानुसार मंत्र का जाप व स्तोत्र-पाठ।

पुरीतत् नाड़ी—हृदय के पास की एक सूक्ष्म नाड़ी जिसमें सुषुप्ति काल में मन निवास करता है।

पुरुष—मनुष्य; नर; परमात्मा; आत्मा; जीव; पुंभाव; सांख्य में प्रकृति से भिन्न एक अपरिणामी, अकर्ता और असंग चेतन पदार्थ।

पुरुषार्थ—पुरुष का प्रयत्न; प्रयोजन; पराक्रम; साहस; धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

पुरुषोत्तम—विष्णु; नारायण; जगन्नाथ।

पुलक—रोमांच; रोंगटे खड़े होना; भक्ति के आठ लक्षण में से एक।

पुष्टि—पोषण; दृढ़ता; समर्थन; अनुग्रह।

पूजा—अर्चना; आराधना; पूजन।

पूरक प्राणायाम का वह अंग जिसमें नाक का एक छिद्र बंद करके दूसरे छिद्र द्वारा सांस ऊपर खींची जाती है।

पूर्ण भरा हुआ, पूरा; परिपूर्ण; ब्रह्म।

पूर्णयोगी सिद्ध योगी।

पूर्णोऽहम् मैं पूर्ण (ब्रह्म) हूँ।

पूर्त जनता के लाभार्थ तालाब आदि बनाने का काम।

पूर्वपक्ष किसी विषय के संबंध में उठाया हुआ प्रश्न जिसका समाधान करना पड़े; शास्त्रीय संशय की निवृत्ति हेतु प्रश्न रूप वाक्य; सिद्धांत विरुद्ध कोटि; दावा; उत्तर पक्ष का उलटा।

पूर्वमीमांसा जैमिनि का दर्शन-शास्त्र जिससे कर्मकांड संबंधी विषयों का निर्णय किया गया है; वेद का वह भाग जिसमें यज्ञादि कर्मकांड का निरूपण है।

प्रकार भेद, विधि; भाँति।

प्रकाश आलोक; ज्योति।

प्रकाशक प्रकाश देने वाला; वह जो प्रकट करे प्रकाशकर्ता।

प्रकाश्य प्रकट करने योग्य; जिस पर प्रकाश डाला जाय।

प्रकृति—मूल गुण; स्वभाव, स्वरूपावस्था; माया; मूलशक्ति; *सांख्य का प्रधान*; वह मूलशक्ति जिससे इस अनेक रूपात्मक जगत् का विकास हुआ; जिससे कोई जड़ तत्त्व उत्पन्न हो; जड़ तत्त्व; गुणों का साम्य परिणाम; चेतन तत्त्व का उलटा।

प्रकृतिलय—अस्मितानुगत संप्रज्ञात समाधि को प्राप्त योगी; वह योगी जिसने आनंदानुगत को सिद्ध कर लिया है और सातों प्रकृतियों का साक्षात् करते हुए अस्मितानुगत समाधि का अभ्यास कर रहा है।

प्रक्रियाग्रंथ—वह ग्रंथ जो किसी शास्त्र के बोध करने के किसी प्रकार (प्रक्रिया) को बतलाता है।

प्रजाकाम संतान की इच्छा रखने वाला।

प्रजापति—सृष्टिकर्ता; ब्रह्मा; मनु; पिता; राजा।

प्रज्ञा—बुद्धि; ज्ञान; अंतर्दृष्टि; चेतना।

प्रज्ञानघन चिद्घन; ब्रह्म।

प्रज्ञानात्मा—चैतन्य आत्मा।

प्रणव—ओंकार; ओ३म्।

प्रणवजप प्रणव या ओ३म् का जप।

प्रणवाधीन प्रणव पर निर्भर।

प्रणिधान अत्यंत भक्ति; अर्पण; मन की एकाग्रता; ध्यान।

प्रतिकूलता विपरीतता; विरोध; अननुकूलता।

प्रतिज्ञा प्रण; वचनदान; शपथ; दावा; न्याय में उस बात का कथन जिसे सिद्ध करना हो; अनुमान के अवयव का एक भेद।

प्रतिपक्ष प्रतिवादी; विरोधी; शत्रु।

प्रतिपक्षभावना विरोधी विचारों का चिंतन।

प्रतिबंधक रोकने वाला; बाधा डालने वाला; प्रतिरोधक; कार्य का विरोधी।

प्रतिबंधकाभाव बाधा को दूर करने वाली शक्ति; बाधा का अभाव।

प्रतिबिंबवाद वेदान्त का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार यह माना जाता है कि जीव वास्तव में ईश्वर का

प्रतियोगिनी शक्ति विरोधी शक्ति; प्रतिपक्षी शक्ति।

प्रतिष्ठा—गौरव; ख्याति; कीर्ति; यश; स्थापना; ठहराव; स्थिति; संस्कार विशेष।

प्रतिसंख्यानिरोध—वैनाशिक बौद्ध मतावलंबियों के मतानुसार बुद्धिपूर्वक भाव पदार्थ का नाश।

प्रतीक—पूजा या ध्यान के लिए परमात्मा का चिह्न; प्रतिमा; मूर्ति; आकृति।

प्रतीकोपासना ब्रह्म का प्रतीक बना कर या मान कर उसकी पूजा-उपासना करना; वह उपासना जिसमें ब्रह्म से भिन्न वस्तुओं में ब्रह्म-भावना की जाती है।

प्रतीक्षा—प्रत्याशा; इंतजार।

प्रत्यक्ष—आँखों के सामने वाला; जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा हो; प्रकट; परोक्ष का उलटा।

प्रत्यक्षत्व—प्रत्यक्ष होने का भाव; प्रत्यक्षता।

प्रत्यक्ष प्रमाण छः प्रकार के प्रमाणों में से वह जिसका आधार देखी या जानी हुई बातों पर हो; प्रत्यक्ष प्रमा का कारण।

प्रत्यक्ष योग्य—जो किसी इंद्रिय से जाना जाय; जो प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सके; इंद्रियगम्य।

प्रत्यगात्मा—गीतोक्त अक्षर पुरुष; जीव; कूटस्थ; व्यापक ब्रह्म; प्रत्यक् चेतना; अंतरात्मा; निर्विकार व्यक्तिगत आत्मा।

प्रत्यभिज्ञा स्मृति की सहायता से होने वाला ज्ञान; वह ज्ञान जो किसी देखी हुई वस्तु को अथवा उसके सदृश किसी अन्य वस्तु को फिर से देखने पर हो; वह अभेद ज्ञान जिसके अनुसार जीव और आत्मा दोनों एक माने जाते हैं; पूर्व ज्ञान के संस्कार और इंद्रिय के संबंध से होने वाला ज्ञान; माहेश्वर मत के अवांतर भेदों में से एक।

प्रत्यभिज्ञाज्ञान देखो प्रत्यभिज्ञा।

प्रत्यय कारण; विचार; भावना; ज्ञान; समझ; वृत्ति; विश्वास; प्रमाण, प्रतीति; प्रकट होना।

प्रत्यवाय नित्य कर्म न करने से लगने वाला पाप; उलटफेर।

प्रत्याहार इंद्रियनिग्रह; योग के आठ अंगों में से एक जिसमें इंद्रियों को विषयों से हटा कर मन एकाग्र किया जाता है।

प्रदक्षिण किसी तीर्थ स्थान, मंदिर अथवा पूज्य व्यक्ति को दाहिनी ओर करके भक्तिपूर्वक उसके चारों ओर घूमना; परिक्रमा।

प्रदेशमात्र बालिश्त भर, अँगूठे से लेकर तर्जनी तक

प्रपंच विषय—सांसारिक पदार्थ; विषय पदार्थों का विस्तार।

प्रपत्ति—अनन्य भक्ति; शरणागत होने की भावना; शरणागति।

प्रबुद्ध—जगा हुआ; ज्ञानी; सचेत; पंडित।

प्रभु—ईश्वर; स्वामी; नाथ।

प्रमाण—जिसके द्वारा किसी वस्तु को जानते हैं; यथार्थ ज्ञान का साधन; प्रमा का करण; सत्यता; सबूत; योग में मन की पाँच वृत्तियों में से एक।

प्रमाणगतसंदेह प्रमाण में संदेह; वेदांत वाक्य अद्वितीय ब्रह्म के प्रतिपादक हैं अथवा अन्य अर्थ के यह प्रमाणगतसंदेह है।

प्रमाण चैतन्य—अंत:करण वृत्ति से अवच्छिन्न चेतन।

प्रमाता—नापने वाला; द्रष्टा; ज्ञाता; जीव; वस्तु को जानने वाला; बुद्धि प्रतिबिंबित चेतन; प्रमा का आश्रय।

प्रमातृचैतन्य—अंत:करण विशिष्ट चेतन।

प्रमाद—असावधानी; लापरवाही; भूल; भ्रम; (योग में) समाधि के साधनों की भावना न रहना।

प्रमेय—जिस वस्तु को हम जानना चाहते हैं; जो प्रमाणजन्य ज्ञान का विषय हो; जो सिद्ध करने का हो; वह जिसका ज्ञान प्रमाण द्वारा कराया जाय; जो नापा जा सके; न्याय के सोलह पदार्थों में से एक।

प्रमेयगतसंदेह प्रमेय में संदेह ; जीव ब्रह्म का अभेद सत्य है अथवा भेद सत्य है यह प्रमेय का संदेह है।

प्रमोद हर्ष ; आनंद ; सुख ; विषयोपभोग से प्राप्त हर्ष ; कारण शरीर का एक गुण।

प्रयत्न अध्यवसाय ; कोशिश ; उद्योग ; उत्साह ; स्वाभाविक शरीर की चेष्टा ; (न्याय में) जीवों का व्यापार ; वैशेषिक के चौबीस गुणों में से एक।

प्रयोजन हेतु ; उद्देश्य ; आशय ; अर्थ ; कार्य ; जिस लक्ष्य को रखकर किसी विषय में प्रवृत्त हो।

प्रलय लय को प्राप्त होना ; कल्पान्त में त्रिलोकी का विनाश ; संसार का तिरोभाव ; प्रलय चार प्रकार का है नित्य, नैमित्तिक, प्राकृत तथा आत्यंतिक।

प्रवाह जल का बहाव ; प्रवृत्ति।

प्रवृत्तिमार्ग सांसारिक भोगों या विषयों को ग्रहण करने वाला जीवन ; कर्ममार्ग ; निवृत्तिमार्ग का

प्रश्वास— बाहर आती हुई श्वास ; शरीर स्थित वायु का नासिका द्वारा बाहर निकालना ।

प्रसाद भोजन जो पूजा के समय देवता को अर्पण कर उसके भक्त लोग खाते हैं ; देवता का भोग ; प्रसन्नता, अनुग्रह, निर्मलता, अंत:करण की एकाग्रता ।

प्रसिद्ध - विख्यात ; सुपरिचित ।

प्रस्थानत्रय वेदांत के मौलिक तीन ग्रंथों की समुच्चय परिभाषा ; आध्यात्मिक साहित्य के तीन प्रमाण ग्रंथ जिन पर संपूर्ण वेदांत दर्शन आधारित है- उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता ।

प्रहर— पहर; तीन घंटे का समय; दिन का आठवां भाग ।

प्राकाम्य— आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जिसको प्राप्त करने वाले को इच्छित वस्तुएं तुरंत मिल जाती हैं ।

प्राकृत प्रलय—चार प्रकार के प्रलयों में से एक; हिरण्यगर्भ की आयु समाप्त होने पर होने वाला प्रलय जब उसके आश्रित समस्त लोक और प्राणी प्रकृति में लय हो जाते हैं ।

प्रागभाव—किसी वस्तु की उत्पत्ति से पहले उसका अभाव प्रागभाव है; अपनी उत्पत्ति से पूर्व कार्य का अपने उपादान कारण में जो अभाव है वह ।

प्राज्ञ वेदांत मतानुसार कारण शरीर सहित जीवात्मा; सुषुप्ति अवस्था में जीव का नाम; बुद्धिमान।

प्राण श्वास; जीवन; शरीर की वह वायु जिससे वह जीवित कहलाता है। इसका स्थान हृदय है और क्षुधा, पिपासा का काम करता है। पंचप्राण—प्राण, अपान, व्यान, समान और उदान।

प्राणकेंद्र जीवनकेंद्र।

प्राणजय प्राणों पर विजय प्राप्त करना; श्वास-प्रश्वास पर आधिपत्य स्थापित करना।

प्राणतत्त्व —वह जड़तत्व जिससे जीवित शरीर में श्वास-प्रश्वास आदि समस्त क्रियाएं होती हैं।

प्राणनिरोध प्राणायाम की क्रिया।

प्राणप्रतिष्ठा कोई नयी देव-मूर्ति स्थापित करते समय मंत्रों द्वारा उसमें प्राणों की प्रतिष्ठा का आरोप करना।

प्राणमय पांच कोशों में से दूसरा जो पाँचों प्राणों और कर्मेंद्रिय से बना हुआ माना जाता है।

प्राणशक्ति सूक्ष्म जीवन-शक्ति।

प्राणायाम श्वास-प्रश्वास की वायुओं को नियंत्रित और नियमित करने की क्रिया; अष्टांग योग का चौथा अंग; प्राणायम।

प्रातिभासिक जो असली न हो; नकल; प्रातीतिक; जिसका बाध आत्मज्ञान से पूर्व हो जावे।

प्रातिभासिकसत्ता—जिसका अस्तित्व प्रतीति मात्र हो; जिस सत्ता का बाध प्रतिभास काल में न हो।

प्राप्ति—आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक; वह योग-सिद्धि जिससे मनोवांछित पदार्थ मिलता है; प्रापण।

प्राप्तिप्राप्य—प्राप्त करने योग्य वस्तु की उपलब्धि।

प्रायश्चित्त—वह कृत्य जिसके करने से पाप की निवृत्ति होती है; पाप दूर करने का साधन।

प्रायश्चित्त कर्म—प्रायश्चित्त के लिए किया जाने वाला कर्म; विहित कर्म के न करने से अथवा वर्जित कर्म करने से अंतःकरण पर पड़े हुए मलिन संस्कारों के धोने के लिए किया जाने वाला कर्म।

प्रायोपवेश- प्राणत्याग करने के लिए किया जाने वाला अनशन व्रत।

प्रारब्ध—भाग्य; संचित कर्म का वह भाग जिसका फल-भोग इस जन्म में आरंभ हो चुका हो; अदृष्ट।

प्रिय—प्यारा; मनोहर; आनंददायी।

प्रेम—प्रीति; प्यार; मोहब्बत; अनुराग; स्नेह; निरंतर प्रीति; हार्द।

प्रेमभाव—स्नेहयुक्त भाव।

प्रेरणा—उत्तेजना; दबाव; प्रवृत्त करना।

प्लुत—तीन मात्राओं वाला स्वर।

फ

फल वनस्पति का बीजकोश; परिणाम; कर्मभोग; निष्पत्ति; मीमांसा के अनुसार षड्लिंगों में से एक; ब्रह्मसूत्र का अंतिम परिच्छेद।

फलाहार फलों का आहार; वह आहार जो केवल फल से बना हो; केवल फल खाना; फलों का भोजन।

व

बंध—बंधन; गाँठ; हठयोग साधन में मुद्रा विशेप।

बंध-मोक्ष—बंधन और छुटकारा।

बद्ध—बँधा हुआ; बंधनयुक्त; संसार के बंधन में पड़ा हुआ।

बस्ति—हठयोग की षट् क्रियाओं में से एक जिसमें गुदेंद्रिय द्वारा जल खींच कर अँतड़ियों को साफ किया जाता है।

बहि:—बाहर; बाह्य।

बहि:प्रज्ञा—बहिर्मुखी चेतना यथा जाग्रतावस्था में; विश्वरूप; अंत:प्रज्ञा का उलटा।

बहिरंग लक्ष्य—किसी बाह्य पदार्थ को धारणा का विषय बनाना।

बहिर्धौति—मृत्तिका; जल आदि से शरीर के अंगों को शुद्ध और स्वच्छ रखना।

बहिर्मुख—बाह्य वस्तुओं की ओर प्रवृत्त; अंतर्मुख का उलटा।

बहिर्मुख वृत्ति—मन का बाह्य विषयों की ओर प्रवृत्ति।

बहिर्वृत्ति निग्रह—मन की बहिर्गामी वृत्तियों का निरोध।

बहिष्कृत बाहर किया हुआ; निष्कासित; बहिष्कृत अंतर्धौति; अंतर्धौति का एक भेद जिसमें कौए की चोंच के सदृश मुख बना कर (काकी मुद्रा) इतनी वायु पान की जाती है कि पेट भर जाय, फिर उस वायु को डेढ़ घंटे तक पेट में धारण कर तत्पश्चात् गुदा-मार्ग द्वारा बाहर निकाल देते हैं।

बहुत्व अधिकता; अनेकत्व।

बहुदक्षिणा अश्वमेध यज्ञ जिसमें पुरोहितों को बहुत द्रव्य भेंट किया जाता है।

बहुधा बहुत प्रकार से; बहुत भाँति; बहुत बार; प्रायः।

बहुवीर्य बहुत पराक्रम।

बहुस्यां मैं अनेक होऊँ।

बहूदक चार प्रकार के संन्यासियों में से एक; तीव्रतर वैराग्य वाला संन्यासी जो एक स्थान पर न रह कर यत्र-तत्र तीर्थाटन करते हुए आत्मचिंतन करता है।

बाधित रोका हुआ; प्रतिबंधित; बाधायुक्त; पीड़ित; जो तर्क से ठीक न हो; असंगत।

बिंदुजगत्—अज्ञान की सात भूमिकाओं में से जिसमें निर्मल चेतन में जीव आदि के नाम, तथा अर्थ की पात्रता बीज रूप में स्थित रहती

बिंब—जिसका प्रतिबिंब उतर रहा हो; ब्रह्म।

बिंबप्रतिबिंबवाद—वेदांत का यह सिद्धांत कि वास्तव में ब्रह्म का प्रतिबिंब है और जीव ब्रह्म प्रतिबिंब होने से जीव (प्रतिबिंब) ब्रह्म (बिंब) भिन्न नहीं है।

बीज—अन्न आदि का बीज; हेतु; कारण।

बीजाक्षर—तंत्र में किसी बीज मंत्र का पहला अक्षर

बीजात्मा—सूक्ष्मात्मा; सूत्रात्मा; अंतर्यामी।

बुद्ध—जो जगा हुआ हो; ज्ञानवान्; भगवान् दशावतारों में से एक।

बुद्धि—निश्चय करने की शक्ति; अंतःकरण की एक वृ जो निर्णय और निश्चय करती है; अक्ल; समझ

बुद्धि-तत्त्व—बुद्धि।

बुद्धि-व्यापार—बुद्धि का कार्य।

बुद्धि-शक्ति—मेधाशक्ति; बौद्धिक बल।

बुद्धिशुद्धि—बुद्धि की शुद्धता; बुद्धि की निर्मलत प्रज्ञामांद्य, कुतर्क, विपर्यय और दुराग्रह दोषों से मु बुद्धि।

बुभुक्षा—भूख; क्षुधा।

बृहत्—बहुत बड़ा; भारी; महान्।

ब्रह्मज्ञान—ब्रह्म का अपरोक्ष ज्ञान; पारमार्थिक सत्ता का बोध; ब्रह्मविषयक ज्ञान; अद्वैतावस्था।

ब्रह्म-तेजस्—ब्रह्म की दीप्ति; ब्रह्म की आभा; ब्रह्म का प्रकाश।

ब्रह्मद्वार—ब्रह्मलोक की ओर जाने का मार्ग; वह द्वार जिससे होकर कुंडलिनी शिव के पास जाती है; ब्रह्मरंध्र।

ब्रह्मनाड़ी—सुषुम्ना; हठयोग के अनुसार शरीर की तीन प्रमुख नाड़ियों में से वह जो ब्रह्मरंध्र तक जाती है।

ब्रह्मनिष्ठ—ब्रह्म के ध्यान में मग्न रहने वाला; ब्रह्मज्ञान संपन्न; ब्रह्मसाक्षात्कार प्राप्त।

ब्रह्मपरायण—ब्रह्म में प्रवृत्त।

ब्रह्मभाव, **ब्रह्मभावना**—अद्वैत भावना; अपने आप को तथा समस्त विश्व को ब्रह्मरूप मानना।

ब्रह्मभूत—जो ब्रह्म हो चुका हो; ब्रह्मत्व को प्राप्त।

ब्रह्ममुहूर्त—सूर्योदय से डेढ़ घंटे पहले का समय।

ब्रह्मयोग—योग की अवस्था जिसमें योगी स्वयं तथा समस्त विश्व को ब्रह्ममय देखता है।

ब्रह्मरंध्र—मस्तक के मध्य का वह गुप्त छिद्र जिसमें से होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है; ब्रह्मांड-द्वार; मूर्द्धा का छेद।

ब्रह्मलोक—वह लोक जहाँ चतुरानन ब्रह्मा रहते हैं; सत्यलोक।

ब्रह्मवाक्य—ईश्वरीय वाणी जैसे वेद, उपनिषद्।

ब्रह्मवादिन्—वह पुरुष जो चैतन्य मात्र की सत्ता स्वीकार करता है; वेदांती; ब्रह्मज्ञानी।

ब्रह्मविचार—ब्रह्म की भावना; ब्रह्म का चिंतन।

ब्रह्मवित्—ब्रह्म को जानने वाला; ज्ञान की चौथी भूमिका सत्त्वापत्ति को प्राप्त ज्ञानी; आत्मक्रीड।

ब्रह्मविद्या—वह विद्या जिसके द्वारा ब्रह्म को जान सके; आत्मतत्त्व का विवेचन करने वाला शास्त्र; ब्रह्मज्ञान।

ब्रह्मविद्वर—पाँचवी ज्ञानभूमिका असंसक्ति को प्राप्त ज्ञानी; आत्मरति।

ब्रह्मविद्वरिष्ठ—पूर्ण ज्ञानी; जीवन्मुक्त जो ज्ञान की सातवीं भूमिका तुरीय को प्राप्त हो; जो न स्वय और न किसी दूसरे से उत्थान को प्राप्त हो।

ब्रह्मविद्वरीय—वह ज्ञानी जो ज्ञान की छठी भूमिका "पदार्थ अभावना" में स्थित हो; वह जो स्वयं नहीं किंतु दूसरे से उत्थान को प्राप्त हो।

ब्रह्मशक्ति—ब्रह्म की शक्ति; माया; अविद्या।

ब्रह्मश्रोत्रिय—वेदवेदांग में पारगत।

ब्रह्मसंस्थ—ब्रह्म में तादात्म्य भाव से स्थित; ब्रह्म में ठहरा हुआ; ब्रह्म में संस्थित; संन्यासी; लौकिक तथा वैदिक सभी व्यापारों से रहित होकर केवल ब्रह्मचिंतन परायण व्यक्ति।

ब्रह्मसाक्षात्कार—ब्रह्म की अपरोक्षानुभूति।

ब्रह्मस्थिति ब्रह्म में स्थित; ब्राह्मी स्थिति।

ब्रह्मांड संपूर्ण विश्व जिसके भीतर अनंत लोक हैं; भुवनकोष।

ब्रह्मा—ब्रह्म के तीन रूपों में से सृष्टि की रचना करने वाला; विधाता; सृष्टिकर्ता; हिरण्यगर्भ।

ब्रह्माकारवृत्ति वेदांतिक ध्यान से ब्रह्म के आलंबन वाली वृत्ति का समान रूप से प्रवाहित होना और किसी अन्य वृत्ति का बीच में उदय न होना।

ब्रह्मानंद—परमानंद; ब्रह्म के ज्ञान से मिलने वाला आनंद।

ब्रह्मानुभव—ब्रह्म-साक्षात्कार; आत्मसाक्षात्कार।

ब्रह्मानुसंधान—ब्रह्म का चिंतन, मनन और खोज; ब्रह्मजिज्ञासा; ब्रह्मविचार; ब्रह्मसंबंधी उपदेश का श्रवण-मनन।

ब्रह्माभ्यास—ब्रह्म का ध्यान; निदिध्यासन; ब्रह्म-विचार; अद्वैतनिष्ठा की उत्तरोत्तर वृद्धि करना; शुद्ध स्वरूप का चिंतन करना, उसी का कथन करना और उसी को आपस में समझाना आदि।

ब्रह्मोपासना—परब्रह्म की उपासना।

ब्राह्मण—वेद के कर्मकांड का वह भाग जो मंत्र नहीं कहलाता; वेदमंत्रों का व्याख्या-ग्रंथ; हिंदुओं के चार वर्णों में से प्रथम वर्ण के मनुष्य; ज्ञानी।

भ

भंडार—कोठार; खाने-पीने की वस्तुएं रखने का स्थान; कोष।

भक्त—उपासक; भक्ति करने वाला; अनुयायी।

भक्ति—देव विषयक रति; श्रद्धा; पूजा; अनुराग; सेवा; नवधा भक्ति श्रवण, कीर्तन, अर्चन, वंदन, स्मरण, पादसेवन, सख्य, दास्य और आत्म-निवेदन।

भक्तिमार्ग—भक्ति का मार्ग; भक्ति का पथ; भक्ति का साधन; भक्तियोग।

भक्तियोगी—वह व्यक्ति जो भक्ति-मार्ग को अपना कर भगवान् को प्राप्त करने की साधना करता है।

भगवान्—ईश्वर; नारायण; हरि; परमात्मा; जिसमें ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान, एवं वैराग्य ये छः भग विद्यमान हों।

भजन—पूजा; सेवा; स्तुति; स्मरण; आश्रय लेना।

भय—डर; खौफ; त्रास; भीति; आतंक।

भर्ता—अधिपति; स्वामी; ईश्वर; पति; प्रतिपालक; धारण करने वाला।

भाग—हिस्सा; खंड, अंश।

भागत्यागलक्षण—वह लक्षण जिसमें पद या वाक्य के वाच्यार्थ के कुछ अंश का ग्रहण किया गया हो और कुछ अंश का त्याग अर्थात् जिसमें उपाधि को त्याग कर सत्यांश ग्रहण हो जैसे, यह वह देवदत्त है—यहाँ भाग-त्याग-लक्षण है, क्योंकि अतीत काल में और अन्य देश में स्थित वस्तु को "वह" कहते हैं। अतः अतीत काल सहित और अन्य देश स्थित वस्तु "वह" पद का वाच्यार्थ है और वर्तमान काल-सहित और समीप देश स्थित वस्तु को "यह" कहते हैं। अतः वर्तमान काल-सहित और समीप देश-स्थित वस्तु "यह" पद का वाच्यार्थ है। अतः सारे पद का वाच्यार्थ हुआ अतीत काल सहित और अन्य देश स्थित जो वस्तु वह वर्तमान काल और समीप देश स्थित है, किंतु यह संभव नहीं क्योंकि अतीत काल और वर्तमान काल में तथा अन्य देश और समीप देश में विरोध है अतः दोनों पदों से देश-काल के वाच्य भाग को त्याग कर "देवदत्त" मात्र का ग्रहण किया गया है। इसी भाँति "तत्त्वमसि" इस महावाक्य में "तत्" पद का वाच्य ईश्वर और "त्वम्" पद का वाच्य जीव दोनों को त्याग कर "असंग चेतन" "असि" पद ग्रहण किया जाता है; जहदजहल्लक्षण।

भागवत—भगवान् या विष्णु का भक्त; अठारह महा-पुराणों में से एक महापुराण विशेष।

भागवत धर्म वैष्णवों का पूजा, सेवा आदि क्रियाओं का विधान; सातत्व धर्म।

भाति कांति; शोभा।

भान आभास; प्रतीति; ज्ञान।

भाव - मानस विकार; सत्ता; ईश्वर या देवता के प्रति मन में होने वाली श्रद्धा; विचार; भावना; जीवात्मा; वस्तु; कल्पना; मनोदशा; चित्त; प्रेम; चेष्टा; स्वभाव; अभिप्राय; शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य तथा माधुर्य ये वैष्णवों के पाँच भाव हैं।

भावना - ध्यान; चिंतन; विचार; जो संस्कार अनुभव ज्ञान से उत्पन्न हो और स्मृति ज्ञान का जनक हो।

भावनाशक्ति - कल्पनाशक्ति।

भावपदार्थ - सद्वस्तु; वह वस्तु जिसकी सत्ता हो।

भावरूप पदार्थ का सुस्थिर रूप।

भाववस्तु देखो भावपदार्थ।

भावसमाधि कोमल हृदय भक्तों को उद्दीपन विभाव

भुक्ति—लौकिक सुख; भोग; ऐहिक सुख।
भुजंगासन—हठयोग का एक आसन।
भुवः—अंतरिक्ष लोक; भूमि तथा सूर्य के बीच का लोक; भू आदि सात लोकों में से द्वितीय लोक।
भुवन—जगत्; लोक।
भूः—पृथ्वी; भूलोक; मर्त्यलोक।
भूत—पदार्थ; प्राणी; वे मूल द्रव्य जिनसे सृष्टि की रचना हुई है; पृथ्वी आदि पंच महाभूत; पिशाच; काल विशेष।
भूतजन्य—महाभूतों से उत्पन्न।
भूतजय—पंच महाभूतों अथवा शरीर पर विजय; पाँचों भूतों पर पूरा वशीकार।
भूतपति—शिव; भूतेश।
भूतभविष्यद्वर्तमान—तीनों काल—अतीत, भावी तथा प्रस्तुत समय।
भूतयज्ञ—पंचमहायज्ञों में से एक जिसे प्रत्येक गृहस्थ को नित्य करना होता है; पकाये हुए अन्न में से अन्य प्राणियों के लिए भाग निकालना; बलिवैश्वदेव; भूतबलि।
भूतशक्ति—द्रव्य की शक्ति; भूततन्मात्र।
भूतशुद्धि—तंत्र के अनुसार शरीर की वह शुद्धि जो पूजा आदि से पूर्व की जाती है।

भूतसिद्धि—शरीर तथा तत्त्वों पर पूर्ण अधिकार; भूत-प्रेतादि को सिद्ध और वश में करना।

भूतात्मा जीवात्मा।

भूतादि--विष्णु पुराणानुसार तामसाहंकार।

भूमा अपरिछिन्न; असीम; परिव्याप्त; परिपूर्ण; देश, काल तथा वस्तु परिच्छेद रहित; ब्रह्म।

भूमिका चित्त की अवस्था विशेष; सोपान; श्रेणी; अवस्था; रचना।

भृकुटि भौंह; त्रिकूट; दोनों भौंहों के बीच का स्थान।

भेद भिन्नता; अलगाव; अंतर; विच्छेद।

भेदज्ञान भेदबोधक ज्ञान; लौकिक ज्ञान।

भेदबुद्धि भेदधी; भेदोत्पादक बुद्धि; व्यावहारिक बुद्धि जो सब में भेद उत्पन्न करती है; एकता लाने वाली

तरह जीव और ब्रह्म एक नहीं हैं। इसी अर्थ में भिन्न हैं।

भेदाहंकार—विभाजक अहंकार।

भोक्ता—सुखादि भोग करने वाला; भोगकर्ता।

भोक्तृत्व—भोक्ता का धर्म या भाव।

भोग—अनुभव करना; व्यवहार में लाना; उपयो करना; नैवेद्य; सुख-दुःखादि का साक्षात्कार।

भोगभूमि—वह लोक जहाँ पर सुख और आनंद क अनुभूति होती हो।

भोग्य—भोगने योग्य; भोगपदार्थ; जिसका भोग किया जाय।

भौतिक—पंच भूतों से संबंध रखने वाला; पंच भूतों से बना हुआ; शरीर संबंधी; पार्थिव।

भ्रंश—नीचे गिरना; योग में अधःपतन।

भ्रम—मिथ्या ज्ञान; संशय; संदेह; भ्रांति; किसी वस्तु को और का और समझना; चक्कर काटना; भ्रमण करने वाला।

भ्रमर-कीट-न्याय—भ्रमर के संबंध में यह कहा जाता है कि वह किसी दूसरे कीड़े को पकड़ लाता है और उसे किसी स्थान पर रख कर वहाँ गुन-गुनाता रहता है। इसके शब्द से भयभीत होकर वह कीट इसी का चिंतन करते-करते इसी के समान रूप धारण कर लेता है। इस दृष्टांत द्वारा यह बताया जाता है कि

इसी भाँति जीव भी ब्रह्म का सतत चिंतन करके ब्रह्म रूप बन जाता है (देखो अरुंधती न्याय)।

भ्रष्ट—गिरा हुआ; योग से पतित।

भ्रांति—भ्रम; संदेह; धोखा।

भ्रांतिज—भ्रांति से उत्पन्न।

भ्रांतिदर्शन—मिथ्याज्ञान; योग का एक विघ्न।

भ्रांतिमात्र—केवल भ्रम।

भ्रांतिसुख—मिथ्यासुख; भ्रममूलक सुख।

भ्रूमध्यदृष्टि—दोनों भौहों के बीच एकटक देखना।

म

मंगलारती—भगवान् अथवा किसी देवता की मूर्ति अथवा किसी पूज्य व्यक्ति के ऊपर दीपक घुमाने का कार्य; दीपदान; नीराजन; षोडशोपचार पूजा का एक अंग।

मंडल— परिधि; घेरा यथा सूर्यमंडल, चंद्रमंडल; प्रदेश।

मंत्र—वे शब्द या वाक्य जिनका इष्टसिद्धि, किसी देवता की प्रसन्नता अथवा आत्मसाक्षात्कार के लिए जप किया जाता है; वेद का एक भाग।

मंत्रचैतन्य—मंत्र की सुप्त शक्ति।

मंत्रशक्ति—मंत्र का प्रभाव या प्रताप; मंत्र द्वारा प्राप्त शक्ति।

मंत्रसिद्धि—मंत्र का सिद्ध होना; मंत्र की सफलता; मंत्र द्वारा देवता को वश में करना।

मंद—मृदु; धीमा; आलसी; मूर्ख।

मकार—"म" वर्ण; ओ३म् की तृतीय मात्रा; ईश्वर और प्राज्ञ का बोधक।

मज्जा—वह गूदा जो हड्डी की नली में होता है; वसा; चर्बी; अस्थिसार।

मठाकाश—मंदिर या मकान के भीतर का खाली स्थान।

मणिपूरचक्र—तंत्र के अनुसार छः चक्रों में से तीसरा जो नाभि देश में स्थित है।

मति—बुद्धि; विचार; समझ।

मत्स्यावतार—विष्णु भगवान् के दस अवतारों में से पहला जिसमें उन्होंने मछली का रूप धारण किया था।

मत्स्यासन—हठयोग का एक आसन।

मत्स्येंद्रासन—हठयोग का एक आसन।

मद—गर्व; अभिमान; अहंकार।

मधुकरीभिक्षा—साधु-संन्यासियों की वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ भोजन घर-घर से वैसे लिया जाता है जैसे भ्रमर एक फूल से दूसरे फूल पर जाकर मधु इकट्ठा करता है।

मधुपर्क—देवताओं को चढ़ाने के लिए एक में मिलाया हुआ दधि, मधु तथा घृत; षोड़शोपचार पूजांतर्गत छठा उपचार।

मधुर—भक्ति के पांच भावों में से एक जिसमें भक्त भगवान् को अपना प्रियतम अथवा अपनी प्रेयसी और स्वयं को उनका प्रिय अथवा प्रिया मानता है।

मधुविद्या—सूर्य (मधु) को ब्रह्म का प्रतीक मान कर उपासना करने की एक विद्या।

मध्यमकोटिच्यधिकारी—मध्य श्रेणी का अधिकारी।

मध्यम परिमाण—मध्य माप वाला; अणु और व्यापक से विलक्षण।

मध्यम वैराग्य—वैराग्य जो न तीव्र हो और न मंद; बीच की श्रेणी का वैराग्य; सामान्य वैराग्य।

मध्यमा—वाणी की तृतीय अवस्था जब वह हृदय से ऊपर उठती है; एक अंगुलि।

मनः कल्पित जगत्—मन या कल्पना द्वारा रचा हुआ संसार।

मनः प्राणसंबंध—मन और प्राण का पारस्परिक लगाव।

मनःशुद्धि—मन की शुद्धता।

मनन—सतत चिंतन; विचार; सुने हुए वाक्यों पर बार-बार युक्तिपूर्वक विचार करना; ज्ञानमार्ग के तीन सोपानों में से द्वितीय।

मननशक्ति—मनन करने की शक्ति; विचारशक्ति; अनवरत अनुचिंतन की शक्ति।

मनसःमनः—मन का मन; अंतर्यामी; आत्मा; ब्रह्म।

मनस्—मन; अंतःकरण की वह वृत्ति जिससे संकल्प-विकल्प होता है।

मनीषा—बुद्धि।

मनोजय—मन पर विजय।

मनोधर्म—मन की प्रकृति; मन का स्वाभाविक गुण।

मनोनाश—मन का न रह जाना; मन का ध्वंस; मन का लय; मन का बाध।

मनोनिरोध—मन को रोकना या वश में करना; चित्त की वृत्तियों का निरोध; मनोनिग्रह।

मनोमय कोश—पाँच कोशों में से तीसरा जिसमें मन तथा पांचों ज्ञानेंद्रियां मानी जाती हैं।

मनोमात्र जगत्—मन ही संसार है; केवल मन द्वारा निर्मित संसार।

मनोमूर्च्छाकुंभक—एक प्रकार का प्राणायाम जिसे षण्मुखी मुद्रा के साथ भ्रामरी कुंभक की तरह किया जाता है। इससे मन मूर्च्छित और शांत होता है।

मनोरथ—मनोभिलाषा; मनोकामना।

मनोराज्य—मन की कल्पना; मानसिक कल्पना।

मनोलय—मन का अपने कारण में विलीन होना।

मन्वंतर—इकहत्तर चतुर्युगियों का काल; देवताओं के इकहत्तर युग का समय।

ममकार—मेरापन; ममत्व; शरीर और शरीर से संबंधित स्त्री, पुत्र, संबंधी, मित्र, घर, संपत्ति आदि में अपनेपन की भावना।

मलवासनारहित—अशुद्धि तथा कामना से मुक्त।

मलिन सत्त्व—अशुद्ध सत्त्व; मलदूषित सत्त्व; अविद्या; रजोगुण और तमोगुण से अभिभूत सत्त्व।

महतः परः—महान् से परे; महान् से महान्; बुद्धि की पहुँच से परे।

महत्—महान्; श्रेष्ठ; बृहत्; सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति का पहला विकार; बुद्धि; योग में चित्त; वेदांत में हिरण्यगर्भ; तेजस।

महत्तत्त्व—सांख्य में प्रकृति का प्रथम विकार; बुद्धि तत्त्व; वेदांत में हिरण्यगर्भ; ब्रह्मा; योग में चित्त; समष्टि अहंकार।

महत्व—बड़प्पन।

महद्ब्रह्म—हिरण्यगर्भ; सूत्रात्मा।

महर्लोक—ऊपर के सात लोकों में चौथा।

महर्षि—बहुत बड़ा श्रेष्ठ ऋषि।

महाकल्प—ब्रह्मा का सौ वर्ष का काल; उतना काल जितने में एक ब्रह्मा की आयु पूरी होती है और संपूर्ण ब्रह्मांड अव्यक्त में लीन हो जाता है।

महात्मा—बहुत बड़ा साधु या महापुरुष; उत्तम स्वभाव-युक्त; उदात्त; महामना।

महान्—बहुत बड़ा; विशाल; सांख्य में पहला विकार; महत्तत्त्व; ब्रह्मा; हिरण्यगर्भ।

महापुरुष—श्रेष्ठ पुरुष; महात्मा; साधु; नारायण।

मानसपूजा—मानसिक पूजा; मनोरचित द्रव्यकरण-सपर्या; मन ही मन की जाने वाली पूजा जिसमें पूजा के बाह्य उपकरणों की आवश्यकता नहीं रहती।

मानसिक—मानसी; मन का; मन संबंधी; मन की कल्पना से उत्पन्न; मनोभव।

मानसिक क्रिया—मन से किये जाने वाले काम।

मानसिक जप—मन ही मन किया जाने वाला जप; मानस जप।

मानसिक शक्ति—मन की शक्ति; बुद्धि; समझ।

माया—अविद्या; अज्ञान का एक भेद; ईश्वर की वह शक्ति जिससे सृष्टि का कार्य चलता है; शुद्ध सत्त्वगुण प्रधान अज्ञान; सत् असत् से विलक्षण, अनादि किंतु सांत ईश्वर की शक्ति; छल; कपट; लक्ष्मी।

मायामोहजाल—माया द्वारा प्रसारित मोह का जादू।

मायावाद—मिथ्यावाद; वह सिद्धांत जिसके अनुसार ब्रह्म के अतिरिक्त सृष्टि की समस्त वस्तुओं को असत्य माना जाता है, भ्रम के कारण जगत् सत्य प्रतीत होता है।

मायावी—जादूगर; फरेबी; ब्रह्म।

मायाशबलब्रह्म—सगुण ब्रह्म; ईश्वर; माया शबलित ब्रह्म; माया मिश्रित या चित्रित ब्रह्म।

मायोपाधि—माया निर्मित उपाधि।

मार्ग—पथ; पंथ; रास्ता।

मार्तंड—सूर्य; भास्कर।
मार्दव—नम्रता; कोमलता; सरलता।
माला—हार; जप की संख्या जानने के लिए सूत में पिरोये हुए मनके; स्रक्; श्रेणी; आली।
मिताहार—थोड़ा भोजन; परिमित भोजन; युक्ताहार।
मिथ्या—असत्य; झूठ; भ्रममूलक; अनृत; अतथ्य; सत् असत् से विलक्षण।
मिथ्याचार—कपटपूर्ण आचरण; ढोंग; कपटाचार; दंभ।
मिथ्याज्ञान—भ्रम; भूल; एक वस्तु में जो अर्थ नहीं है उस वस्तु में उस अर्थ की बुद्धि का होना; तत्त्वज्ञान का उलटा।
मिथ्याज्ञाननिमित्त—भ्रम पर आधारित।
मिथ्यादृष्टि—इस संसार को असत्य मानने का दृष्टिकोण।
मिथ्याभिमान—झूठा अभिमान; झूठा अहंकार।
मिथ्यावाद—ईश्वर के अतिरिक्त सृष्टि के समस्त पदार्थों को अनित्य और असत्य मानने का सिद्धांत; मायावाद।
मिथ्यासंबंध—झूठा लगाव या रिश्ता।
मिथ्याहंकार—देखो मिथ्याभिमान।
मीमांसा—हिंदुओं के छः दर्शनों में से एक; वेदांत के दो ग्रंथ पूर्व मीमांसा तथा उत्तर मीमांसा; अनुमान

तथा तर्क-वितर्क द्वारा यह निश्चय करना कि कोई बात वस्तुतः कैसी है।

मुक्त—जो बंधन से छुटकारा पा गया हो; जिसे मुक्ति मिल गयी हो।

मुक्तपुरुष—वह जिसकी आत्मा मोक्ष को प्राप्त हो गयी हो; जो सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त हो गया हो; जो जन्म-मृत्यु के बंधन से छूट चुका हो।

मुक्ति—छुटकारा; रिहाई; वह दशा जिसमें मनुष्य बार-बार जन्म ग्रहण करने से छुटकारा पा लेता है; मोक्ष; आत्यंतिक दुःखनिवृत्ति।

मुख्य—प्रधान; सब से ऊपर या आगे का; श्रेष्ठ।

मुख्यप्राण—प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान नामक पंच-प्राण।

मुख्यवृत्ति—शब्द की शक्ति; पद और पदार्थ का वाच्य-वाचक संबंध।

मुख्यसामान्याधिकरण—जिस वस्तु का जिस वस्तु से सदा अभेद हो उस वस्तु का उस वस्तु के संग मुख्यसामान्याधिकरण कहते हैं; वेदांत का महावाक्य "अहं ब्रह्मास्मि"—मैं ब्रह्म हूँ, जीव और ब्रह्म को अभेद बतलाता है। यहाँ पर "मैं" जो बुद्धि सहित आभास का नाम है उसका ब्रह्म के साथ अभेद नहीं कहा है, किंतु कूटस्थ का अभेद कहा है जो कि मैं का अधिष्ठान है। अतः "मैं" का ब्रह्म के साथ अभेद

स्थापित करने के लिए "मैं" के मिथ्या स्वरूप "बुद्धि सहित आभास" का बाध करना होगा।

एक उदाहरण लीजिए, स्थाणु में पुरुष का भ्रम होकर स्थाणु-ज्ञान के अनन्तर "पुरुष स्थाणु है" -ऐसा कहने का अर्थ यह नहीं कि पुरुष और स्थाणु एक हैं। यह केवल प्रकट करता है कि पुरुष का ज्ञान होने से स्थाणु की भ्रांति जाती रही और स्थाणु के विचार का आधार और पुरुष एक ही हैं अर्थात् विषय और विधेय का संबंध "मुख्यसामान्याधिकरण" न होकर बाधसामान्याधिकरण है। यदि किसी वस्तु का बाध न होकर किसी वस्तु के साथ अभेद हो तो उस वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ "बाधसामान्याधिकरण" कहते हैं।

मुग्धता--मोहित या आसक्त होने का भाव; मूढ़; कामांधता; विवेकशून्यता।

मुदिता -समाधि योग्य संस्कार उत्पन्न करने वाला एक परिकर्म; हर्ष, आनंद।

मुद्रा हठयोग में एक प्रकार का अंगविन्यास; पूजाकाल में हाथों में एक विशेष चिह्न बनाना।

मुनि महात्मा; तपस्वी; योगी; ऋषि; मननशील; वेद के मंत्र को मनन कर उनके अर्थ दर्शाने वाले।

मुमुक्षु मोक्ष पाने का इच्छुक; मुक्ति चाहने वाला।

मुमुक्षुत्व—मुमुक्षु का भाव; मुमुक्षुता; मोक्ष प्राप्ति की उत्कट कामना; जन्म-मरण के बंधन से छूटने की प्रवल अभिलाषा।

मुहूर्त—शुभ काल; ४८ मिनट के वरावर का समय।

मूढ़ावस्था—स्तब्ध अथवा विस्मृति की अवस्था; योग में चित्त की पांच वृत्तियों अथवा अवस्थाओं में से एक।

मूर्ख—वेवकूफ; मूढ़; अज्ञ; नासमझ।

मूर्च्छा—अचेत; वेहोशी; संमोह; भक्ति के आठ लक्षणों में से एक।

मूर्तामूर्त—साकार-निराकार।

मूर्ति—प्रतिमा; विग्रह।

मूल—जड़; कंद; आरंभ; आदि कारण; आधार।

मूलधौति—गुदाद्वार को साफ करना।

मूलप्रकृति—आद्याशक्ति; अव्यक्त; संसार की वह आद्य सत्ता जिसका कि यह संसार परिणाम या विकास है; गुणों की साम्यावस्था।

मूलमंत्र—वीजमंत्र।

मूलाज्ञान—कारणरूप अज्ञान; शुद्ध ब्रह्म और आत्मा को आवरण करने वाला अज्ञान।

मूलाधार—योगानुसार मानवशरीर के षट्चक्रों में से एक जो सब से नीचे है।

मूलाविद्या—देखो मूलाज्ञान।

मृगतृष्णा- जल अथवा जल-तरंगों की वह मिथ्या प्रतीति जो कभी-कभी मरुप्रदेश में कड़ी धूप पड़ने के समय होती है; मृगमरीचिका; मृगतृष्णा; जलाभास।

मृत्युंजय- वह जिसने मृत्यु को जीत लिया हो; शिव का एक नाम।

मृत्यु- मरण; मौत; निधन; यमराज।

मृदुता- कोमलता; शिष्टता; मुलायमियत; मंदता।

मृदु (वैराग्य)- धीमा; मंद; अतीक्ष्ण।

मृषा- असत्य; मिथ्या; व्यर्थ।

मेघाकाश- मेघ के जल में प्रतिबिंबित होने वाला आकाश; आकाश के जितने स्थान में मेघ है और मेघ के जल में जो आकाश का प्रतिबिंब है, इन

य

यक्ष—गुह्यक देवता; देवयोनि विशेष जिसके रा कुवेर हैं।

यजमान—यज्ञ कराने वाला; यष्टा; याजक।

यजुस्—यजुर्वेद; वेद विशेष; यजुर्वेद का मंत्र।

यज्ञ—याग; मख; धार्मिक कृत्य जिसमें हवन आ किये जाते हैं।

यज्ञोपवीत—जनेऊ; उपनयन संस्कार; उपवीत व्रतसूत्र; यज्ञसूत्र।

यतमान—अनुचित विषयों का त्याग और उचित विषयं की ओर मंद प्रवृत्ति के लिए यत्न करने वाला; वैराग्य की एक अवस्था; यत्न करता हुआ।

यति—तपस्वी; त्यागी; संन्यासी।

यथार्थ—ठीक; उचित; जैसा चाहिए।

यथार्थस्वरूप—ठीक रूप; वास्तविक स्वभाव।

यम—मृत्युदेव; यमराज; धर्मराज; राजयोग का प्रथम अंग; निग्रह; इंद्रियों को वश में रखना।

यव—जौ; हवन करते समय यज्ञ में डाला जाने वाला एक अन्न।

यशस्—कीर्ति; प्रशंसा; ख्याति।

यात्रा—प्रस्थान; गमन; तीर्थ को जाना; पवित्र स्थान पर भक्ति से दर्शन, पूजा आदि के लिए जाना; एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना; परिभ्रमण; विचरण; पर्यटन; तीर्थाटन।

युक्ति—कौशल; उपाय; चाल; तर्क; मिलन।

युग—समय; काल के चार विभाग—सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलि, चारों युग मिल कर चतुर्युग कहलाता है।

योग—मिलन; परमात्मा से मिलन; ध्यान; पतंजलि का दर्शन; छः दर्शनों में से एक; मोक्ष का उपाय; चित्त को एकाग्र करने का उपाय; योग के चार प्रकार—कर्म, भक्ति, राज और ज्ञान।

योगदंड—योगियों के अवलंबन के लिए एक यष्टि विशेष।

योगदर्शन—पतंजलि ऋषि का दर्शन; सत् के दर्शन के लिए यौगिक दृष्टिकोण।

योगदृष्टि—यौगिक दृष्टि।

योगनिद्रा—सोने और जागने के बीच की दशा; योग की समाधि; कल्पांत में होने वाली विष्णु की निद्रा; वह अवस्था जब पुरुष और प्रकृति दोनों परमात्मा में लीन होकर एकाकार हो जाते हैं।

योगभ्रष्ट—जो योग की उच्च स्थिति से पतित हो गया हो।

योगमाया—भगवान् की सृजनशक्ति; योगमाया।

योगमुद्रा—हठयोग में ये अंगविन्यास—खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी, चिह्न; कुंडलिनी की शक्ति को जाग्रत करने में सहायक एक साधन।

योगयुक्त—योगारूढ़; योगात्मा।

योगवासिष्ठ—वशिष्ठ महर्षि का बनाया हुआ एक ग्रंथ जिसमें वेदांत का वर्णन है।

योगाभ्यास—योग का साधन; योगाराधन; योगशास्त्र के अनुसार योग के आठ अंगों का अनुष्ठान।

योगारूढ़—वह जिसने चित्त की वृत्तियों का निरोध कर लिया हो; इंद्रिय के भोगों और उनके साधक कर्मों में अनासक्त।

योगिगम्य—केवल योगियों को प्राप्त।

योगी—योग का साधक या अभ्यास करने वाला; राजयोग का साधक; आध्यात्मिक साधना करने वाला; योगयुक्त।

योगेश्वर—योगों के ईश्वर; श्रीकृष्ण का एक नाम।

योग्यता—उपयुक्तता; पात्रता; क्षमता।

योजन—दूरी का एक भाव जो ९ या १० मील तक बतायी जाती है।

योनि—उत्पत्ति-स्थान; उद्गम; स्त्रियों की जननेंद्रिय; गर्भाशय; प्राणियों की जाति; आकर; कारण।

योनिमुद्रा—तांत्रिकों की एक मुद्रा जिसमें अंगूठे और अंगुलियों से नाक, कान, मुख और नेत्र बंद कर अनाहत ध्वनि के सुनने का अभ्यास किया जाता है।

रसना--जीभ; जिह्वा; वह इंद्रिय जिससे रसास्वादन होता है; पाँच ज्ञानेंद्रियों में से एक।

रसास्वाद--रस चखना; स्वाद लेना; आनंद लेना; सविकल्प समाधि का आनंद लेना अथवा विक्षेप-निवृत्तिजन्य आनंद का अनुभव लेना; यह निर्विकल्प समाधि में बाधक है।

राग--योग में पाँच क्लेशों में से एक; अंध प्रेम; अनुराग; झुकाव; मोह; लोभ की वृत्ति।

रागद्वेष--ईर्ष्याद्वेष; आकर्षण-विकर्षण; प्रेम और घृणा।

राग-रागिनी--संगीत में स्वरों के विशेष प्रकार तथा क्रम या सुनियोजित गीत का ढांचा।

राजयोग--योग का एक भेद; ध्यान योग; वह योग विशेष जिसका उपदेश पतंजलि ने योगशास्त्र में किया है; अष्टांग योग।

राजराजेश्वरी--दस महाविद्याओं में से एक; भुवनेश्वरी।

राजर्षि-वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय कुलोत्पन्न हो।

राजसाहंकार--रजोगुण से उत्पन्न अहंकार; काम और कर्मजन्य अहंकार।

राजसिक--रजोगुण से उत्पन्न; राजस; रजोगुण संबंधी; राजसी।

राजसूय--वह यज्ञ जिसको करने का अधिकार केवल चक्रवर्ती राजा को है; नृपाध्वर।

लक्षण—जो गुण एक वस्तु को दूसरी वस्तु से पृथ बतलावे; चिह्न; परिभाषा; रंगढंग; असाधारा ढंग; अध्याहार; जो ऊपर से लिया जाय।

लक्षणवृत्ति—शब्द की वह शक्ति जिससे उसका साधारा से भिन्न और वास्तविक अर्थ प्रकट हो; अमुख वृत्ति।

लक्ष्य—निशाना; ध्येय; उद्दिष्ट पदार्थ; वह अर्थ जो किसी शब्द की लक्षण शक्ति से निकलता हो; पद की लक्षणवृत्ति से बोध अर्थ।

लक्ष्यार्थ—लक्षण से निकलने वाला अर्थ; जो अर्थ किसी शब्द की लक्षणवृत्ति से जाना जाय।

लघिमा—लघुता; योग की अष्टसिद्धियों में से एक।

लज्जा—शर्म; संकोच; लाज; व्रीड़ा।

लय—कार्य के उपादान कारण के विद्यमान रहते हुए भी उस कार्य का तिरोभाव होना; एक दूसरे में समाना; विलीन होना; मिलना; मग्न होना; नाश; प्रलय; निद्रा, आलस्य आदि में वृत्ति का अभाव जो निर्विकल्प समाधि में एक विघ्न है।

लयक्रम—तत्वों के विलीन होने का क्रम।

लीला—क्रीड़ा; खेल; विनोद; मनोरंजन; केलि; विलास।

लीलामयी—पराशक्ति का एक नाम जिसके लिए विश्व का सृजन और संहार एक लीला मात्र है।

लीला-विलास—मनोरंजन; क्रीड़ा; चेष्टा।

लेशाविद्या—अविद्या का चिह्न; अविद्या का संसर्ग; अविद्या का अल्पांश; अविद्या का कणमात्र; आत्मज्ञान से अज्ञान की निवृत्ति होने पर जो अज्ञान का लेश बाकी रहता है जिससे ज्ञानी को प्रारब्धकर्म का भोग होता है; विक्षेपशक्ति वाला अज्ञान।

लोक—संसार; यश।

लोकसंग्रह—संसार का कल्याण; सब की भलाई।

लोकायत—चार्वाक दर्शन; जड़वादी; वह मनुष्य जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो।

लोभ—लालच; लिप्सा; तृष्णा।

लोलुपता—लोभ; लालच; कामुकता।

लौकिक—इस लोक या संसार से संबंध रखने वाला; व्यावहारिक; सांसारिक; लोकव्यवहार सिद्ध; मात्र लोक-व्यवहार में तत्पर।

लौलिकी—हठयोग की नौलि क्रिया में पेट के नलों को निकाल कर उन्हें कुम्हार के चक्र की तरह घुमाने की क्रिया।

वर्णात्मक शब्द—सार्थक शब्द; वर्ण के दो भेदों में से एक, दूसरा भेद ध्वन्यात्मक है।

वर्णाश्रम—चारों वर्णों का आश्रम; चारों वर्ण आश्रम में रहकर जिस कर्म द्वारा ऐहिक और पारलौकिक कल्याण प्राप्त करते हैं।

वशित्व—योग की आठ सिद्धियों में से एक।

वशीकार—वश में करना; अपर वैराग्य की उच्चतम अवस्था; इस लोक और परलोक के विषयों में अनित्य बुद्धि से उनके त्याग की इच्छा।

वस्तु—द्रव्य; पदार्थ; चीज; तत्त्व; ब्रह्म।

वह्नि—अग्नि।

वह्निसार—अंतर्धौति का एक प्रकार जिसमें नाभि की गाँठ को मेरुपृष्ठ में सौ बार लगाते हैं अर्थात् उदर को इस प्रकार बार-बार फुलाते और सिकोड़ते है कि नाभिग्रंथि पीठ में लग जाया करती है।

वाक्समुदाय—पदसमूह; वाक्यसमूह।

वाक्सिद्धि—इस प्रकार वाणी की सिद्धि कि जो बात मुख से निकले वह ठीक घटे।

वाच्—वाणी।

वाचारंभण—वाक्य योजना मात्र; कहने भर की बात; वाणी का विलासमात्र। यथा घट इसमें मृत्तिका ही घट है। नामभेद अथवा आकारभेद काल्पनिक है। वास्तव में घट रूप विकार नहीं है; विकार तो

वायुतत्त्व—पंचतत्त्वों में से एक तत्त्व जिसका गुण स्पर्श है।

वायुधारण हठयोग की पृथ्व्यादि पंच-धारणाओं में से वह जिसमें हृदय से लेकर दोनों भौहों के बीच तक शरीर में वायु पर धारणा की जाती है।

वायुभक्षण पूरक प्राणायाम द्वारा वायु पान कर केवल उसी पर निर्वाह करने को वायुभक्षण कहते हैं।

वारिसार—अंतर्धौति का एक प्रकार जिसमें मुख द्वारा धीरे-धीरे जल पीकर कंठ तक भर लिया जाता है फिर जल को उदर में चारों ओर संचालित करके गुदा-मार्ग द्वारा बाहर निकाल दिया जाता है।

वासना—कामना; प्रत्याशा; जन्म-जन्मांतर के प्रभाव से उत्पन्न मानसिक सुख-दुःख की भावना; कुछ पाने या करने की इच्छा।

वासना-क्षय—सूक्ष्म कामनाओं का विनाश।

वासना-त्याग इच्छा का उत्सर्ग।

वासनारहित कामनाओं से मुक्त।

वासुदेव—वसुदेव के पुत्र; श्रीकृष्ण।

विकर्षणशक्ति—अलग करने की शक्ति; झटक कर अपने से दूर करने की शक्ति; आकर्षण शक्ति का उलटा।

विकल्प—भ्रांति; भ्रम; संशय; विपरीत कल्पना; अवांतर कल्प; भेद में अभेद और अभेद में भेद वाला ज्ञान; योग के अनुसार एक प्रकार की चित्तवृत्ति।

विकार किसी का रूपादि बदलना; परिणाम; दोष; सत्ता, वृद्धि, परिणाम, अपक्षय और विनाश ये पंच विकार हैं।

विकास फैलना; बढ़ना; वह प्रक्रिया जिसके अनुसार कोई वस्तु अपनी आरंभिक सामान्य अवस्था से धीरे-धीरे बढ़ती, फैलती और सुधरती हुई उन्नत और पूर्णावस्था को प्राप्त होती है; यह सिद्धांत कि एक कौतुक से यह संसार बन गया।

विकृत जिसमें किसी प्रकार का विकार या बिगाड़ हुआ हो।

विकृति विकार; बिगाड़; मूल प्रकृति का वह रूप जो मूल धातु में विकार होने पर उसे प्राप्त हुआ हो; कार्य जिससे कोई नया तत्त्व उत्पन्न हो।

विघ्न – बाधा; रुकावट; अड़चन; व्याघात; अंतराय; प्रत्यूह।

विघ्नेश – बाधा दूर करने वाला देव; गणेश।

विचार – आत्मा, ब्रह्म तथा सत्य को सोचना-समझना; वह जो मन में सोच कर निश्चित किया जाय; मन में उठने वाली कोई बात; भावना; संकल्प; तत्त्व-निर्णय; मन का भाव; आत्मविचार; ज्ञान की द्वितीय भूमिका।

विचारशक्ति—वह शक्ति जिसकी सहायता से विचार किया जाय या भला-बुरा पहचाना जाय।

विच्छिन्नावस्था—योग में अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश—इन चार क्लेशों की वह दशा जिसमें बीच में उनका विच्छेद होता है; क्लेशों की वह अवस्था जिसमें क्लेश किसी दूसरे बलवान् क्लेश से दबे हुए शक्ति रूप से रहते हैं और उसके अभाव में वर्तमान हो जाते है।

विजर – अजर; जरारहित; जिसे जरा या बुढ़ापा न आता हो।

विज्ञान—निश्चयात्मिका बुद्धि; लौकिक ज्ञान; तत्त्वज्ञान; आत्मा के स्वरूप का ज्ञान; बौद्ध मतानुसार पांच स्कंधों में से वह जो आलय विज्ञान तथा प्रवृत्ति-विज्ञान प्रवाह का नाम है।

विज्ञानमय कोश—पाँच कोशों में से चौथा जो पांच ज्ञानेंद्रिय सहित बुद्धि से बना माना जाता है।

विज्ञानस्पंदित - विज्ञान (चैतन्य) की निरंतर क्रिया अथवा गति।

विज्ञानात्मा चिद्रूप; बोधस्वरूप; जीव; चेतन आत्मा।

वितंडा व्यर्थ का विवाद; कहासुनी; दूसरों की बातों पर ध्यान न देते हुए अपनी बात कहते चले जाना; न्याय के सोलह पदार्थों में से एक।

वितर्क किसी तर्क के उत्तर में दिया जाने वाला दूसरा तर्क; विरोधी तर्क; प्रतिवाद।

विदेह शरीररहित; जो देहरहित हो; जिसका देह से आत्माभिमान निवृत्त हो चुका हो; वितर्कानुगत और विचारानुगत समाधि को प्राप्त तथा आनंदानुगत भूमि में प्रविष्ट योगी।

विदेह कैवल्य ज्ञानी का मरने पर प्राप्त होने वाला मोक्ष, जीवन्मुक्ति का उलटा।

विदेहमुक्ति देखो विदेह कैवल्य।

विद्या (ब्रह्मसंबंधी) ज्ञान; मोक्ष की प्राप्ति कराने वाला ज्ञान, परा और अपरा दो विद्याएं।

विद्याधर एक देवयोनि।

विद्युल्लोक एक लोक विशेष जो अर्चिरादि मार्ग में पड़ता है।

विद्वत्संन्यास वह संन्यास जो ब्रह्मचर्य, गृहस्थ अथवा वानप्रस्थ आश्रम में जिसे वेदांत के श्रवणादिक से ब्रह्म-साक्षात्कार हो गया हो ऐसा तत्त्ववेत्ता पुरुष चित्त की विक्षेप की निवृत्ति के लिए लेता है।

विद्वान् जिसने बहुत अधिक पढ़ा हो; वह जो आत्मा का स्वरूप जानता हो; पंडित; ज्ञानी।

विधि—क्रम; शास्त्रोक्त विधान; प्रणाली; रीति; ब्रह्मा।

विधिपूर्वक—(शास्त्रोक्त) नियम या विधि के अनुसार; विधिवत्।

विनय—नम्रता; अनुनय; शील; शिक्षा; शिष्टता।

विनाश—नाश; तबाही।

विनाशि—विनाशशील; विनाश योग्य; अंतवंत।

विनियोग—उपयोग; प्रयोग; वैदिक कृत्यों में मंत्र का प्रयोग; फल-अर्पण।

विपरीत—प्रतिकूल; विरुद्ध; उलटा; विपर्यय; विलोम।

विपरीतता—विपरीत होने का भाव; प्रतिकूलता; असमानता।

विपरीत-भावना—विपर्यय; यह ज्ञान कि देहादिक सत्य है, जीव ब्रह्म का भेद सत्य है।

विपर्यय—मिथ्याज्ञान; भ्रम; कुछ का कुछ समझना; सांख्य में विपर्यय पाँच हैं; योग में प्रमाणादि पंचविध वृत्तियों में से एक।

विभाग—अंश; हिस्सा; प्रकरण; भाग; संयोग का नाशक; वैशेषिक में चौबीस गुणों के अंतर्गत एक गुण विशेष।

विभु—सर्वव्यापक; महान्; प्रभु; परम महत्ववान्; सर्वत्रगमनशील।

विभूति विभव; ऐश्वर्य; दिव्य वैभव; अलौकिक शक्ति; व्यापकत्व; अणिमादि अष्टसिद्धियाँ।

विमर्श असंतोष; आलोचना; अधीरता; विचारणा; विरुद्धार्थ।

विरक्ति विराग; वैराग्य; विमुखता; उदासीनता; आसक्तिराहित्य।

विरज सुख-वासना आदि से मुक्त; रजोगुण से रहित; एक नदी जो ब्रह्मलोक के मार्ग में पड़ती है जिसे निष्काम सत्पुरुष ही पार कर सकते हैं।

विरस नीरस; शुष्क।

विरह वियोग, वियोग का दुःख; विप्रयोग।

विराट् विश्वरूप भगवान्; विश्व; समष्टि स्थूल शरीर उपहित चैतन्य; स्थूलजगत् सहित चेतनतत्त्व।

नहीं बदलता है परंतु भ्रम से बदला सा माना जात है; प्रतीतिमात्र; भ्रांति; अध्यास; अध्यारोपण मायावाद।

विवर्तसृष्टि—अद्वैतसिद्धांत के अनुसार मूल पदार्थ के स्वरूप में किसी प्रकार की प्रच्युति हुए बिना अन्य वस्तु के रूप में प्रतिभात होना।

विवर्तोपादान—वह उपादान कारण जो अपने स्वरूप को किंचिन्मात्र भी नहीं बदलता, किंतु भ्रम से कार्य के रूप में बदला सा मालूम देता है; वह परिणामी उपादान से सर्वथा भिन्न है जिसमें उपादान स्वयं कार्य रूप में परिणत हो जाता है; श्री शंकर के अद्वैत वेदांत के अनुसार ब्रह्म जगत् का विवर्तोपादान कारण है। रज्जु में सर्प रूप का अन्यथा भाव विवर्तोपादान का एक दृष्टांत है, अधिष्ठान वस्तु का अवास्तविक अन्यथा भाव विवर्त है।

विविदिषा संन्यास—तत्त्वज्ञान या ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिए लिया हुआ संन्यास।

विवेक—सत् और असत्, आत्मा और अनात्मा तथा नित्य और अनित्य वस्तुओं के समझने का ज्ञान; प्रकृति और पुरुष के विभाग का ज्ञान; विचार; बोध।

विवेकी—विवेकवान्; बुद्धिमान; ज्ञानी।

विशिष्ट—मिला हुआ; असाधारण; उत्तम; विलक्षण युक्त; विशेषण सहित।

विश्वतैजसप्राज्ञ—जीव की क्रमशः जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था।

विश्वदेव (विश्वेदेव)—वह देवता जिसकी पूजा नांदीमुख श्राद्ध में होती है; अग्नि; देवताओं (विश्वदेव) का एक गण।

विश्वरूप—समस्त विश्व जिसका रूप है; सर्वरूप; विराट्।

विश्वास—एतबार; भरोसा; विश्रंभ।

विषय—वह जिसे इंद्रियां ग्रहण करें; वस्तु; पदार्थ; काम; गोचर; इंद्रियार्थ; देश; भोग का साधन।

विषयचैतन्य—प्रमेयचैतन्य; वस्तुरूप विषय से अवच्छिन्न चेतन।

विषय-भोग—इंद्रिय सुख; भोग साधन।

विषयवृत्ति—विषयभोग का चिंतन या विचार।

विषयवृत्तिप्रवाह—विषयवस्तुओं का सातत्य चिंतन।

विषयसंसार—भौतिक जगत्; काम जगत्।

विषयाकार—विषय पदार्थ के समान आकार वाला।

विषयासक्ति—वैषयिकता; शब्द, स्पर्श आदि विषयों में राग।

विषाद—अवसाद; खेद; दुःख; नैराश्य; शोक; उदासी।

विष्णुग्रंथि—योग के अनुसार शरीरस्थ तीन ग्रंथियों में वह जो नाभिदेश में स्थित है।

विष्णुमाया—भगवान् की आवरण-शक्ति जिससे असत् सत् सा प्रतीत होता है। देवी रूप में कल्पित विष्णु

भगवान् का एक मायावी रूप जिससे यह जड़ जगत् सद्रूप सा प्रतिभासित होता है।

विष्णुव्रत वेदबोधित विष्णुप्रापक कर्म।

विसदृशपरिणाम - विरूप परिणाम; विषम परिणाम; वस्तु का किसी दूसरे रूप में परिवर्तित होना।

विसर्जन छोड़ना; परित्याग; पेड़शोपचार पूजन में अन्तिम उपचार।

विस्तार फैलाव; विस्तीर्णता।

व्यावहारिक--व्यवहार संबंधी; व्यवहरणीय; सापेक्षिक जिसका बाध आत्मज्ञान से पूर्व न हो; परमार्थिक का उलटा।

व्यावहारिक सत्ता—जन्म-मरण, बंध-मोक्ष आदि व्यवहार को सिद्ध करने वाली सत्ता; जिस सत्ता का बाध संसार-दशा में न हो।

व्यास—कृष्णद्वैपायन ऋषि जिन्होंने ब्रह्मसूत्र आदि की रचना की; मुनिविशेष; वेदव्यास; बादरायण।

व्याहृति--उक्ति; कथन; वर्णन; मंत्र विशेष; भूः भुवः स्वः इन तीनों का मंत्र।

व्यूह—समूह; देह; परमेश्वर के पाँच रूप है यथा पर, व्यूह, विभव, अंतर्यामी और अर्चा। परस्वरूप वह है जो अक्षरधाम संज्ञक ब्रह्मलोक में दिव्य साकार रूप में विराजते हैं। वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध ये चार व्यूह हैं। वास्तव में तो संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध ये तीन ही व्यूह हैं। वासुदेव तो व्यूहमंडल में आने से व्यूहरूप माने जाते हैं। वासुदेव लीलास्वरूप हैं। उनमे ज्ञान, बल, ऐश्वर्य, वीर्य, शक्ति और तेज पूर्णरूप से सदा प्रकाशित हैं। संकर्षण में प्रधानता से ज्ञान और बल है और वह जीव के अधिष्ठाता हैं। प्रद्युम्न में ऐश्वर्य और वीर्य की प्रधानता है और वह मन के विधाता हैं और अनिरुद्ध अनंत जगत् के रक्षक, पोषक और विधाता

वैधी भक्ति—विधिवत् भक्ति; शास्त्रोक्त विधि के अनुसार भक्ति।

वैराग्य—सांसारिक पदार्थों और सुखभोगों से उदासीनता विरक्ति; विषय-वासनाओं में अनुराग का अभाव।

वैश्वानर—अग्नि; पाचकाग्नि; जठराग्नि; ब्रह्मांड; विराट् पुरुष।

वैश्वानरविद्या—एक उपनिषद् का नाम; अग्नि रूप में ब्रह्म की उपासना; विराट् का ध्यान।

वैषम्यावस्था—वह अवस्था जिसमें प्रकृति के तीनों गुण असमान हों; साम्यावस्था का उलटा।

वैष्णव—विष्णु का उपासक तथा भक्त; हिंदुओं का एक संप्रदाय जो विष्णु का उपासक है; अठारह पुराणों में से एक।

वैष्णवशास्त्र—विष्णुसंबंधी शास्त्र।

वैष्णवी—विष्णु की शक्ति।

व्यक्त—जो प्रकट हो; स्पष्ट।

व्यक्तिउपासना—भगवान् के साकार रूप का ध्यान।

व्यक्तित्व—व्यक्ति का गुण या भाव; वे विशिष्ट गुण जिनके कारण किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सिद्ध होती है।

व्यतिरेक—बिना; भेद; भिन्नता; अतिक्रम; अभाव; पृथक्भाव; वैराग्य का एक प्रकार जिसमें निवृत्त और विद्यमान चित्तमलों का पृथक्-पृथक् रूप से ज्ञान होता है।

व्यभिचारिणीभक्ति—संचरण करने वाली भक्ति; गतिशील भक्ति; अस्थिर भक्ति; क्षणिक भक्ति।

व्यवसाय—प्रयत्न; उद्योग; व्यापार; निश्चय; अनुष्ठान।

व्यवसायात्मिक—निश्चयात्मक।

व्यवहार—कार्य; कामधंधा; सांसारिक कर्म; दृश्य-जगत्; परमार्थ का उलटा।

व्यवहारापेक्ष—सापेक्षिक दृष्टिकोण से; जगत् की व्यावहारिक सत्ता के विचार से।

व्यष्टि—समष्टि में से एक; समष्टि का उलटा।

व्याख्यान—व्याख्या कार्य; भाषण; वक्तृता; कथन; वर्णन; पदच्छेद, पदार्थोक्ति, विग्रह, वाक्ययोजना तथा आक्षेप का समाधान—इन पांच लक्षणों से युक्त।

व्याधि—रोग; बीमारी; योग के विघ्नों में से एक।

व्यान—शरीरस्थ पांच वायुओं में से वह जो सारे शरीर में व्याप्त रहता है और जिससे शरीर में रक्त संचार होता है।

व्यापक—चारों ओर फैला हुआ; जो देश से परिच्छिन्न न हो; व्यापी; व्याप्ति का निरूपक।

व्यापकात्मा—सर्वव्यापी आत्मा।

व्यापी—व्याप्त होने वाला; व्यापक।

वृत्तिसहित—विचारसह।

वृषध्वज—शिव; वृषकेतु।

वेग—जोर; तेजी; प्रवाह; धारा; मल-मूत्रादि का शरीर से बाहर निकालने की प्रवृत्ति; न्यायानुसार चौबीस गुणों में से एक; वह संस्कार जो क्रिया से हो और अन्य क्रिया का जनक हो।

वेद—भारतीय आर्यों के सर्वप्रधान तथा सर्वमान्य धार्मिक ग्रंथ। वेद अपौरुषेय माने जाते हैं अतः इनमें वे दोष नहीं पाये जाते जो कि मानव कृतियों में होते हैं। जब ये विस्मृत हो जाते हैं तब ऋषि लोग ध्यान द्वारा इनका साक्षात्कार कर पुनः प्रकट करते है। वेद नित्य हैं। वेद मे ब्रह्म के स्वरूप और उसकी उपासना का ज्ञान होता है। स्मृति, इतिहास और पुराण इसकी शिक्षाओं का ही विस्तार करते हैं। वेद चार हैं: ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। वेद को श्रुति और आम्नाय भी कहते हैं।

वेदन—पीड़ा; व्यथा; अनुभव; संवेग; ज्ञान; बौद्धों के अनुसार पाँच स्कंधों में से एक जो रूप तथा विज्ञान इन दो स्कंधों के संबंध से उत्पन्न होने वाले सुख-दुःखादि प्रत्ययों के प्रवाह का नाम।

वेदनशक्ति—जानने या अनुभव करने की शक्ति।

शुचि शुद्ध, निर्दोष; पवित्र; शुद्धान्तःकरण वाला।

शुद्ध पवित्र; स्वच्छ; साफ; निर्दोष; केवल; निर्मल; अमल।

शुद्ध-कल्पना शुद्ध भावना; शुद्ध मानसिक चित्र; शुद्ध उद्भावना; शुद्ध रूपविधान।

शुद्धप्रेम निर्दोष प्रेम, कामवासनारहित प्रेम।

शुद्धब्रह्म मायारहित ब्रह्म; निर्गुण ब्रह्म; परात्पर ब्रह्म; परावर ब्रह्म।

शुद्धभक्ति भगवान् की निर्दोष भक्ति।

शुद्धभावना पवित्र विचार।

शुद्धमनः पवित्र मन; निर्विकार मन।

शुद्धविचार– ब्रह्म के स्वरूप का शुद्ध अनुसंधान।

शुद्धसंकल्प शुद्ध निश्चय

शुभ मंगलप्रद, कल्याणकारी; क्षेमशाली।

शुभवासना शुद्ध कामना; सुन्दर संस्कार।

शक्ति—बल; प्रभाव; प्रकृति; माया; देवी; न्याय के अनुसार वह संबंध जो किसी पद और उसका बोध कराने वाले अर्थ में होता है; वेदांत के अनुसार दो प्रकार की वृत्तियों में से वह जो किसी पद के सुनते ही उससे जो ज्ञान होता है; शब्द की सामर्थ्य।

शक्तिपात—उपासना अथवा गुरुकृपा से शक्ति (यौगिक सामर्थ्य) का अवतरण।

शक्तिसंचार—स्पर्श, दृष्टि अथवा संकल्प द्वारा अपनी शक्ति (सामर्थ्य) का शिष्य में समावेश या संक्रमण करना।

शतावधान—एक साथ सौ बातें सुनकर उन्हें सिलसिलेवार याद रख सकना और बहुत से काम एक साथ कर सकना।

शब्द—ध्वनि; सार्थक ध्वनि; वेद; ओंकार; वैशेषिक के चौबीस गुणों में से एक; श्रोत्र का विषय; आकाश का गुण।

शब्दतन्मात्र—शब्द का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप।

शब्दप्रमाण—ऐसा प्रमाण जिसका आधार किसी आप्त पुरुष का कथन या शास्त्र हो; छः प्रमाणों में से एक।

शब्दब्रह्म—चिन्मय शब्द; वेद; ओंकार; अपर ब्रह्म; सविशेष ब्रह्म; वैयाकरणों का स्फोट।

शब्दभेद—नाम अथवा वाचक का भेद।

शब्दांतर—शब्दों में अंतर; शब्दभेद; दूसरा शब्द।

शम—मन की शान्ति; मन को रोकना; मन का विषयचिंतन से रोकना; अंतरिन्द्रियनिग्रह; सर्वकर्म-निवृत्ति; षट्संपत्ति में से एक।

शरण—रक्षा; आश्रय।

शरणागति—शरण में आना; आत्मसमर्पण; शरणापत्ति।

शरणागतियोग—आत्मसमर्पण योग; भक्तियोग; प्रपत्तियोग।

शरीर—देह; तन; काया; कलेवर; गात्र; वपु।

शलभासन—हठयोग में एक प्रकार का आसन।

शांडिल्यविद्या—अग्निरहस्य जिसमें यह बतलाया गया है कि प्रत्येक पदार्थ की सत्ता, स्थिति एवं पतन ब्रह्म के ही अधीन है; सर्वव्यापक तेज के रूप में ब्रह्म पर ध्यान करने की प्रक्रिया।

शांत—अनुद्वेग; क्षोभरहित; निश्चल; स्थिर; साहित्य में नौ रसों में से एक।

शांतिरूप—शांतिस्वरूप; शांतिमय।

शांभवीमुद्रा—मूल और उड्डीयान बंध के साथ सिद्ध अथवा पद्मासन में बैठकर नासिका के अग्रभाग अथवा

ष

षट्कर्म—हठयोग की छः क्रियाएं—नेति, धौति, नौि
वस्ति, कपालभाति तथा त्राटक।

षट्चक्रनिरूपण—षट्चक्रों का निदर्शन; शरीरस्
पद्माकार षट्प्रकार के चक्रों का—मूलाधा
स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञाच
का निरूपण।

षट्संपत्—छः प्रकार की संपत्ति—शम, दम, उपरति
तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान।

षड्दर्शन—हिंदुओं के छः दर्शन—न्याय, वैशेषिक, सांख्य,
योग, मीमांसा और वेदांत।

षड्विकार—शरीर के छः विकार या परिणाम—
उत्पत्ति, शरीरवृद्धि, बालपन, प्रौढ़ता, वृद्धत्व और
मृत्यु।

षडायतन—छः इंद्रियों का आवासस्थल।

षड्ूर्मि—(प्राण को) भूख, प्यास (मन की स्मृति में)
शोक, मोह, (शरीर को) जरा और मृत्यु ये छः
ऊर्मियां होती हैं।

षोड़शी—एक देवी जो सोलह वर्ष की युवती के रूप में
पूजी जाती है; दस महाविद्याओं में से एक;
अग्निस्तोम; हिंदुओं का मृतक-संबंधी एक कर्म।

हैं। इनमें शक्ति और तेज का आविर्भाव है। विभव रूप अथवा अवतार वह है जिसमें भगवान् किसी एक ऐश्वर्य अथवा शक्ति सहित देव, मानव अथवा पशु रूप में प्रकट होते हैं। इसमें मुख्य, गौण, पूर्ण, अंश, आवेश इत्यादि भेद हैं। भगवान् का चौथा रूप अंतर्यामी है जो जीव के हृदय में रहकर उसकी प्रवृत्ति और चेष्टाओं का नियमन करता है। भगवान् प्राणी के हृदय-कमल में उसके सुहृद्रूप से उसका योग-क्षेम वहन करने के लिए निवास करते हैं। उसका आकार अंगुष्ठमात्र कहा जाता है। भगवान् का एक अर्चा रूप भी है। जिस अर्चामूर्ति में विश्वासी भक्त भगवान् का आविर्भाव चाहता है उसी अर्चाविग्रह में भगवान् भक्त पर अनुग्रह करके आविर्भूत हो जाते हैं। इसका आकार मूर्ति के आकार के बराबर ही होता है, किन्तु इसमें सर्वव्यापी भगवान् विराजमान रहते हैं।

को ही परम तत्त्व मानते हैं। यह मत कि शून्य ही पूर्व अलीक वासनावश से विचित्र प्रपंचाकार से प्रथित होता है।

शून्यवादी— शून्यवाद सिद्धांत को मानने वाला; बौद्ध; नास्तिक; सौगत; माध्यमिक।

शेष—बचा हुआ; अवशिष्ट; संकर्षण; अनंत।

शैव—शिव का उपासक; शिव के उपासकों का एक संप्रदाय; शिव-संबंधी; अठारह पुराणों में से एक।

शोक—दुःख; रंज; गम; चिंता; पछतावा; खेद।

शोधन—हठयोग का प्रथम अंग; षट्कर्म द्वारा शुद्ध करना; शुद्धिकरण; विहित-अविहित का विचार।

शोषण—सुखाना।

शौच—(बाह्य तथा आंतर) शुद्धता; पवित्रता; अष्टांग योग के पाँच नियमों में से एक; शुचिता।

श्रद्धा—आस्था; पूज्य भाव; विश्वास; भक्ति; गुरु और शास्त्र के वचनों में विश्वास।

श्रवण—धार्मिक कथाएं तथा श्रुतियों का सुनना; कान; नवधा भक्ति का एक अंग; वेदांत-साधना के तीन अंगों में से एक; वेदांत-वाक्यों को सुनना।

श्राद्ध—पितरों को शास्त्र की रीति से जल और पिंड देना।

श्री लक्ष्मी; धन; संपत्ति; विभूति; ऐश्वर्य; शोभा।

श्रुति वेद; सृष्टि के आरंभ से चला आया पवित्र ज्ञान; सुनी हुई बात; कान।

श्रुतिप्रधान सभी प्रमाणों में से श्रुति के प्रमाण की प्रधानता या मुख्यता।

श्रुतिप्रमाण वेद-प्रमाण।

श्रेय श्रेष्ठ, उत्तम; शुभ; कल्याणकारी; मंगल; प्रशस्य; मुक्ति।

श्रोत्र श्रवणेंद्रिय; कान।

श्रौत वेद के अनुसार; श्रुति-संबंधी; श्रुतिविहित।

श्लोक स्तुति, संस्कृत का कोई छंद; अनुष्टुप छंद।

श्वास सांस; बिना इच्छा के बाहर की वायु का नासिका द्वारा अंदर आना।

भ्रूमध्य में दृष्टि को स्थिर कर ध्यान जमाना। इससे बाहर की वस्तुओं को देखता हुआ सा भी वस्तुओं को नहीं देखता।

शाक्त शक्ति का उपासक; देवी की पूजा करने वाल शक्ति संबंधी।

शाखा—अंग; विभाग; डाल; वेद-भाग।

शाश्वतपद—नित्यपद; अमरधाम; स्थायीपद।

शास्त्र—धार्मिक ग्रंथ; शास्त्र छः हैं वेदांत, न्या सांख्य, मीमांसा, योग और वैशेषिक।

शिक्षा—छः वेदांगों में से एक जिसमें वेदों के वर्ण स्वरों और मात्राओं आदि का वर्णन है; उपदेश पाठ।

शिरोव्रत—शिर पर अग्नि धारण करने का अथर्ववे का एक प्रसिद्ध व्रत।

शिवपद—शिव का स्थान; शिव का दर्जा; शिवत्व मंगलमयस्थिति।

शिवोऽहम्—मैं शिव हूँ।

शीर्षासन—हठयोग का एक प्रसिद्ध आसन; विपरीत करणी।

शुक्तिकारजत—भ्रम से शुक्तिका (सीपी) में रज (चाँदी) का भान होना। यह अध्यास का ए उदाहरण है।

शुक्र—वीर्य; तेज; रेत; चमकीला; एक प्रसिद्ध ग्रह।

शुक्ल—सफेद; श्वेत; उजला; शुभ्र।

स

संकल्प—दृढ़ विचार; प्रतिज्ञा; इच्छा; ब्रह्मचर्य की आठ त्रुटियों में में एक।

संकल्पमात्र—विचारमात्र; केवल विचार में।

संकल्परहित—विचाररहित; विचारहीन।

संकल्प-विकल्प—विचार और संदेह; विचार और अवांतर विचार।

संकल्पशून्य—निःसंकल्प; संकल्परहित।

संकोच—सिकुड़ने की क्रिया या भाव; हिचक; लज्जा।

संग—आसक्ति; साथ; विषयों के प्रति होने वाला अनुराग; मेल; संगम; वासना।

संगत्याग—साथ या सोहबत छोड़ना।

संग्रह—जमा करना; इकट्ठा करना; संचय; समाहृति।

संग्रहबुद्धि—संचय की वासना वाली बुद्धि।

संचरण—गमन, चलना; गति।

संचितकर्म—जो कर्म अनंत जन्मों में किये गये हैं और अभी तक उनके भोग भोगने की बारी नहीं आयी है, किन्तु संस्कार रूप में कर्माशय में हैं।

संज्ञान—ज्ञान; बुद्धि; चेतना; बौद्धों के पांच स्कंधों में से एक जो वस्तु के संज्ञा के विज्ञान-प्रवाह का नाम है

संतोष—तृप्ति; सब्र; प्रसन्नता; जो कुछ मिले अथवा जिस अवस्था में रहना हो उसमें प्रसन्न चित्त बने रहना और सब प्रकार की तृष्णा को छोड़ देना।

संध्यावंदन—द्विजों की एक प्रसिद्ध उपासना जो प्रातः, दोपहर और संध्या को होती है।

संन्यास—अपने लौकिक संबंधों और अधिकारों को स्वेच्छा से त्याग देना; विहित कर्मों का विधिपूर्वक त्याग; हिंदुओं के चार आश्रमों में से अंतिम।

संन्यासी—संन्यास आश्रम में रहने वाला; चतुर्थाश्रमी।

संपत्—पूर्णता; धन; वैभव; गुण।

संपत्ति—देखो संपत्।

संप्रज्ञात समाधि—योग की दो प्रसिद्ध समाधियों में से एक जिसमें ध्याता, ध्येय और ध्यान की त्रिपुटी बनी रहती है; किसी ध्येय को आलंबन बना कर की जाने वाली समाधि।

संप्रदाय—कोई विशेष धार्मिक मत; परिपाटी; रीति; गुरुपरंपरागत उपदेश।

संप्रयोग—मेल; इंद्रियों का विषयों से संपर्क; संबंध।

संप्रसाद—शांत; गंभीर; निश्चलता; निर्मलता; प्रसन्नता; जीव।

संबंध—संपर्क; लगाव; नाता; रिश्ता; अनुबंध चतुष्टय का एक अंग।

संभूति—उत्पत्ति; बढ़ती; उद्भव।

संयम—रोक; मन और इंद्रियों को वश में रखना; मन के संतुलित होने की दशा; योग में धारणा, ध्यान तथा समाधि का एकत्र साधन।

संयुक्त—जुड़ा; एक में मिला हुआ; संबद्ध; साथ।

संयोग-संबंध—मेल; न्याय के अनुसार गुणपदार्थ; दो वस्तुओं के मिलने से होने वाला संबंध; अभेद संबंध।

संवर—बौद्धों का एक व्रत; निग्रह।

संवित्—चेतना; ज्ञानशक्ति; बोध; ज्ञान; योग की वह भूमि जिसकी प्राप्ति प्राणायाम से होती है; वृत्ति; ज्ञप्ति।

संवृत्ति—सापेक्षिक सत्य; ढका हुआ; आच्छादित।

संशय—संदेह; शंका; अनिश्चयात्मक ज्ञान; संदेहयुक्त ज्ञान; दो विरोधी ज्ञान; एक ही धर्मी में भासमान परस्पर विरोधी नाना कोटि ज्ञान; न्याय के सोलह पदार्थों में से एक; योग में चित्त के व्याधि, स्त्यान आदि नौ विक्षेपों में से एक।

संशयभावना—संदिग्ध विचार; अनिश्चित विचार।

संश्लेष—भेंटना; आलिंगन; मेल; परिरंभण।

संसार—जगत्; आवागमन; भवचक्र; मर्त्यलोक; सामाजिक जीवन; नित्य परिवर्तनशील व परिणाम्यमान भववासा।

संसारचक्र—बार-बार जन्म लेने की परंपरा।

संसारी बार-बार जन्म ग्रहण करने वाला; संसार के झगड़ों में फँसा हुआ; संसार का; संसार-संबंधी; लौकिक।

संसृति – भवचक्र; आवागमन; संसार; प्रवाह।

संस्कार -- कर्मवासना; मन पर पड़ने वाला प्रभाव; शुद्ध और उन्नत करने के लिए विशेष धार्मिक कृत्य; जन्मजात रुचि; वैशेषिक के चौबीस गुणों में से एक।

संस्कार-स्कंध—संस्कार समूह; बौद्धों के पाँच स्कंधों में से एक जो राग, द्वेष, मद, मान आदि का नाम है।

संहार-- नाश; ध्वंस।

संहिता– संग्रह; वेदों के दो भागों में से वह जिसमें मंत्र आदि हैं, दूसरा भाग ब्राह्मण कहलाता है।

:– वह (पुरुष)।

—समस्त; निर्गुण ब्रह्म तथा सगुण प्रकृति; अशेष; सगुण।

सकामभक्ति—फल की इच्छा रख कर स्वार्थ भावना से की जाने वाली भक्ति।

सकामभाव—काम अथवा इच्छा से प्रेरित भाव; कामना सहित भाव।

सख्य-- मित्रता; सौहार्द; नवधा भक्ति का एक प्रकार; भक्ति में वह भाव जिसमें भक्त अपने इष्टदेव को अपना सखा मान कर उसकी उपासना करता है।

सगुणब्रह्म— ब्रह्म का वह रूप जिसमें सत्त्व, रज और तम तीनों गुण हों; ब्रह्म का वह रूप जिसमें दया, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ आदि गुणों की कल्पना की गयी हो; मायोपहित ब्रह्म; ब्रह्म का सविशेष भाव; अव्यक्त अथवा शुद्ध ब्रह्म से भिन्न।

सचेतन जिसमें चेतना हो; ज्ञानवान्; जड़ का उलटा।

सच्चिदानंद (सत्-चित्-आनंद से संयुक्त) ब्रह्म; नित्य-ज्ञान-सुख-स्वरूप ब्रह्म; ब्रह्म का स्वरूप लक्षण।

सच्चिदानंदसागर नित्य-ज्ञान-सुख का सागर।

सजातीयभेद समान जाति या समान धर्मी के बीच

सत्तासामान्य—अनेक रूपों के भीतर एक सामान्य द्रव्य का अस्तित्व; परम सत् ब्रह्म।

सत्य—सच; ब्रह्म; यथार्थ; कृतयुग।

सत्यकाम—सत्य का प्रेमी।

सत्यत्व—सत्यता; सच्चाई; सच्चापन।

सत्यसंकल्प—सच्चा निश्चय; पक्का विचार।

सत्त्व—सत्ता; प्रकाश; शुद्धता; सत्यत्व; प्रकृति के तीन गुणों में से एक।

सत्त्वगुण—प्रकृति के तीन गुणों में से वह जो सत्कर्म की ओर प्रवृत्त करता है।

सत्त्वगुण प्रधान—जिसकी प्रकृति में सत्त्वगुण की प्रधानता हो।

सत्त्वसंशुद्धि—हृदयशुद्धि; भावशुद्धि; प्रकाश और शुद्धता की वृद्धि।

[illegible]—ज्ञान की चतुर्थ भूमिका जिसमें सत्त्व अर्थात् प्रकाश और शुद्धता का आधिक्य होता है; ब्रह्मवित् की अवस्था।

सत्संकल्प—उत्तम संकल्प।

सत्संग—साधुओं अथवा सज्जनों की संगति; भली संगत।

सत्सामान्य—सामान्य अधिष्ठान या आधार; व्यापक सत्य; एक समान की सत्ता; सत्ता; ब्रह्म।

सदाचार—अच्छा आचरण; साधु आचरण।

सदाजाग्रत—हमेशा जगा हुआ।

सदृशपरिणाम सदृश परिणाम; वस्तु का उसी वस्तु मे बने रहने का परिणाम सदृशपरिणाम है जैसे दूध का दूध; साम्य परिणाम।

सदैकरस सदा एक सा रहने वाला; नित्य अपरिवर्तनशील।

सद्गुण अच्छा गुण, प्रशस्त गुण।

सद्भाषण उत्तम कथन।

सद्योमुक्ति तुरन्त मुक्ति; तत्काल मोक्ष; देह छोड़ते ही प्राप्त होने वाली मुक्ति; क्रम मुक्ति का उलटा।

सद्विचार उत्तम विचार; सत्य का अनुसंधान।

सनातन नित्य; शाश्वत; अनादि; अत्यत प्राचीनकाल; बहुत दिनों से चला आता हुआ।

सनातनधर्म सनादिकालीन धर्म; आजकल का

समन्वय—विरोध का अभाव; कार्य और कारण की संगति; मेल; अविरोध; ब्रह्मसूत्र के प्रथम अध्याय का नाम।

समभावना—समानता की भावना।

समरसत्व—सदा एक सा बना रहने का भाव।

समवाय—समूह; झुंड; न्याय में वह नित्य संबंध जो अवयवी के साथ अवयव का, गुणी के साथ गुण का अथवा जाति के साथ व्यक्ति का होता है; वैशेषिक के छः द्रव्यों में से एक।

समवायकारण – उपादान कारण।

समष्टि—एक जाति या प्रकार के जितने हों उन सबका समूह; पूर्ण रूप; समस्त; व्यष्टि का उलटा।

समाधान—निष्पत्ति; निराकरण; अवधान; संदेह दूर करना; संधान; ध्यान; समाधि; मन का स्थिरीकरण; चित्त की एकाग्रता; विक्षेप का अभाव।

समाधि—योग का चरम फल; योगांग विशेष जिसमें ध्यातृ, ध्यान और ध्येय की त्रिपुटी नहीं रहती, केवल ध्येय विषय के स्वरूप का ही भान होता है।

समान—बराबर; तुल्य; शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक जो अन्न को पचाता है। इसका स्थान नाभि है।

समानाधिकरण्य तदधिकरणवृत्तित्व; पदार्थ की अनुरूपता; एक ही अधिष्ठान या आधार वाला;

भिन्न-भिन्न प्रवृत्यात्मक दो शब्दों का एक अर्थ में वृत्ति होने से उनमें समानाधिकरण संबंध होता है अथवा वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए आता है। उदाहरणस्वरूप घटाकाश (घट के भीतर का आकाश) और मेघाकाश में उभयनिष्ठ आधार (आकाश) सर्वव्यापी आकाश होने के कारण समानाधिकरण्य उपपन्न होता है। उनमें केवल उपाधि का भेद है।

समित् यज्ञकुंड में जलाने की लकड़ी; होम की लकड़ी; समिधा।

समुच्चयवाद यह सिद्धान्त कि आत्मसाक्षात्कार के लिए कर्म, उपासना और ज्ञान तीनों का समन्वय आवश्यक है।

सम्यग्दर्शन अच्छी तरह देखना; समदृष्टि; पूरी जानकारी, यथार्थ तथा पूर्ण ज्ञान; बौद्धों के अष्टांगिक मार्ग का प्रथम अंग।

सर्वकारण—सभी वस्तुओं का हेतु; सभी पदार्थों की संप्राप्ति का हेतु; सबकी उत्पत्ति, रक्षा और विनाश का हेतु।

सर्वकारणकारण—अन्य सभी कारणों का कारण।

सर्वगत—सर्वव्यापक।

सर्वज्ञ—सब कुछ जानने वाला।

सर्वत्याग—सभी पदार्थों का परित्याग।

सर्वत्व—सब कुछ होने का भाव; सर्वस्वता।

सर्वदुखनिवृत्ति—सब दुःखों से छुटकारा; सकल-पीड़ानाश।

सर्वनियंत्रात्मा—सबको वश में करने वाला अंतरात्मा।

सर्वपिंडव्यापी—जो सब प्राणियों के शरीर में हो और जो पूरे शरीर में व्यापक हो।

सर्वप्राणिहितेरतः—सब प्राणियों के कल्याण-कार्य में संलग्न।

सर्वभूतांतरात्मा—सब प्राणियों की अंतरात्मा।

सर्वभोक्ता—सब का भोग करने या आनंद लेने वाला; सर्वभोगी; परमात्मा का एक नाम।

सर्ववित्—सर्वज्ञ।

सर्वव्यापी—सब पदार्थों में व्याप्त रहने वाला; सर्वव्यापक; सर्वगत; देश-परिच्छेद-रहित।

सर्वशक्तिसमन्वित—सब कुछ करने की सामर्थ्य रखने वाला; सर्वशक्तिमान।

सर्वशास्त्रवेत्ता सब शास्त्रों के अर्थ को जानने वाला।

सर्वसंकल्परहित सब प्रकार के संकल्पों से मुक्त।

सर्वसाक्षी सर्वदर्शी ; सर्वद्रष्टा ; सब कुछ देखने वाला।

सर्वहिंसाविनिर्मुक्त—मानसिक, वाचिक और शारीरिक तीन प्रकार की हिंसाओं से रहित।

सर्वांगासन हठयोग का एक प्रसिद्ध आसन।

सर्वान्तर्यामी सब के मन की बात जानने वाला ; सबके मन करण में स्थित हो प्रेरणा देने वाला।

सर्वातीतवादी सर्वातिशयी सिद्धांत को मानने वाला ; यह सिद्धान्त मानने वाला कि सत्य सर्वातिशय है।

सर्वात्मकत्व संपूर्ण विश्व की आत्मा होने का भाव ; वस्तु परिच्छेद राहित्य।

सर्वेश्वरत्व सब का स्वामी होने का भाव ; निखिल प्रभु।

सर्वोऽस्मि मैं सब कुछ हूँ ; व्यतिरेक ज्ञान।

सर्वोपादानत्व सब का उपादान कारण होने की अवस्था।

सविकल्प संदेहयुक्त ; संदिग्ध ; भेदयुक्त।

सविकल्प-समाधि वह समाधि जिसमें ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेयरूप त्रिपुटी का भान रहता है।

सविचार वह समाधि जो किसी सूक्ष्म विषय को ध्येय बना कर की जाती है और जिसमें नाम, रूप और ज्ञान के विकल्पों से मिला हुआ अनुभव होता है;

संप्रज्ञात समाधि का एक भेद; देश, काल और धर्म के भाव के सहित।

सवितर्क-विशेष तर्कवाली; विशेष शब्दमय चिंता वाली; शब्द, अर्थ और ज्ञान की भावना सहित।

सवितर्क समाधि—शब्द, अर्थ और ज्ञान के विकल्पों से मिली हुई समाधि; जिस समाधि प्रज्ञा में वितर्क रहता है; वह समाधि जो स्थूल आलंबन की सहायता से होती है; संप्रज्ञात समाधि का एक प्रकार।

सविशेष--विशेषतायुक्त; विशेषण से युक्त; विशिष्ट; सगुण; विश्वातिग।

सविशेषत्व--विशेष होने का भाव; विलक्षण होने का भाव।

सविशेष ब्रह्म—विशेषणयुक्त ब्रह्म; सगुण ब्रह्म।

सहकारिमात्र--केवल सहायक; केवल सहयोगी; संसार-रचना में माया ब्रह्म की सहकारिमात्र है।

सहज--स्वाभाविक; साथ उत्पन्न होने वाला; सुगम।

सहज कुंभक—श्वास का सहज रूप से अंदर रुकना।

सहजनिर्विकल्प समाधि—केवली भाव में स्वाभाविक स्थिति।

सहजनिष्ठा—सामान्य और स्वाभाविक स्थिति; अपने स्वाभाविक सच्चिदानंदस्वरूप में स्थिति।

सहजानंद-आनंदमयता की स्वाभाविक अवस्था।

सहजावस्था—समाधि की स्वाभाविक और निरंतर अवस्था।

सहस्रार—हठयोग के अनुसार शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक जिसमें सहस्रदल कमल है और जो मस्तिष्क के ऊपरी भाग में माना गया है। यहीं पर कुण्डलिनी शक्ति शिव से संयुक्त होती है।

सहास्थिता—वह जो एक साथ रहता हो।

सांख्य—महर्षि कपिल कृत एक हिंदू दर्शन; षड्दर्शनान्तर्गत एक दर्शनशास्त्र।

सा—वह (स्त्री)।

साकार—रूप या आकार वाला; आकार सहित; आकार विशिष्ट; निराकार का उलटा।

साक्षात्कार—प्रत्यक्ष दर्शन; अपरोक्षानुभूति; ब्रह्मज्ञान।

साक्षिचेतन—तटस्थ रूप से देखने वाला; जीवात्मा; कूटस्थ; अन्तःकरण उपहित चेतन; चैतन्य जो निर्विकार उदासीन हुआ बुद्धि आदि को प्रकाशित करता है।

साक्षि-चैतन्य—देखो साक्षिचेतन।

साक्षिभाव—तटस्थ रूप से देखने का भाव; साक्ष्य।

साक्षी—देखने वाला; द्रष्टा; असंग रहकर प्रकाश करने वाला; निर्विकार अपरोक्ष द्रष्टा; कूटस्थ जो शरीर और मन की क्रियाओं को तटस्थ भाव से देखता रहता है।

साक्षिद्रष्टा—साक्षिभाव से देखने वाला; तटस्थ दर्शक।

सादि—जिसका आदि हो।

सादृश्यता—समानता; अनुरूपता; सदृशता; एकरूपता।

साधक—साधना करने वाला; अभ्यास करने वाला; करण; वह जो अनुकूल और सहायक हो।

साधन—साधना; उपकरण; अभ्यास; उपाय; ब्रह्मसूत्र के तृतीय अध्याय का नाम।

साधनचतुष्टय—ज्ञानप्राप्ति के चार प्रकार के साधन (उपाय)—विवेक, वैराग्य, षट्संपत्ति तथा मुमुक्षुत्व।

साधर्म्य—समान धर्म अथवा गुण होने का भाव; एकधर्मता।

साधारण—सामान्य; सहज; मामूली।

साधारण कारण—सामान्य कारण या हेतु; असमवायिकारण; उपादानादि तीन कारणों में से एक; वह कारण जो कर्ममात्र का उत्पादक हो।

साधु—धार्मिक जीवन बिताने वाला; संत; महात्मा; संन्यासी; अच्छा; प्रशंसनीय।

सानंद—आनंदसहित; एक प्रकार की समाधि।

सामान्य—साधारण; मामूली; जिसमें कोई विशेषता न हो; सामान्य धर्म या गुण वाला।

सामान्य गुण—वह गुण जो किसी जाति की सभी चीजों में समान रूप से पाया जाय।

सामान्य विज्ञान—शुद्ध चेतन; अपरिच्छिन्न चैतन्य; कूटस्थ; ब्रह्म।

सामान्यावस्था - विभागरहित दशा; अव्यक्त रूप; अव्याकृत।

सामीप्य निकटता; एक प्रकार की मुक्ति जिसमें भक्त अपने उपास्य देव के समीप रहता है।

साम्यावस्था संतुलित अवस्था; वह अवस्था जिसमें सत्त्व, रज और तम ये तीनों गुण बराबर हों; प्रकृति; अव्यक्तावस्था।

सायुज्य मिलन; एक प्रकार की मुक्ति जिसमें भक्त अपने उपास्य देव से मिल कर एक हो जाता है।

सारूप्य समानरूपता; सरूपता; एक प्रकार की मुक्ति जिसमें भक्त अपने उपास्यदेव के रूप को प्राप्त कर लेता है।

सार्वदेशिक सब देशों से संबंध रखने वाला; सब देशों में होने वाला; सार्वभौम।

सालोक्य एक ही लोक में दूसरे के साथ रहने वाला; एक प्रकार की मुक्ति जिसमें जीव ईश्वर के लोक में निवास करता है।

सावयव अवयवों या अंगों से बना हुआ।

सास्मिता अस्मिता सहित; वह समाधि जिसमें 'मैं हूं' का चिन्तन बना रहता है।

सोऽहम् वह (ब्रह्म) मैं हूं। शाक्तों का मंत्र।

सिद्ध पहुँचा हुआ महात्मा; जिसकी आध्यात्मिक साधना पूर्ण हो चुकी हो; जो योग की विभूतियाँ

प्राप्त कर चुका हो; जो तर्क या प्रमाण द्वारा निश्चित हो।

सिद्धांत—भली भांति सोच-विचार कर स्थिर किया हुआ मत; अबाधित निश्चय; न्यायशास्त्र के सोलह पदार्थों में से एक; प्रामाणिकत्वेन अभ्युपगत अर्थ।

सिद्धांतवाक्यश्रवण—किसी शास्त्र के निर्णीत अर्थ को सुनना।

सिद्धासन—हठयोग का एक आसन।

सिद्धि—कार्य पूर्ण होना; योग-साधन के अलौकिक फल; योग की अणिमादि अष्टसिद्धियाँ; निश्चयात्मक ज्ञान।

सुंदर—रूपवान्; खूबसूरत; अच्छा; मनोहर; रुचिर; सौम्य; चारु; रमणीक।

सुकृत—पुण्य; सत्कर्म।

सुख—आनंद; प्रसन्नता; अनुकूल वेदनीय भोग; दुख का उलटा।

सुख चिंतन—सुख का विचार; प्रिय विचार; सुखमय विचार।

सुखी—आनंदित; जो सुखपूर्वक हो।

सुगमता—सरलता; सहजगम्यता।

सुगुप्त—बहुत छिपा हुआ; सुदृढ़ रहस्य।

सुलोहित—सुंदर लाल रंग।

सुविचार—सुंदर विचार; अच्छा विचार।

सुशील—अच्छे शील का; अच्छे आचरण का; अच्छे स्वभाव का; विनीत; शिष्ट।

सुषुप्ति घोर निद्रा; गहरी नींद; अज्ञान; वेदांत के अनुसार चार अवस्थाओं में से एक; योगदर्शन के अनुसार चित्त की एक वृत्ति; वह अवस्था जिसमें जीव कर्मों से उपरत होकर समस्त अहंकार की निवृत्ति द्वारा अज्ञान के आश्रय से विश्रांति लेता है; पुरीतत के साथ मन का संयोग।

सुषुम्ना हठयोग के अनुसार शरीर की तीन मुख्य नाड़ियों में से वह जो मूलाधार चक्र से चलकर मेरुदंड के द्वारा ब्रह्मरंध्र तक पहुँचती है और जिससे होकर कुंडलिनी शक्ति प्रवाहित होती है।

सूक्ष्म बहुत छोटा; बहुत बारीक; बहुत पतला या महीन; लिंगशरीर।

सूक्ष्मदर्शी बारीक बात सोचने वाला; कुशाग्र बुद्धि; अतिशय बुद्धिमान; प्रत्युत्पन्न मति।

सूक्ष्मध्यान वह ध्यान जो सूक्ष्म पदार्थ का आलंबन

सूत्रात्मा—समष्टि सूक्ष्मशरीरों का अभिमानी देव; हिरण्यगर्भ ।

सूर्यनाड़ी – पिंगला नाड़ी ।

सृष्टि—संसार की उत्पत्ति; संसार; ब्रह्मांड ।

सृष्टिउन्मुख—प्रपंचोत्पत्ति के अनुकूल व्यापार विशेष; सृजन कार्य के लिए उत्सुक या उद्यत ।

सृष्टिकल्पना—संसार की उत्पत्ति का मानसिक चित्र; संसार की उद्‌भावना ।

सृष्टिभेद—प्राणि रचना में अंतर जैसे एक जीव में सत्व की प्रधानता होती है, दूसरे में रजस् की और तीसरे में तमस् की ।

सृष्टिस्थितिलय (संहार)—सृजन, पालन और विलय; निर्माण, पोषण और विनाश; आविर्भाव, स्थिति और तिरोभाव ।

सेवा—परिचर्या; पूजा ।

सोऽकामयत—उसने (ब्रह्म ने) कामना की ।

स्तंभन—रोकने की क्रिया; अवरोध; स्थगन ।

स्तब्धावस्था—मन की जड़ या निश्चेष्ट अवस्था; ध्यान में एक बाधा ।

स्तुति—किसी के गुणों का वर्णन; प्रशंसा; बड़ाई; स्तव; प्रशस्ति; गुणी के गुण का कथन ।

स्थाणुमनुष्य—स्थाणु (ठूँठ) के मनुष्य होने का भ्रम—यह अध्यास का एक उदाहरण है ।

स्थावर--अचल; अटल; स्थिर; जंगम का उलटा।

स्थितप्रज्ञ—जिसकी विवेक बुद्धि स्थिर हो; जिसकी प्रज्ञा चलायमान न हो; समस्त मनोविकारों से रहित; मनोगत-सर्ववासनारहित।

स्थिति -ठहराव; रहना; स्थित होने का भाव; अवस्था; दशा; गति की निवृत्ति; चित्त का वृत्ति रहित होकर शांत प्रवाह में बहना।

स्थिरता मन अथवा शरीर की निश्चलता; निश्चलता।

स्थूलबुद्धि मंदबुद्धि।

स्थूल वैराग्य —मंद वैराग्य; मृदु वैराग्य।

स्थूल शरीर -रज-वीर्य से उत्पन्न होने वाला, अन्न से बढ़ने वाला, पांचों भूतों से बना हुआ देह; अन्नमय कोश; षाट्कौशिक देह।

स्थूल समाधि--एक प्रकार की जड़ समाधि जिसमें जीव की चेतना नहीं रहती।

स्थूलाविद्या- मलिन अज्ञान जो सबको आच्छादित करता है।

स्नेह प्रेम; मोह; चिकनाहट; वैशेषिक के चौबीस गुणों में से एक।

स्पंद धीरे-धीरे हिलना; अंगों का फड़कना; प्रस्फुरण; कंपन; गति।

स्पंदाभास गति या कंपन की प्रतिच्छाया या प्रतीति।

स्पंदावस्था गतिशीलता; प्रकंपनावस्था।

स्पर्श- छूना; त्वचा का विषय; वायु का गुण।

स्पर्शतन्मात्र—स्पर्शभूत का अमिश्र और सूक्ष्म रूप; शब्द के सुनने से मन पर होने वाला प्रभाव।

स्पर्शन- छूना; स्पर्श करना।

स्पृहा—वांछा; इच्छा; अभिलाषा; न्याय के अनुसार धर्मानुकूल पदार्थ की प्राप्ति-कामना।

स्फुरण—धीरे-धीरे हिलना; फड़कना।

स्फोट—किसी वस्तु का प्रकट होना; विचारों का एकाएक प्रकट होना; विदारण; अकारादि वर्णों के अतिरिक्त अकारादि वर्णों से अभिव्यंग्य अर्थ का प्रत्यायक नित्य शब्द; शब्दब्रह्म।

स्मरण—याद; स्मृति; नवधा भक्ति में से एक; चित्त नामक अंतःकरण का विषय; ब्रह्मचर्य की आठ त्रुटियों में से एक।

स्मार्त—स्मृति संबंधी; वे कृत्य आदि जो स्मृतियों में लिखे हैं।

स्मृति—स्मरण; जाने हुए विषय को न भूलना; एक प्रकार की वृत्ति; धर्मशास्त्र; धर्मसंहिता।

स्मृति-हेतु—स्मृति का कारण; स्मरण का कारण।

स्वगतभेद—तीन प्रकार के भेदों में से एक; अवयवी का अवयव से भेद अथवा एक अवयवी के अवयवों में भेद; एक ही व्यक्ति में अवयवगत भेद।

स्वच्छ—निर्मल; शुभ्र; पवित्र; पारदर्शी; पारदर्शक।

स्वजातीयवृत्तिप्रवाह—जो ध्यान का विषय है उस विषयक ही चित्त की वृत्ति का प्रवाह रहना अन्य विषयक नहीं; विजातीय प्रत्यय से रहित वृत्ति की प्रवाहशीलता।

स्वतंत्र—स्वाधीन; जो किसी के अधीन न हो।

स्वतंत्रत्व—स्वतंत्रता; स्वाधीनता।

स्वतंत्रसत्ताभाव—इतरसत्ताधीन सत्ता का भाव।

स्वत: सिद्ध—स्वयंसिद्ध; आप ही सच।

स्वधर्म—अपना धर्म या कर्तव्य; स्वजातीय उक्त आचार।

स्वधा—एक शब्द अथवा मंत्र जिसका उच्चारण पितरों को हवि देते समय किया जाता है; पितृ अन्न।

स्वप्न—सपना, नींद में जो देखा जाय; तीन अवस्थाओं में से एक; जीवात्मा जब कर्म से उपरत होकर जाग्रतावस्था के अनुभवजन्य संस्कारों से विषयों को

स्वभाव--प्रकृति; आदत; स्वकीय भाव; शील; हेत्वंतर की अपेक्षा न रखने वाला वस्तु धर्म विशेष।

स्वमहिमप्रतिष्ठित—जो अपनी ही महिमा में प्रतिष्ठित हो।

स्वयंज्योति:—जो स्वयं प्रकाशित हो; स्वयंप्रकाश; स्वप्रकाश; स्वयंप्रकाशमान; जो अपनी दीप्ति से देदीप्यमान हो।

स्वयंप्रभासंवित्—स्वयंप्रकाश चेतन।

स्वयंभाव—अपनी स्वतंत्र सत्ता की अनुभूति।

स्वयंभु—जो अपने से आप उत्पन्न हुआ हो; ब्रह्मा; स्वयंभुव।

स्वर—आवाज़; वह वर्ण जिसके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता की आवश्यकता न हो।

स्वरभंग—गला बैठना; स्पष्ट स्वर न निकलना; भक्तिभाव का एक लक्षण।

स्वरसाधन—श्वास नियमन; वह साधना जिसमें श्वास की गति का निरीक्षण और नियमन किया जाता है।

स्वरूप—स्वभाव; निजरूप; प्राप्तरूप; स्वाभाविक रूप; ब्रह्म का उपाधिरहित रूप; सच्चिदानंद; सद्रूप।

स्वरूपज्ञान—आत्मा के स्वरूप को पहचानना; तत्वज्ञान; शुद्ध चेतन रूप का ज्ञान।

स्वरूपध्यान—अपने सद्रूप या प्रकृत रूप का ध्यान करना।

स्वरूपप्रतिष्ठा—स्वरूपस्थिति; आत्मस्थिति; आत्म-अवस्थिति; पुरुष का सहज ही, स्वाभाविक ही, अनायास ही अपने स्वरूप में स्थित होना।

स्वरूप लक्षण—किसी वस्तु का स्वरूप लक्षण वह है जो उस वस्तु में जब तक वह वस्तु है वर्तमान रहता है और उसे शेष पदार्थों से पृथक् करता है। जो लक्षण अपने लक्ष्य का स्वरूपभूत होकर उस अपने लक्ष्य को अन्य पदार्थों से भिन्न करता है।

स्वरूपविश्रांति—जड़ तत्त्व के अविवेकपूर्ण संयोग से परे होकर पुरुष का अपने शुद्ध चेतन स्वरूप में विराम।

स्वरूप संबंध—अपने शुद्ध चेतन रूप से संबंध।

स्वरूपस्थिति—निरोध की स्थिति; जब चित्त की वृत्तियों का निरोध स्थायी और दृढ़भूमि हो जाय और बिना किसी क्रिया या प्रयत्न के सहज ही हर समय बना रहे; स्वरूपस्थिति सहज अवस्था है और यह स्वरूप अवस्थिति से भिन्न है जो कि प्रयत्न की अवस्था है।

स्वरूपान्यथाभाव—अपने प्रकृत रूप को छोड़कर अन्य रूप की उत्पत्ति।

स्वरूपावस्था—निरोध की अवस्था; स्वरूप अवधारण; जब अनुरागान चित्त की दशा में वृत्तियों का निरोध क्रियाजन्य हो, प्रयत्न से हो और स्थायी, दृढ़भूमि,

स्वाभाविक, सहज और स्वयं होने वाला न हो तब वह स्वरूपावस्था है।

स्वर्गलोक—ऊपर के सात लोकों में से वह जहाँ सत्कर्म करने वाली आत्माएं निवास करती हैं; देवलोक; इंद्रलोक; स्वर्लोक।

स्वाधिष्ठान—हठयोग के षट्चक्रों में से वह जो मूलाधार चक्र से ऊपर है।

स्वाध्याय—अनुशीलन; अध्ययन; वेदों का निरंतर और नियमपूर्वक अभ्यास; ओंकार सहित गायत्री आदि मंत्र का जप।

स्वानुभूति—अपनी आत्मा की अपरोक्षानुभूति।

स्वाहा—एक शब्द जिसका प्रयोग हवन करते समय होता है; देवहविर्दान मंत्र; वषट्; वौषट्।

स्वेदज—चार प्रकार के प्राणियों में से; एक पसीने से उत्पन्न होने वाले जीव खटमल आदि।

ह

हंसमंत्र सोऽहं मंत्र जिसे जीव प्रत्येक श्वास-प्रश्वास के साथ स्वतः अप्रयास ही उच्चारण करता रहता है; अजपामंत्र ।

हंसयोग भगवान् हरि का वह उपदेश जिसे उन्होंने ब्रह्मा और सनत्कुमार को योग की शंका दूर करने के लिए दिया था। यह कथा भागवत महापुराण में आती है।

हठयोग योग का एक प्रकार जिसमें शरीर और प्राण को वश मे किया जाता है; वह योग जिसमें आसन, प्राणायाम, बंध, मुद्रा तथा क्रिया का विधान है; "ह" सूर्य नाडी (पिंगला) "ठ" चंद्रनाड़ी (इडा) का योग।

हनुमान् एक बलवान् देव; पवनपुत्र; श्रीराम का परम भक्त एक वीर बंदर; महावीर; आंजनेय;

हलासन—हठयोग का एक प्रसिद्ध आसन।

हान—योगदर्शन के अनुसार अविद्या के अभाव होने पर उसके कार्य संयोग के अभाव को "हान" कहते हैं; दुःख का नितांत अभाव; त्याग।

हास्य—हँसी; दिल्लगी; मजाक; हास; साहित्य के नौ रसों में से एक।

हिंसा—हानि पहुँचाना; मारना; कष्ट देना; घात; बध।

हितनाड़ी—हृदय से उद्भूत वह नाड़ी जिसमें जीवात्मा निद्रा-काल में निवास करता है।

हिरण्यगर्भ—ब्रह्मा; वह ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा तथा समस्त सृष्टि की उत्पत्ति हुई है; सूत्रात्मा; शबलब्रह्म; कार्यब्रह्म; समष्टि सूक्ष्म शरीराभिमानी; समष्टि बुद्धि; विभु; जगत् के अंतरात्मा; सूक्ष्म जगत् सहित चेतन तत्त्व; समष्टि सूक्ष्म शरीर तथा माया उपहित चैतन्य।

हृदय—दिल; कलेजा; सारभाग; मन; केंद्र; मध्यवर्ती स्थान।

हृदय-कमल—हृदय में स्थित पद्म; हृत्पद्म; उपनिषदों का पुंडरीकवेश्म।

हृदयगुहा—हृदय की गुफा।

हृदयग्रंथि—हृदय की गाँठ अर्थात् अविद्या, काम और कर्म; अस्मिता क्लेश; चित्जडग्रंथि।

हृदयधौति—धौति का एक प्रकार जिसमें दंड, वमन अथवा वस्त्र के द्वारा हृदय, गला और छाती को शुद्ध किया जाता है।

हेतु—कारण; तर्क; अभिप्राय; न्याय में अवयव के प्रतिज्ञा आदि पाँच भेदों में से एक।

हेतूपनय—तर्क में कोई उदाहरण देकर उस उदाहरण के धर्म को फिर उपसंहार रूप से साध्य में घटाना; अपने पक्षपोषण के लिए हेतु का उल्लेख करना।

हेत्वाभास--मिथ्या हेतु; असत् हेतु; दुष्ट हेतु; ऐसा कारण जो किसी बात के सिद्ध करने में ठीक जान पड़े पर वास्तव में ठीक न हो।

होता यज्ञ में आहुति देते समय ऋग्वेद का गायन करने वाला ब्राह्मण।

ह्रस्व -छोटा; वामन; अल्प।

ह्री लज्जा; संकोच, शर्म।

: समाप्त :—

डिवाइन लाइफ सोसाइटी

(दिव्य जीवन संघ)

की सदस्यता

डिवाइन लाइफ सोसाइटी एक सम्प्रदाय निरपेक्ष संस्था है जिसके विशाल दृष्टिक्षेत्र में सभी धर्मों के और सामान्य रूप से आध्यात्मिक जीवन के सर्वमान्य मौलिक सिद्धांत समाहित हैं। कोई भी व्यक्ति, जिसकी सत्य, अहिंसा तथा शुचिता के आदर्शों में निष्ठा है, इस संस्था का सदस्य बन सकता है। यह संस्था सभी वादों और धार्मिक रूढ़ियों को समान रूप से सम्मान प्रदान करती है। संस्था के सिद्धान्तों, दार्शनिक मान्यताओं तथा उपदेशों में सभी मतों और सम्प्रदायों के सिद्धांतों का अनुकलन होने से इसके सदस्यों की पारम्परिक भूमिका तथा धार्मिक मान्यताएं पृथक् पृथक् हैं, फिर भी वे इनके आधार पर न तो मतभेद को मान्यता देते हैं और न विघटनकारी मनोवृत्तियों को ही प्रश्रय देते हैं। सच्चे आत्म-ज्ञान तथा अहं को विलय कर उसकी परिधि से "ऊपर उठ जाने में ही आध्यात्मिक साधना का रहस्य निहित है", इस तथ्य को प्रकट करने तथा प्रत्येक प्राणी में भागवतीय चेतना की सम्भावनाएं हैं तथा "भले

न कर और भला करके" अपनी बाह्य और अंतःकृति पर नियन्त्रण स्थापन द्वारा इस अन्तर्स्थित भागवतीय चेतना का अभिव्यक्तिकरण का प्रयास करना ही प्रत्येक व्यक्ति का जीवन-लक्ष्य है। संस्था की प्रवृत्तियां मानवोपकारी, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक कार्यों के लिए समर्पित हैं। उपरोक्त आदर्श सम्पन्न कोई भी व्यक्ति डिवाइन लाइफ सोसाइटी का सहर्ष सदस्य बन सकता है।

प्रति सदस्य का वार्षिक सदस्यता शुल्क ५) रु० है और यह शुल्क प्रति वर्ष भुगतान करके नवीकरण करना होता है। प्रत्येक नये सदस्य का सदस्यता-शुल्क, जो कि केवल एक बार ही देय है, ५) रु० है। प्रार्थी के यथावत् पूर्ति तथा हस्ताक्षरित किये हुए प्रवेश-पत्र तथा उपरोक्त शुल्क के प्राप्त होने पर उसे प्रारम्भिक साधना के कुलक रूप स्वामी शिवानन्द द्वारा रचित "एसेंस आफ योगा" नामक अंग्रेजी पुस्तक की एक प्रति, 'जपमाला', आध्यात्मिक दैनन्दिनी के कुछ पृष्ठ तथा संकल्प-पत्र आदि साधना-सम्बन्धी प्रकाशन दिये जाते हैं। सदस्यों को संस्था की अधिकारिक अंग्रेजी पत्रिका "डिवाइन लाइफ" भी प्राप्त होती है। इसके लिए उन्हें कोई अतिरिक्त मूल्य नहीं चुकाना होता है। सदस्यता में सम्मिलित होने के लिए साधकों का हार्दिक स्वागत है।

सबसे महान् दान | ज्ञान का दान

ज्ञान–यज्ञ

(आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार)

श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज मानवता की सेवा के लिए करीब पच्चीस साल तक इस महान् यज्ञ को करते रहे थे।

तथा उन्होंने आपको सुअवसर प्रदान किया जिससे कि आप ईश्वरीय कृपा, महिमा तथा आशीर्वाद को प्राप्त करें।

स्वामी जी की बहुत सी पुस्तकें अभी तक अप्रकाशित हैं। अपने धर्म-धन के द्वारा आप उन पुस्तकों में से किसी को भी अपने नाम से छपवा सकते हैं। लाखों इससे लाभ उठायेंगे।

एक पुस्तक को छपवाने में लगभग खर्च ५००) रु० से २०००) रु० तक। विशेष जानकारी के लिए नीचे के पते पर लिखिए।

सेक्रेटरी, डिवाइन लाइफ सोसाइटी,
शिवानन्दनगर, जिला टिहरी गढ़वाल